व्याकरणवीथिः

माध्यमिकस्तरीय-संस्कृत-छात्राणां कृते

(कक्षा IX-X के लिए संस्कृत व्याकरण)

व्याकरणवीथिः

माध्यमिकस्तरीय-संस्कृत-छात्राणां कृते

(कक्षा IX-X के लिए संस्कृत व्याकरण)

सम्पादक

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जुलाई 2003
आषाढ़ 1925
PD 5T DRH

ISBN 81-7450-213-0

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III बैंगलूर 560 085	नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380 014	सी.डब्लू.सी. कैंपस निकट : धनकल बस स्टॉप 24 परगना 700 114

प्रकाशन सहयोग

संपादन : दयाराम हरितश
उत्पादन : डी.साईं प्रसाद
आवरण : बालकृष्ण

रु. 45.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा तरंग प्रिन्टर्स, बी-50, किशन कुंज एक्सटेंशन-II, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 110 092 द्वारा मुद्रित।

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुदिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः सामाजिक-विज्ञान-मानविकी-शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपम् संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्रणां संस्कृतव्याकरणसम्बन्धिकाठिन्यमपाकर्तुं द्वादशाध्यायेषु प्रस्तूयते व्याकरणवीथिः इति नाम पुस्तकम्। अत्र वर्णविचारसंज्ञासन्धि- शब्दधातुरूपोपसर्गाव्ययप्रत्ययसमासरचनाप्रयोगानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। पुस्तकमिदं पठित्वा छात्राः संस्कृतस्य प्रयोगे दक्षाः भवेयुः एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृता-ध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

जगमोहनसिंहराजपूतः

नवम्बर 2002 — *निदेशकः*

नवदेहली — राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। प्रातिशाख्य तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में, पदों में प्रयुक्त सन्धि, समास, आगम, लोप, वर्ण-विकार, प्रकृति तथा प्रत्ययों का विवेचन किया गया है। इस दृष्टि से निरुक्तकार यास्क का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा की गयी नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात तथा क्रिया आदि की व्याख्या व्याकरण के परवर्ती आचार्यों (पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि) के लिए भी उपयोगी रही है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित समस्त शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि व्याकरण ही भाषा को शुद्ध, बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है। **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन** इति व्याकरणम् अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्राचीन काल से ही सभी शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है– **मुखं व्याकरणं स्मृतम्।** संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म, तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है, उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, उनके अर्थ-बोध तथा वेद-मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग 6 हैं –

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्प।

व्याकरण की सहायता से ही हम वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के साथ-साथ भास, कालिदास, माघ, श्रीहर्ष, भवभूति, बाण एवं जगन्नाथ प्रभृति विद्वानों की कृतियों का रसास्वादन करने में समर्थ होते हैं। संस्कृत वाङ्मय (वैदिक एवं लौकिक) की रक्षा करना व्याकरण का प्रथम प्रयोजन है जैसा कि महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में कहा है – **रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्।**

व्याकरण वह शक्ति प्रदान करता है, जिसके द्वारा सारे श्रुत और अश्रुत शब्दों का तथा पठित और अपठित वाङ्मय का रहस्य अल्पकाल में ही समझा जा सकता है। शब्दों का असन्दिग्ध ज्ञान व्याकरण से ही सम्भव है। धनवान् शब्द शुद्ध है या धनमान्, बुद्धिमती शब्द शुद्ध है या बुद्धिवती, इस प्रकार के सन्देह को वैयाकरण ही दूर कर सकता है क्योंकि वह जानता है कि अशुद्ध पद का प्रयोग अनिष्ट का कारण बन जाता है।

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥

(पाणिनीय शिक्षा)

व्याकरणशास्त्र के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए किसी ने ठीक ही कहा है –

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो माभूत् सकलः शकलः सकृच्छकृत्॥

संस्कृत व्याकरण की परम्परा

संस्कृत व्याकरण की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी वैदिक संहिता। तैत्तिरीय संहिता में उल्लेख है कि इन्द्र ने संस्कृत भाषा का प्रथम व्याकरण रचा। पतञ्जलि के महाभाष्य में सङ्केत मिलता है कि इन्द्र के पहले भी व्याकरणशास्त्र का अस्तित्व था। इन्द्र ने बृहस्पति से व्याकरण-विद्या का अध्ययन किया था।

बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच।

ऐन्द्र व्याकरण की अविच्छिन्न परम्परा का उल्लेख ऋक्तन्त्र में भी सुलभ है –

ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच्, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भरद्वाजाय, भरद्वाज ऋषयो ब्राह्मणेभ्यः।

इससे प्रतीत होता है कि ऐन्द्र सम्प्रदाय व्याकरण का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय था। इसके समकक्ष व्याकरणशास्त्र का एक दूसरा माहेश्वर-सम्प्रदाय था, जिसके प्रवर्तक महेश्वर थे जिसकी सुदृढ़ आधारशिला पर पाणिनि ने व्याकरण के भव्य प्रासाद का निर्माण किया।

पाणिनि ने अष्टाध्यायी में आपिशलि, काशकृत्स्न, शाकल्य स्फोटायन एवं शाकटायन आदि दस वैयाकरणों का मात्र नामोल्लेख किया है। इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती सभी वैयाकरणों के ग्राह्य-विचारों और विवेचनों से परिपूर्ण-तत्त्वों को अपने ग्रन्थ में अपनाया है।

पाणिनि का समय ई.पू. सप्तम और ई.पू. पञ्चम शताब्दी के मध्य माना जाता है। इस विषय में विद्वान मतैक्य नहीं हैं। ये उत्तर-पश्चिम भारत में स्थित शालातुर ग्राम के निवासी थे। इनकी माता का नाम दाक्षी था।

सर्वे सर्वपदादेशा दाक्षीपुत्रस्य पाणिनेः

(महाभाष्य)

ये उपवर्ष या वर्ष आचार्य के शिष्य थे। इनकी मृत्यु व्याघ्र या सिंह (**सिंहो व्याघ्रो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः**-पञ्चतन्त्र) के आक्रमण द्वारा त्रयोदशी तिथि को हुई थी। ऐसा माना जाता है कि पाणिनि की तपस्या से प्रसन्न होकर महेश्वर ने चौदह माहेश्वर सूत्रों का उपदेश दिया। उन्हीं के आधार पर इन्होंने अत्यन्त संक्षिप्त सूत्र शैली में सुदृढ़ व्याकरण लिखा। यह आठ अध्यायों में विभाजित है। अतः इसका नाम अष्टाध्यायी है। प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। प्रत्येक पाद में सूत्र हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ में लगभग चार हजार सूत्र हैं। समस्त सूत्र अध्याय, पाद और सूत्राङ्गों में विभक्त हैं। प्रथम अध्याय में व्याकरण सम्बन्धी संज्ञाओं तथा परिभाषाओं का विवेचन है। द्वितीय अध्याय में समास और कारक के नियम हैं। तृतीय और अष्टम अध्याय में कृदन्त प्रकरण है। चतुर्थ तथा पञ्चम अध्याय में स्त्री प्रत्यय और तद्धित का विवेचन है। षष्ठ तथा सप्तम अध्याय में सन्धि, आदेश और स्वर-प्रक्रिया से सम्बन्धित सूत्र है।

द्वितीय वैयाकरण **कात्यायन** हैं, जिन्हें **वररुचि** भी कहा जाता है। इनका समय 400 ई.पू. से 300 ई. पू. के मध्य माना जाता है। ये दाक्षिणात्य थे। इन्होंने पाणिनि द्वारा रचित लगभग 1250 सूत्रों की आलोचनात्मक व्याख्या की है, जो **वार्तिक** के नाम से प्रसिद्ध है। वार्तिकों की संख्या प्रायः चार हजार हैं।

पाणिनि की व्याकरण-परम्परा का परिवर्तन एवं परिवर्धन करने वाले महान् वैयाकरण **पतञ्जलि** हैं। इनका समय ई.पू. दूसरी शताब्दी है। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ **महाभाष्य** है। कात्यायन के वार्तिकों की प्रश्नोत्तर-शैली में समीक्षा करते हुए **पतञ्जलि** ने **अष्टाध्यायी** पर भाष्य लिखा है। **अष्टाध्यायी** के अध्याय, पाद और सूत्रक्रम में ही **पतञ्जलि** ने अपने भाष्य का क्रम रखा है। इसका विभाजन **आह्निकों** में है। प्रथम **पस्पशाह्निक** में व्याकरण की आवश्यकता आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण विवेचन है। वार्तिकों की समीक्षा, तथा शङ्काओं के समाधान के साथ ही साथ उपयोगी वार्तिकों को सहर्ष स्वीकार तथा अनुपयुक्त आलोचनाओं का खण्डन किया है। इस ग्रन्थ में तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रचुर एवं मनोरम परिचय प्राप्त होता है। महाभाष्य पर **कैयट** की **प्रदीप** और **नागेश** की **उद्योत** टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। व्याकरणशास्त्र में **पाणिनि, कात्यायन** और **पतञ्जलि** को त्रिमुनि (**मुनित्रय**) संज्ञा से अभिहित किया गया है।

काशिका और न्यास

पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि के पश्चात् नियमों को बोधगम्य बनाने के लिए विविध टीका-ग्रन्थों का युग प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में सातवीं ईसवीं में **जयादित्य** और **वामन** ने **अष्टाध्यायी** पर एक टीका लिखी, जो **काशिका वृत्ति** के नाम से प्रसिद्ध है। काशिका पर **जिनेन्द्र बुद्धि** ने **न्यास** और **हरदत्त** ने **पदमञ्जरी** नामक उपटीकाएँ लिखीं।

प्रक्रिया ग्रन्थ

टीकाओं और उपटीकाओं के बाद पाणिनीय सूत्रों की नवीन पद्धति की ओर वैयाकरणों का ध्यान आकर्षित हुआ। **धर्मकीर्ति** ने **रूपावतार** ग्रन्थ लिखा, जिसमें अष्टाध्यायी के सूत्रों को विभिन्न प्रकरणों में विभक्त कर सम्पादित किया गया है। सन् 1350 ई. में विमल सरस्वती ने **रूपमाला** और 1400 ई. में पं. रामचन्द्र ने **प्रक्रिया कौमुदी** नामक ग्रन्थ की रचना की। 1630 ई. के लगभग भट्टोजी दीक्षित ने **सिद्धान्त कौमुदी** की रचना की। इस पर स्वयं भट्टोजी दीक्षित ने **प्रौढ़मनोरमा** नाम की टीका लिखी। पण्डितराज जगन्नाथ ने **मनोरमा कुचमर्दिनी** नाम से व्याख्या प्रस्तुत की है। सिद्धान्त कौमुदी पर नागेशभट्ट ने **लघुशब्देन्दुशेखर** नामक प्रौढ़ ग्रन्थ लिखा। सिद्धान्त कौमुदी की दो अन्य प्रसिद्ध टीकाएं – **तत्त्वबोधिनी** और **बालमनोरमा** है। आचार्य वरदराज ने सिद्धान्तकौमुदी को संक्षिप्त करते हुए **लघुसिद्धान्तकौमुदी** एवं **मध्यसिद्धान्तकौमुदी** की रचना की, जो व्याकरण के प्रारम्भिक छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त समस्त ग्रन्थ प्राय: व्याकरण के व्युत्पत्ति पक्ष को लक्ष्य में रखकर लिखे गए हैं। व्याकरण के दार्शनिक पक्ष को लेकर लिखे गए ग्रन्थों में-भर्तृहरि का **वाक्यपदीय**, कौण्डभट्ट का **वैयाकरणभूषण** एवं **वैयाकरणभूषणसार** तथा नागेशभट्ट की **लघुमञ्जूषा** और **स्फोटवाद**–प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा – 2000 के आलोक में माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित संस्कृत पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर यह **व्याकरणवीथि:** पुस्तक तैयार की गई है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में **वर्ण विचार**, द्वितीय में **संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण**, तृतीय में **सन्धि**, चतुर्थ में **शब्द रूप** (सामान्य परिचय), पंचम में **धातु रूप** (सामान्य परिचय), षष्ठ में **उपसर्ग**, सप्तम में **अव्यय**, अष्टम में **प्रत्यय**, नवम में **समास परिचय**, दशम में **कारक** और **विभक्ति** तथा एकादश अध्याय में **वाच्य परिवर्तन** पर उपयोगी सामग्री दी गई है। इसके द्वादश अध्याय में **रचना प्रयोग** (संस्कृत में पत्र, अपठित अनुच्छेदों पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर, अनुच्छेद लेखन तथा लघु निबंध) दिए गए हैं। पुस्तक के परिशिष्ट भाग में **शब्दरूपावली** (अजन्त, हलन्त, सर्वनाम तथा संख्यावाची शब्द) एवं **धातु रूपावली** गणों के अनुसार

पर्याप्त मात्रा में दी गई है जिससे छात्रों को शब्दरूप तथा धातु रूप सम्बन्धी समस्या के लिए इधर-उधर भटकना न पड़े। इस तरह इस पुस्तक में संस्कृत व्याक़रण के आधारभूत नियमों का परिचय देते हुए उपयोगी अभ्यासचारिका द्वारा छात्रों के व्याकरण ज्ञान को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है कि यह पुस्तक माध्यमिक स्तर के छात्रों की संस्कृत व्याकरण सम्बन्धी कठिनाइयों का समाधान करने में सफल होगी।

सम्पादक

पाण्डुलिपि-समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

योगेश्वर दत्त शर्मा
रीडर, (सेवानिवृत्त) संस्कृत हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
भवन्स मेहता कालेज
भरवारी, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

पतञ्जलि कुमार भाटिया
रीडर, संस्कृत
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज
नेहरू नगर, नई दिल्ली

राजेश्वर मिश्र
रीडर, संस्कृत विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा

हरिराम मिश्र
असिस्टैंट प्रोफेसर, संस्कृत
स्पेशल सेंटर फॉर संस्कृत स्टडीज, जे.एन.यू., नई दिल्ली

रामनाथ झा
असिस्टैंट प्रोफेसर, संस्कृत
स्पेशल सेंटर फॉर संस्कृत स्टडीज, जे.एन.यू., नई दिल्ली

श्रीमती सन्तोष कोहली
उपप्रधानाचार्या (सेवानिवृत्त)
सर्वोदय विद्यालय
कैलाश एन्क्लेव, रोहिणी, दिल्ली

श्रीमती सत्या महे
पी.जी.टी., संस्कृत
रा.क.व.मा. विद्यालय
शकरपुर नं. 1, दिल्ली

सुगन्ध पाण्डेय
टी.जी.टी., संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय
बी.एच.ई.एल. कैम्पस, हरिद्वार, उत्तरांचल

पुरुषोत्तम मिश्र
टी.जी.टी., संस्कृत
राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी, दिल्ली

श्रीमती लता अरोरा
टी.जी.टी., संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-IV
आर.के.पुरम, नई दिल्ली

श्रीमती आभा झा
टी.जी.टी., संस्कृत
सर्वोदय बाल उ.मा. विद्यालय
जे-ब्लाक, साकेत
नई दिल्ली

रामप्रकाश शर्मा
टी.जी.टी., संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय
एयरफोर्स स्टेशन, बवाना, दिल्ली

श्रीमती आशालता चौधरी
टी.जी.टी. संस्कृत
मदर इन्टरनेशनल स्कूल
नई दिल्ली

राजेन्द्र पाण्डेय
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय शिक्षा संस्थान
कैलाश कालोनी, नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् संकाय

कमलाकान्त मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत

श्रीमती उर्मिल खुंगर
सिलेक्शन ग्रेड लेक्चरर (सेवानिवृत्त)
संस्कृत

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी (**संयोजक**)
रीडर, संस्कृत

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

विषयानुक्रमणिका

परिशिष्ट

वर्णविचार

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। पाणिनि ने वर्णमाला को 14 सूत्रों में प्रस्तुत किया है। इन सूत्रों को **माहेश्वर सूत्र** कहते हैं।

(1) **अइउण्** (अ, इ, उ)
(2) **ऋऌक्** (ऋ, ऌ)
(3) **एओङ्** (ए, ओ)
(4) **ऐऔच्** (ऐ, औ)
(5) **हयवरट्** (ह्,य्,व्,र्)
(6) **लण्** (ल्)
(7) **ञमङणनम्** (ञ्,म्,ङ्,ण्,न्)
(8) **झभञ्** (झ्, भ्)
(9) **घढधष्** (घ्, ढ्, ध्)
(10) **जबगडदश्** (ज्, ब्, ग्,ड्,द्)
(11) **खफछठथचटतव्** (ख्,फ्,छ्,ठ्,थ्,च्,ट्,त्)
(12) **कपय्** (क्,प्)
(13) **शषसर्** (श्,ष्,स्)
(14) **हल्** (ह्)

प्रत्येक सूत्र के अन्त में हल् वर्ण का प्रयोग प्रत्याहार बनाने के उद्देश्य से किया गया है। (जैसे **अइउण्** में 'ण्' हल् वर्ण है।) इन्हें प्रत्याहारों के अन्तर्गत आने वाले वर्णों के साथ सम्मिलित नहीं किया जाता।

प्रत्याहार : माहेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे – अच्, इक्, यण्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं –

यथा – **अच्**, = अ, इ, उ, ऋ, लृ ए, ओ, ऐ, औ। यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण **'अ'** का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण **'च्'** को छोड़ दिया गया है।

(क) **हल्** (5वें सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह्' से लेकर 14वें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, तथा स्।

(ख) **इक्** (प्रथम सूत्र के द्वितीय वर्ण **'इ'** से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा लृ।

(ग) **अक्** (प्रथम सूत्र के प्रथम वर्ण **'अ'** से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण **'क्'** के मध्य आने वाले सभी वर्ण) अ, इ, उ, ऋ तथा लृ।

(घ) **झल्** (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण 'झ' से लेकर 14वें सूत्र के अन्तिम वर्ण ल् के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, तथा ह्।

(ङ) **यण्** (पञ्चम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'य' से लेकर षष्ठ सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ण्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य्, व्, र्, तथा ल्।

- सन्धि आदि के नियमों को समझने के लिए प्रत्याहार अत्यन्त आवश्यक हैं।
- वर्ण दो प्रकार के होते हैं – स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर (अच्) जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं – ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत

(i) **ह्रस्व स्वर** – जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में पाँच हैं – अ, इ, उ, ऋ तथा लृ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

(ii) दीर्घ स्वर – जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगे उसे **दीर्घ स्वर** कहते हैं। इनकी संख्या आठ है – आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ तथा औ। अन्तिम चार वर्णों को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं क्योंकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरों के मेल से बने हैं –

उदाहरणम् –

अ+इ=ए   अ+ए=ऐ   अ+उ=ओ   अ+ओ=औ

(iii) प्लुत स्वर – जिस स्वर के उच्चारण में तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे **प्लुत** कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हैं तब सम्बोधन पद के अन्तिम वर्ण को दीर्घ स्वर से भी अधिक मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं। उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं।

अनुनासिक – जिस स्वर के उच्चारण में नासिका की सहायता ली जाती है उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं, यथा – **अँ, एँ** ।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे **हल् चिह्न** (्) लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिका में दर्शाए गए हैं –

उदाहरणम् –

क् ख् ग् घ् ङ्	क वर्ग
च् छ् ज् झ् ञ्	च वर्ग
ट् ठ् ड् ढ् ण्	ट वर्ग
त् थ् द् ध् न्	त वर्ग
प् फ् ब् भ् म्	प वर्ग
य् र् ल् व्	(अन्त:स्थ)
श् ष् स् ह्	(ऊष्म)

1. **स्पर्श (Plossive)** उपर्युक्त 'क्' से 'म्' तक के 25 वर्णों को स्पर्श कहते हैं । इनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है। प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण – ङ्, ञ्, ण्, न् और म् को अनुनासिक भी कहा जाता है।

2. **अन्तःस्थ (Semi-vowels)** य्, र्, ल् और व् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं क्योंकि इनकी गणना स्पर्श एवं ऊष्म वर्णों के मध्य की गई है। इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं ।

अनुस्वार – इसका उच्चारण संस्कृत में 'न्' या 'म्' की तरह होता है। इसे 'न्' या 'म्' के स्थान पर चिह्न (ं) द्वारा लिखा जाता है, यथा — अहम्-अहं

(i) विसर्ग (:) – संस्कृत में इसका प्रयोग स्वर के बाद होता है। इसका उच्चारण किञ्चित् ह् के सदृश किया जाता है; यथा – रामः, देवः, गुरुः।

(ii) संयुक्त व्यञ्जन – दो व्यञ्जनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

उदाहरणम् –

क् + ष् = क्ष्

त् + र् = त्र्

ज् + ञ् = ज्ञ्

उच्चारण स्थान

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के लिए फेफड़े से निकली निःश्वासवायु इन स्थानों का स्पर्श करती है। कुछ वर्णों का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को अग्रिम तालिका से समझा जा सकता है –

स्थान	स्वर	व्यञ्जन				
		स्पर्श	अन्तस्थ	ऊष्म	अयोगवाह	संज्ञा
कण्ठ	अ,आ	क्,ख्,ग्,घ्,ङ्		ह्		कण्ठ्य
तालु	इ,ई	च्,छ्,ज्,झ्,ञ्	य्	श्		तालव्य
मूर्धा	ऋ,ॠ	ट्,ठ्,ड्,ढ्,ण्	र्	ष्		मूर्धन्य
दन्त	ऌ	त्,थ्,द्,ध्,न्,	ल्	स्		दन्त्य
ओष्ठ	उ,ऊ	प्,फ्,ब्,भ्,म्			=	ओष्ठ्य
नासिका		ङ्,ञ्,ण्,न्,म्				नासिक्य
कण्ठतालु	ए, ऐ					कण्ठतालव्य
कण्ठोष्ठ	ओ,औ					कण्ठोष्ठ्य
दन्तोष्ठ			व्			दन्तोष्ठ्य

प्रयत्न

फेफड़े से निकली निःश्वास वायु को मुख, नासिका तथा कण्ठ आदि स्थानों से स्पर्श कराते हुए मनुष्य द्वारा अभीष्ट वर्णों के उच्चारणार्थ किए गए यत्न को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न के दो भेद होते हैं आभ्यन्तर तथा बाह्य। वर्णों के उच्चारण काल में मुख के अन्दर मनुष्य की चेष्टापरक क्रियां को आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं –

स्पृष्ट – वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा द्वारा मुख के अन्दर के स्थानों का स्पर्श किया जाता है तो जिह्वा के इस प्रयत्न को स्पृष्ट प्रयत्न कहते हैं। 'क्' से 'म्' तक सभी व्यञ्जन 'स्पृष्ट' प्रयत्न से उच्चरित होते हैं।

ईषत् स्पृष्ट – वर्णों के उच्चारण काल में जब जिह्वा द्वारा उच्चारण स्थान या स्थानों का थोड़ा ही स्पर्श किया जाता है तो जिह्वा के इस प्रयत्न को ईषत् स्पृष्ट कहते हैं। य्, र्, ल्, तथा व्, ईषत् स्पृष्ट प्रयत्न से उच्चरित होते हैं।

विवृत – वर्ण विशेष के उच्चारण काल में जब मुख-विवर खुला रहता है तो मुख के इस यत्न को विवृत कहते हैं। सभी स्वर 'विवृत' प्रयत्न से उच्चरित होते हैं।

ईषत् विवृत – वर्णों के उच्चारण काल में जब मुख-विवर थोड़ा खुला रहता है तो मुख के इस प्रयत्न को ईषत् विवृत कहते हैं। श्, ष्, स्, ह् ईषत् विवृत प्रयत्न से उच्चरित होते हैं।

संवृत – वर्णों के उच्चारण काल में फेफड़े से निकलने वाले निश्वास का मार्ग जब बन्द रहता है तब इसे संवृत कहते हैं। इसका प्रयोग केवल ह्रस्व **'अ'** के उच्चारण में होता है।

बाह्य प्रयत्न – वर्णों के उच्चारण का वह यत्न जो फेफड़े से कण्ठ तक होता है उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके ग्यारह भेद हैं –

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। बाह्य प्रयत्नों के आधार पर वर्णों का विभाजन निम्न तालिका से समझा जा सकता है–

विवार, श्वास, अघोष	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त, स्वरित
वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स्	वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, अन्तःस्थ एवं ह्	वर्गों के प्रथम तृतीय, पंचम वर्ण एवं अन्तःस्थ	वर्गों के द्वितीय चतुर्थ वर्ण एवं ऊष्म	स्वरों के प्रकार

अभ्यासकार्यम्

1. **अधोलिखितेषु प्रत्याहारेषु पठितान् वर्णान् लिखत –**

(i) इक् .... (iv) हश् ....

(ii) जश् .... (v) अट् ....

(iii) ऐच् .... (vi) झश् ....

2. **अधोलिखितानां वर्णानाम् उच्चारणस्थानं लिखत –**

(i) कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्)
(ii) टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्)
(iii) पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्)
(iv) इ, च्, य्, श्

3. **उदाहरणमनुसृत्य वर्णान् पृथक् कृत्वा लिखत –**

यथा – गजः - ग् + अ + ज् + अ + :

(i) कमलम्
(ii) भोजनम्
(iii) गच्छति
(iv) अनुपतति
(v) रावणः

4. **उदाहरणमनुसृत्य वर्णानाम् संयोजनं कुरुत –**

यथा — अ + ह् + अ + म् = अहम्

(i) प् + उ + स् + त् + अ + क् + आ + न् + इ
(ii) प् + अ + ठ् + इ + ष् + य् + आ + म् + इ
(iii) ग् + ऋ + ह् + अ + म्
(iv) श् + ओ + भ् + अ + न् + अ् + म्
(v) भ् + अ + व् + इ + त् + अ + व् + य् + अ + म्

5. **संयुक्तवर्णान् पृथक्कृत्वा पूरयत –**

(i) क्ष - क् + - + -
(ii) त्र - - + र् + -
(iii) श्र - - + - + अ
(iv) ज्ञ - ज् + - + -
(v) ए - अ + -
(vi) ओ - - + उ

द्वितीय अध्याय

संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण

व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी **नाम** से अभिहित किया जाता है। इसी **नाम** को **संज्ञा** भी कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में संज्ञाओं एवं परिभाषाओं का बहुत महत्त्व होता है। संज्ञाओं एवं परिभाषाओं को समझने से व्याकरण-प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है। कुछ संज्ञाएं एवं परिभाषाएं नीचे दी जा रही हैं –

1. आगम

किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत् पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है तब वह आगम कहलाता है – **मित्रवदागमः**, जैसे वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहाँ वृक्ष के 'अ' एवं छाया के 'छ' के मध्य में 'च्' का आगम हुआ है।

2. आदेश

किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है – **शत्रुवदादेशः**, जैसे यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ है।

3. उपधा

किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व (वर्ण) को **उपधा** कहते हैं जैसे चिन्त् में 'त्' अंतिम वर्ण है उससे पूर्व वर्ण 'न्' उपधा है। (**अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः उपधा**) जैसे महत् में अन्तिम वर्ण 'त्' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

4. उपचार

विसर्ग के स्थान में श्, ष्, स् का प्रयोग **उपचार** कहलाता है।

5. पद

संज्ञा के साथ सु, औ, जस्, (अः) आदि विभक्तियाँ तथा धातुओं के साथ ति, तस्, (तः) अन्ति, आदि के जुड़ने से शब्दों की पद संज्ञा होती है, **सुप् तिङन्तं पदम्** यथा – रामः, रामौ, रामाः तथा भवति, भवतः, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते। जिसकी पद संज्ञा नहीं होती व्याकरण के अनुसार उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है। (अपदं न प्रयुञ्जीत)

6. निष्ठा

क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को **निष्ठा** कहते हैं, **क्तक्तवतू निष्ठा।** इनके योग से भूतकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे – गतः, गतवान्।

7. विकरण

धातु और तिङन्त प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप्, (अ) श्यन्, (य) श्नु, (नु) आदि प्रत्यय **विकरण** कहलाते हैं, यथा – भवति में भू + ति के मध्य में 'शप्' हुआ है (भू + अ + ति)। विकरण भेद से ही धातुएँ दस विभिन्न गणों में विभक्त होती हैं।

8. संयोग

स्वर रहित व्यंजनों की अत्यन्त समीपता को **संयोग** कहते हैं, जैसे – उष्ण में 'ष्' तथा 'ण' व्यञ्जनों का संयोग है (हलोऽनन्तराः संयोगः)।

9. संहिता

वर्णों के अत्यन्त सामीप्य को **संहिता** कहते हैं। (पर : सन्निकर्षः संहिता) वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं, जैसे – वाक् + ईशः में 'क्' + 'ई' में संहिता (अत्यन्त समीपता) के कारण सन्धि कार्य करने से 'वागीशः' पद बना है।

10. सम्प्रसारण

यण् (य् , व् , र् , ल्) के स्थान पर इक् (इ , उ , ऋ, लृ) के प्रयोग को **सम्प्रसारण** कहते हैं। (इङ्यणः सम्प्रसारणम्), जैसे – यज्-इज् इज्यते, वच्-उच् = उच्यते इत्यादि।

सन्धि

'सन्धि' शब्द का अर्थ है 'मेल'। अत्यन्त समीपता के कारण दो वर्णों के आपस में मिल जाने से जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे सन्धि कहते हैं, यथा – **विद्या** + **आलयः** = **विद्यालयः**। यहाँ पर विद्**्** + आ + आलयः की अत्यन्त समीपता के कारण दो दीर्घ 'आ' आपस में मिलकर एक 'आ' हो गए। **सन्धि** के मुख्यतया तीन भेद होते हैं –

(1) स्वर सन्धि (अच् सन्धि)

(2) व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)

(3) विसर्ग सन्धि

1. स्वर सन्धि

स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल को स्वर सन्धि कहते हैं। इसके निम्नलिखित भेद हैं –

1. दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)

- यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ तथा 'ॠ' हो जाते हैं।

अ/आ + आ/अ = आ, इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + ऊ/उ = ऊ, ऋ/ॠ + ऋ /ॠ = ॠ

उदाहरणम् –

पुस्तक	+	आलय:	=	पुस्तकालय:
देव	+	असुर:	=	देवासुर:
दैत्य	+	अरि:	=	दैत्यारि:
च	+	अपि	=	चापि
विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
गिरि	+	इन्द्र:	=	गिरीन्द्र:
कपि	+	ईश:	=	कपीश:
मही	+	ईश:	=	महीश:
नदी	+	ईश:	=	नदीश:
लक्ष्मी	+	ईश्वर:	=	लक्ष्मीश्वर:
सु	+	उक्ति:	=	सूक्ति:
भानु	+	उदय:	=	भानूदय:
पितृ	+	ऋणम्	=	पितृणम्

2. गुण सन्धि (आद् गुण:)

- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं। इसी तरह यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आए तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों मिलकर 'अर्' हो जाते हैं।

उदाहरणम् –

अ/आ + इ/ई = ए, अ/आ + उ/ऊ = ओ

अ/आ + ऋ = अर्

1. उप + इन्द्र: = उपेन्द्र:

देव + इन्द्र = देवेन्द्र:

गण + ईश: = गणेश:

महा + ईश: = महेश:

नर + ईश: = नरेश:

सुर + ईश: = सुरेश:

लता + इव = लतेव

गंगा + इति = गंगेति

2.	भाग्य + उदयः	=	भाग्योदयः
	सूर्य + उदयः	=	सूर्योदयः
	नर + उत्तमः	=	नरोत्तमः
	हित + उपदेशः	=	हितोपदेशः
	महा + उत्सवः	=	महोत्सवः
	गंगा + उदकम्	=	गंगोदकम्
	यथा + उचितम्	=	यथोचितम्
	गंगा + उर्मिः	=	गंगोर्मिः
	महा + ऊरुः	=	महोरुः
	नव + ऊढा	=	नवोढा
3.	देव + ऋषिः	=	देवर्षिः
	ग्रीष्म + ऋतुः	=	ग्रीष्मर्तुः
	महा + ऋषिः	=	महर्षिः
	राजा + ऋषिः	=	राजर्षिः

3. वृद्धि सन्धि (वृद्धिरेचि)

- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं।

  अ/आ + ए/ऐ = ऐ   अ/आ + ओ/औ = औ

उदाहरणम् –

मम + एव	=	ममैव
एक + एकम्	=	एकैकम्
तव + एव	=	तवैव
अद्य + एव	=	अद्यैव

लता + एव	=	लतैव
तथा + एव	=	तथैव
सदा + एव	=	सदैव
जल + ओघः	=	जलौघः
मम + ओषधिः	=	ममौषधिः
नव + ओषधिः	=	नवौषधिः
महा + ओषधिः	=	महौषधिः
महा + ओघः	=	महौघः
महा + औदार्यम्	=	महौदार्यम्

4. यण सन्धि (इकोयणचि)

- इक् = (इ, उ, ऋ, लृ) को यण् = (य्, व्, र्, ल्) हो जाता है। जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ तथा लृ के बाद कोई असमान स्वर आए तो 'इ' को य्, उ को व्, ऋ, को 'र्' तथा 'लृ' को 'ल्' हो जाता है।

उदाहरणम् –

यदि + अपि	=	यद्यपि
इति + आदि	=	इत्यादि
नदी + आवेगः	=	नद्यावेगः
सु + आगतम्	=	स्वागतम्
अनु + अयः	=	अन्वयः
अनु + एषणम्	=	अन्वेषणम्
अति + आचारः	=	अत्याचारः
इति + अवदत्	=	इत्यवदत्
मधु + अरिः	=	मध्वरिः
पितृ + आदेशः	=	पित्रादेशः
पितृ + उपदेशः	=	पित्र्युपदेशः
मातृ + आज्ञा	=	मात्राज्ञा
लृ + आकृतिः	=	लाकृतिः

5. अयादि (एचोऽयवायावः)

- जब ए, ऐ, ओ तथा 'औ' के बाद कोई स्वर आए तो 'ए' को अय्, 'ऐ' को आय्, 'ओ' को अव् तथा 'औ' को आव् हो जाता है। इसे **अयादिचतुष्टय** के नाम से जाना जाता है।

उदाहरणम् –

ने + अनम्	=	नयनम्
शे + अनम्	=	शयनम्
नै + अकः	=	नायकः
भो + अनम्	=	भवनम्
भानो + ए	=	भानवे
पौ + अकः	=	पावकः
नौ + इकः	=	नाविकः
भौ + उकः	=	भावुकः

6. पूर्वरूप सन्धि (एङःपदान्तादति)

- पूर्वरूप सन्धि को अयादि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पदान्त ए, ओ से आगे यदि ह्रस्व 'अ' आए तो 'अ' का पूर्वरूप हो जाता है। अर्थात् ए-ओ के पश्चात् आने वाला 'अ' अपना रूप ए-ओ में ही (विलीन कर) छुपा देता है। उस विलीन 'अ' का रूप अवग्रह चिह्न (ऽ) द्वारा अंकित किया जाता है, जैसे- हरे + अत्र में हरयत्र होना चाहिए था परन्तु 'अ' 'ए' में समा गया और रूप बना हरेऽत्र।

उदाहरणम् –

गोपालो	+	अहम्	=	गोपालोऽहम्
विष्णो	+	अव	=	विष्णोऽव

ते	+	अपि	=	तेऽपि
कवे	+	अत्र	=	कवेऽत्र
वृक्षे	+	अपि	=	वृक्षेऽपि
जले	+	अस्ति	=	जलेऽस्ति

प्रकृतिभाव –

1. ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्, 2. अदसो मात्

- प्रकृतिभाव या प्रगृह्य का अर्थ है सन्धि करने का निषेध करना अर्थात् प्रकृत वर्णों में विकृति (परिवर्तन) न करके उन्हें ज्यों का त्यों बनाए रखना। इसको प्रकृतिभाव भी कहते हैं। वस्तुतः इसे सन्धि का भेद न कहकर सन्धि का अभाव ही कहना चाहिए क्योंकि सन्धि नियम के लागू होने की स्थिति में भी सन्धि कार्य नहीं होता। यह प्रगृह्य भाव निम्न स्थलों पर होता है।

(क) ईदन्त, ऊदन्त तथा एदन्त द्विवचन रूपों की प्रगृह्य-संज्ञा होती है। ऐसे द्विवचन, जिन के अन्त में ई, ऊ अथवा ए होता है उनकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है तथा जिनकी प्रगृह्य संज्ञा होती हैं वहाँ किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होती, यथा –

कवी + इच्छतः, विष्णू + इमौ, लते + आगच्छतः, यहाँ पर कवी, विष्णू, तथा 'लते' ये क्रमशः ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त द्विवचन के रूप हैं, अतः ये प्रगृह्यसंज्ञक हैं, अतः यहाँ किसी प्रकार की सन्धि नहीं होती।

(ख) **अदस्** शब्द के 'म्' के बाद 'ई' या 'ऊ' आए तो वहाँ पर भी प्रगृह्य संज्ञा होने के कारण सन्धि नहीं होती, यथा – अमी + ईशाः, अमू + आस्ते यहाँ पर 'अमी' तथा 'अमू' प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः किसी भी प्रकार की सन्धि न होगी।

7. पररूप सन्धि

- **(एङिपररूपम्)** उपसर्ग के 'अ' के पश्चात् यदि 'ए' या 'ओ' आए तो उनका पररूप हो जाता है। इस पररूप सन्धि को वृद्धि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पररूप कार्य से तात्पर्य है कि जब

पूर्वपद का अन्तिम वर्ण अगले शब्द के आदि वर्ण के समान होकर उसमें मिल जाए, जैसे प्र + एजते = प्रेजते में वृद्धि कार्य प्रैजते होना चाहिए था लेकिन प्र में स्थित अ की स्थिति ए में ही मिल गई अर्थात् अ की अपनी सत्ता ही नहीं बची। अतः प्र + एजते = प्रेजते, उप + ओषति = उपोषति हुआ।

2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन वर्ण के मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

(1) श्चुत्व – (स्तोः श्चुना श्चुः)

- 'स्' या 'त' वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) का 'श्' या 'चवर्ग' (च्, छ्, ज्, झ्, ञ) के साथ योग होने पर 'स्' को 'श्' तथा 'त' वर्ग का 'च' वर्ग में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरणम् –

(i) मनस् + चलति (स् + च् = श्च्) = मनश्चलति
(ii) रामस् + शेते (स् + श् = श्श्) = रामश्शेते
(iii) मनस् + चंचलम् (स् + च = श्च्) = मनश्चंचलम्

'त' वर्ग को 'च' वर्ग

उदाहरणम् –

सत् + चित् (त् + च् = च्च) = सच्चित्
सत् + चरित्रम् (त् + च् = च्च) = सच्चरित्रम्
उत् + चारणम् (त् + च् = च्च) = उच्चारणम्
सत् + जनः (त् + ज् = ज्ज) = सज्जनः
उत् + ज्वलम् (त् + ज् = ज्ज) = उज्ज्वलम्
जगत् + जननी (त् + ज् = ज्ज) = जगज्जननी

(2) ष्टुत्व = (ष्टुनाष्टुः)

- यदि 'स' या 'त' वर्ग का 'ष' या 'ट' वर्ग (ट, ठ, ड, ढ तथा ण) के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो 'स्' को 'ष्' और 'त' वर्ग के स्थान पर टवर्ग हो जाता है।

उदाहरणम् –

रामस् + षष्ठः (स् + ष = ष्ष) = रामष्षष्ठः

हरिस् + टीकते (स् + ट = ष्ट) = हरिष्टीकते

'त' वर्ग को 'ट' वर्ग

उदाहरणम् –

तत् + टीका (त् + ट् = ट्ट) = तट्टीका

यत् + टीका (त् + ट् = ट्ट) = यट्टीका

उत् + डयनम् (त् + ड् = ड्ड) = उड्डयनम्

आकृष् + तः (ष् + त् = ष्ट) = आकृष्टः

(3) जश्त्व (झलां जशोऽन्ते)

- पद के अन्त में झल् के स्थान पर जश् हो जाता है। झलों में वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण तथा श्, ष्, स् तथा ह् कुल 24 वर्ण आते हैं। इस तरह झल् के स्थान पर जश् (ज, ब, ग, ड) होता है। इसके अतिरिक्त वर्ग के प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ वर्णों के स्थान पर वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। ष्, श्, स्, ह् में ष् के स्थान पर 'ड्' आता है। अन्य का उदाहरण प्रायः नहीं मिलता है।

उदाहरणम् –

वाक् + ईशः (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = वागीशः

जगत् + ईशः (त् + स्वर = तृतीय वर्ण द् + स्वर) = जगदीशः

सुप् + अन्तः (प् + स्वर = तृतीय वर्ण ब् + स्वर) = सुबन्तः

अच् + अन्तः (च् + स्वर = तृतीय वर्ण ज् + स्वर) = अजन्तः

दिक् + अम्बरः (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = दिगम्बरः

दिक् + गजः (क् + ग् = ग्ग्) = दिग्गजः

सत् + धर्मः (त् + ध् = द्ध) = सद्धर्मः

अप् + जम् (प् + ज् = ब्ज्) = अब्जम्

क्रुद्धः, दग्धः, दुग्धम्, बुद्धिः, सिद्धिः आदि पदों में भी इसी प्रकार सन्धि समझना चाहिए।

(4) चर्त्व (खरि च)

- यदि वर्गों (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग) के द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण के बाद वर्ग का प्रथम, या द्वितीय वर्ण या श्, ष्, स् आए तो पहले आने वाला वर्ण अपने ही वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।

उदाहरणम् –

सद् + कारः (द् + क् = त्क्) = सत्कारः

लभ् + स्यते (भ् + स् = प्स्) = लप्स्यते

दिग् + पालः (ग् – प् = क्प्) = दिक्पालः

(5) अनुस्वार (मोऽनुस्वारः)

- यदि किसी पद के अन्त में 'म्' हो तथा उसके बाद कोई व्यञ्जन आए तो 'म्' को अनुस्वार (ं) हो जाता है।

उदाहरणम् –

हरिम् + वन्दे = (ं) हरिं वन्दे

अहम् + गच्छामि = (ं) अहं गच्छामि

(6) परसवर्ण (अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः)

- यदि पद के मध्य अनुस्वार के बाद श्, ष्, स् ह् को छोड़कर कोई भी व्यञ्जन आए तो अनुस्वार के स्थान पर आगे वाले वर्ण का पञ्चम हो जाता है।

उदाहरणम् –

अं + कितः (ं + क् = ङ्क) = अङ्कितः

सं + कल्पः (ं + क् = ङ्क) = सङ्कल्पः

कुं + ठितः (ं + ठ = ण्ठ्) = कुण्ठितः

अं + चितः (ं + च् = ञ्च) = अञ्चितः

(7) लत्व (तोर्लि)

- यदि तवर्ग के बाद 'ल्' आए तो तवर्ग के वर्णों को 'ल्' हो जाता है। किन्तु 'न्' के बाद 'ल्' के आने पर अनुनासिक 'लँ' होता है। 'लँ' का अनुनासिक्य चिन्ह पूर्व वर्ण पर पड़ता है।

उदाहरणम् –

उत् + लङ्घनम् (त् + ल् = ल्ल्) = उल्लङ्घनम्

तत् + लीनः (त् + ल् = ल्ल्) = तल्लीनः

उत् + लिखितम् (त् + ल् = ल्ल्) = उल्लिखितम्

उत् + लेखः (त् + ल् = ल्ल्) = उल्लेखः

महान् + लाभः (न + ल् = ल्ल्) = महाँल्लाभः

विद्वान् + लिखति (न् + ल् = ल्ल्) = विद्वाँल्लिखति

(8) छत्व (शश्छोऽटि)

- यदि 'श्' के पूर्व पदान्त में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण हो या र्, ल्, व् अथवा ह् हो तो श् के स्थान पर 'छ्' हो जाता है।

उदाहरणम् –

एतत् + शोभनम् (त् + श् = च्छ्) = एतच्छोभनम्

तत् + श्रुत्वा = (त् + श् = च्छ्) = तच्छ्रुत्वा

'च्' का आगम् – (छे: च)

- यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात् 'छ्' आए तो 'छ्' के पूर्व 'च्' का आगम होता है।

उदाहरणम् –

तरु + छाया (उ + छ् = उ + च् + छ्) = तरुच्छाया

अनु + छेद: (उ + छ् = उ + च् + छ्) = अनुच्छेद:

परि + छेद: (इ + छ् = इ + च् + छ्) = परिच्छेद:

'र्' का लोप तथा पूर्व स्वर का दीर्घ होना (रोरि)

उदाहरणम् –

- यदि 'र्' के बाद 'र्' हो तो पहले 'र्' का लोप हो जाता है तथा उसके पूर्ववर्ती स्वर को दीर्घ हो जाता है।

उदाहरणम् –

स्वर् + राज्यम् (र् + र् = आ + र्) = स्वाराज्यम्

निर् + रोग: (र् + र् = ई + र्) = नीरोग:

निर् + रस: (र् + र् = ई + र्) = नीरस:

न् को ण् होना –

- यदि एक ही शब्द में ऋ, र्, ष् के पश्चात् 'न्' आए तो 'न्' का 'ण्' हो जाता है।

उदाहरणम् –

नरा + नाम् = नराणाम्

ऋषी + नाम् = ऋषीणाम्

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग (:) के पश्चात् स्वर या व्यञ्जन वर्ण के आने पर विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तन को **विसर्ग सन्धि** कहते हैं।

सत्व (विसर्जनीयस्य सः)

- यदि विसर्ग (:) के बाद खर् वर्ण (वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स् च् या छ्) हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। परन्तु यदि विसर्ग (:) के बाद श्, ट् या ठ् हो तो विसर्ग (:) का 'ष्' तथा 'त' या 'थ्' हो तो विसर्ग (:) का 'स्' हो जाता है।

उदाहरणम् –

निः + चलः	=	(: + च = श्च)	निश्चलः
शिरः + छेदः	=	(: + छ = श्छ)	शिरश्छेदः
धनुः + टङ्कार	=	(: + ट = ष्ट)	धनुष्टङ्कारः
नमः + ते	=	(: + त = स्त)	नमस्ते
देवः + तरति	=	(: + त = स्त)	देवस्तरति
इतः + ततः	=	(: + त = स्त)	इतस्ततः

- यदि विसर्ग (:) के पूर्व 'इ' या 'उ' हो तथा बाद में क्, ख् या प्, फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर ष् हो जाता है।

उदाहरणम् –

निः + कपटः	=	(: + क = ष्क)	निष्कपटः
निः + फलः	=	(: + फ = ष्फ)	निष्फलः
दुः + कर्म	=	(: + क = ष्क)	दुष्कर्म

- यदि नमः और पुरः के बाद क्, ख् या प्, फ् आए तो विसर्ग (:) का स् हो जाता है।

नमः + कारः (: + क = स्क) नमस्कारः

पुरः + कारः (: + क = स्क) पुरस्कारः

विसर्ग को उत्व, गुण तथा पूर्वरूप

- यदि विसर्ग (:) से पहले ह्रस्व 'अ' हो तथा उसके पश्चात् भी ह्रस्व 'अ' हो तो विसर्ग को 'उ' उसके बाद गुण तथा पूर्वरूप हो जाता है।

उदाहरणम् –

बाल: + अयम्

= बाल् + अ + : + अयम्
= बाल् + अ + उ + अयम् = बाल् + ओ + अयम्
= बालो + अयम् = बालोऽयम्

स: + अवदत् = सोऽवदत्

नृप: + अवदत् = नृपोऽवदत्

प्रथम: + अध्याय: = प्रथमोऽध्याय:

- यदि विसर्ग (:) से पहले अ हो तथा बाद में वर्गों के तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व् या ह्, हो तो विसर्ग के स्थान पर र पुन: र् को उ तदनन्तर उ को गुण होकर 'ओ' हो जाता है।

उदाहरणम् –

तप: + वनम् = तप् + अ + (:) + वनम्

= तप् + अ + र् + वनम्

= तप् + अ + उ + वनम् (र् के स्थान पर उ)

= तप् + ओ + वनम् (अ + उ = ओ)

= तपोवनम्

मन: + रथ: = मनोरथ:

बाल: + गच्छति = बालो गच्छति

रुत्व (: = र्)

- यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर या घोष व्यञ्जन हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर र् हो जाता है।

उदाहरणम् –

मुनिः + अयम्	=	मुन् + इ + : + अयम्
	=	मुन् + इ + र् + अयम्
	=	मुनिरयम्
हरिः + आगच्छति	=	हरिरागच्छति
गुरुः + जयति	=	गुरुर्जयति

संयोगः

- संस्कृत में 'संयोग' एक महत्त्वपूर्ण संज्ञा के रूप में प्राप्त होता है। यह एक पारिभाषिक शब्द है। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में इसका अर्थ "हलोऽनन्तराः संयोगः" किया है। वस्तुतः स्वर रहित व्यञ्जनों (हल्) के अतीव सामीप्य भाव को संयोग कहते हैं, यथा – महत्त्व में त्, त् तथा व् का संयोग है। इसी प्रकार –

1. रामः उद्यानं गच्छति। उद्यानम् में द् और य् तथा गच्छति में च्, छ् का संयोग है।
2. अयं रामस्य ग्रन्थः अस्ति। रामस्य में स् और य् , ग्रन्थः में ग् + र् तथा न् और थ् तथा अस्ति में स् और त् का संयोग है।

अभ्यासकार्यम् (स्वरसन्धि)

प्र.1. सन्धिं कुरुत –

चन्द्र + उदयः, मातृ + ऋणम्, यदि + अपि, मत + ऐक्यम्, उपरि + उक्तानि, भानु + उदयः भौ + उकः, विष्णो + इह, गङ्गा + इव, यमुना + एव, साधू + उभयत्र

प्र.2. सन्धिविच्छेदं कुरुत –

अन्वेषणम्, तवैव, नद्येषा, नदीव, अत्याचारः, शयनम्, मध्वरिः, केऽपि, अद्यैव, यथोचितम्

प्र.3. यत्र प्रकृतिभाव-सन्धिः अस्ति तत्पदं (✓) इति चिन्हेन चिन्हीकुरुत-

नदी एते	( )
मुनी एतौ	( )
साधू उपरि गच्छतः	( )
मुनी इच्छतः	( )
सभायाम् कवी आगतौ	( )
नदी इयम् वहति	( )

प्र.4. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत –

1. **कवीन्द्रः** अद्य नवीनां कवितां श्रावयति।
2. कंसः सर्वेषु **अत्याचारम्** करोति स्म।
3. गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां **शतैरपि** सः पापेभ्यः विमुच्यते।
4. यथा रामः पठति **तथैव** श्यामः पठति।
5. वानराः सर्वत्र **वृक्षेऽपि** कूर्दन्ति।

अभ्यासकार्यम् (व्यञ्जनसन्धि)

प्र.1. सन्धिविच्छेदं कुरुत –

दिगम्बरः, अयं गच्छति, मच्छिरः, जगदीशः, उड्डयनम्, नीरोगः, तल्लीनः, दिग्गजः।

प्र.2. सन्धिं कुरुत –

सत् + जनः, उत् + लेखः, हरिम् + वन्दे, तत् + श्रुत्वा, विद्वान् + लिखति, निर् + रसः, सं + कल्पः।

प्र.3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानां यथापेक्षं सन्धिम् अथवा सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत –

(i) सर्वे **जगच्छिवानि** कार्याणि कुर्वन्तु।

(ii) यत्पाठे **उत् + लिखितम्** तत् सर्वं पठत।

(iii) **नीरोगः** जनः सुखी भवति।

(iv) कोकिलः **पं + चमे** स्वरे गायति।

(v) सः **तरुच्छायायाम्** पठति।

(vi) मानी **मानम् + न** त्यजति।

अभ्यासकार्यम् (विसर्गसन्धि)

प्र.1. सन्धिं कृत्वा लिखत –

इतः + ततः, दुः + कर्म, शिवः + अवदत्, मुनिः + आगच्छति, छात्रः + अयम्, प्रथमः + अध्यायः, तृतीयः + अवदत्, मनः + रथः।

प्र.2. सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत –

कीटोऽपि, भोजो नाम, वर्षयोरुपरान्तम्, कैश्चित्, महापुरुषैरपि, धनुष्टङ्कारः, कृष्णोऽयम्, नमस्कारः, शिविर्जयति।

प्र.3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत –

(1) **पितुरिच्छा** वर्तते।

(2) छात्रः **तपोवनम्** गच्छति।

(3) अध्यापकः उत्तमं छात्रं **पुरस्करोति**।

(4) मन्दबुद्धिः सेवकः स्वामिनः **मनस्तापस्य** कारणमभवत्।

(5) **निष्कपटः** जनः शोभते।

(6) **बालो गच्छति**।

अभ्यासकार्यम्

1. **अधोलिखितेषु संयोगं कृत्वा पदनिर्माणं कुरुत –**

त् + र् + आयते = ____________

उ + ष् + ण् + अम् = ____________

म् + ल् + आनम् = ____________

ग् + ल् + आनिः = ____________

नि + ष् + क + र् + ष् + अः = ____________

2. **रिक्तस्थानानि पूरयत –**

क्लेशः = ________ + ________ + एशः।

स्वभावः = स् + ________ + अभावः।

कर्म = क + र् + ________ + अ ।

उच्छ्वासः = उ + ______ + ______ + ______ + आसः।

उल्लासः उ + ______ + ______ + आसः।

- यदि कोई व्यञ्जन (हल्) स्वर से रहित है तो उसे आगे आने वाले स्वर से जोड़ देना चाहिए (अच् हीनं परेण संयोज्यम्), यथा –

सोहनः विद्यालयम् आगच्छति – यहाँ 'विद्यालयम्' का म् स्वर रहित है, अतएव, आगे आने वाले 'आगच्छति' के "आ" स्वर से जोड़ने पर "सोहनः" "**विद्यालयमागच्छति**" रूप बनेगा। इसी प्रकार अहम् ईश्वरम् इच्छामिं **अहमीश्वरमिच्छामि।**

3. **अधोलिखितानि यथापेक्षितं योजयत –**

(i) जननीजनकविहीनम् अनाथम् पश्यामि = ____________

(ii) सीता पुस्तकम् अपठत् = ____________

(iii) कुरु न त्वम् अनर्थम् = ____________

(iv) बालकम् अनाथम् पालय = ____________

(v) सर्वम् अहर्निशं मानय = ____________

चतुर्थ अध्याय

शब्दरूप (सामान्य परिचय)

वाक्य की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते हैं। शब्दों के अनेक रूप (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) रूप होते हैं। व्याकरण की भाषा में इन्हें **नाम** कहा जाता है। इस प्रकार किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव (क्रिया) आदि का बोध कराने वाले शब्दों को **संज्ञा** कहते हैं। संस्कृत भाषा में प्रयोग करने के लिए इन शब्दों को 'पद' बनाया जाता है। संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों को पद बनाने हेतु इनमें कारक विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। इन शब्दरूपों (पदों) का प्रयोग (पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग तथा एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में भिन्न-भिन्न रूपों में) होता है। इन्हें सामान्यतया **शब्दरूप** कहा जाता है।

संज्ञा आदि शब्दों में जुड़ने वाली विभक्तियाँ सात होती हैं। इन विभक्तियों के तीनों वचनों (एक, द्वि, बहु) में बनने वाले रूपों के लिए जिन विभक्ति-प्रत्ययों की कल्पना की गई है वे 'सुप्' कहलाते हैं। इनका परिचय इस प्रकार है –

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु (स् = :)	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	अम्	औट् (औ)	शस् (अस्)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस् (भिः)
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
पञ्चमी	ङस् (अस्)	भ्याम्	भ्यस् (भ्यः)
षष्ठी	ङस् (अस्)	ओस् (ओः)	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस् (ओः)	सुप् (सु)

ये प्रत्यय शब्दों के साथ जुड़कर अनेक रूप बनाते हैं।

शब्दों के विभिन्न रूपों में भेद होने के कारण 'संज्ञा' आदि शब्दों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

(क) संज्ञा शब्द (विशेषण सहित) (ख) सर्वनाम शब्द (ग) संख्यावाचक शब्द।

संज्ञा शब्दों के अन्त में 'स्वर' अथवा व्यञ्जन होने के कारण इन्हें पुनः दो वर्गों में रखा जा सकता है –

1. स्वरान्त (अजन्त)

स्वरान्त (अजन्त) अर्थात् जिन शब्दों के अन्त में अ, आ, इ, ई आदि स्वर होते हैं उन्हें स्वरान्त कहा जाता है। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है – अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त, ऋकारान्त, एकारान्त, ओकारान्त तथा औकारान्त आदि।

यथा – बालक, गुरु, कवि, नदी, लता, पितृ, गो आदि।

2. व्यञ्जनान्त (हलन्त)

जिन शब्दों के अन्त में क्, च्, ज्, त् आदि व्यञ्जन होते हैं उन्हें व्यञ्जनान्त कहा जाता है। ङ्, ञ्, म्, य्, इन व्यञ्जनों को छोड़कर प्रायः सभी व्यञ्जनों से अन्त होने वाले शब्द पाए जाते हैं। इनमें भी च्, ज्, त्, द्, ध्, न्, श्, ष्, स् और ह् व्यञ्जनों से अन्त होने वाले शब्द अधिकतर प्रयुक्त होते हैं। अतः इनकी गणना चकारान्त, जकारान्त, तकारान्त, दकारान्त, धकारान्त, नकारान्त, पकारान्त, भकारान्त, रकारान्त, वकारान्त, शकारान्त, षकारान्त, सकारान्त, हकारान्त आदि रूपों में की जाती है, यथा – जलमुच्, भूभृत्, श्रीमत्, जगत्, राजन्, दिश्, पयस् आदि।

यहाँ अकारान्त, पुल्लिङ्ग 'बालक', आकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'बालिका', अकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'फल' और हलन्त 'राजन्' शब्दों के विभिन्न विभक्तियों में रूप दिए जा रहे हैं –

1. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'बालक'

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः

चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
पञ्चमी	बालकात्	कालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालका:

वृक्ष, अध्यापक, छात्र, नर, देव आदि सभी अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होंगे।

2. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'बालिका'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिका:
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिका:
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभि:
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्य:
पञ्चमी	बालिकाया:	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्य:
षष्ठी	बालिकाया:	बालिकयो:	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयो:	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके!	हे बालिके!	हे बालिका:!

लता, बाला, विद्या आदि सभी आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होंगे।

3. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'फल'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलै:
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्य:

	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
	फले	फलयोः	फलेषु
न	हे फलम्!	हे फले!	हे फलानि!

ी – अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के तृतीया विभक्ति से सप्तमी ा तक के रूप अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूपों की भाँति ही होते हैं। अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों (मित्र, वन, अरण्य, मुख, कमल, पुष्प के रूप भी इसी प्रकार होंगे।

4. नकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'राजन्'

क्त	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	राजा	राजानौ	राजानः
	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
।	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
न	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य शब्दों के रूप **परिशिष्ट** में दिए गए हैं। अधोलिखित स्वरान्त, व्यञ्जनान्त एवं सर्वनाम शब्दों के रूप परिशिष्ट में हैं –

स्वरान्त – लता, मुनि, पति, भूपति, नदी, भानु, धेनु, मधु, पितृ, मातृ, गो, द्यौ, नौ और अक्षि।

व्यञ्जनान्त – भवत्, आत्मन्, विद्वस्, चन्द्रमस्, वाच्, गच्छत्, (शत्रन्त), पुम्, पथिन्, गिर्, अहन् और पयस्।

सर्वनाम – सर्व, यत्, तत्, एतत्, किम्, इदम् (सभी लिङ्गों में) अस्मद्, युष्मद्, अदस्, ईदृश्, कतिपय, उभ और कीदृश्।

पञ्चम अध्याय

धातुरूप (सामान्य परिचय)

जिस शब्द या शब्दांश द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध हो उसे **क्रिया** कहते हैं। इन्हें संस्कृत में **धातु** कहते हैं, उदाहरणार्थ– रामः पुस्तकं **पठति**। इस वाक्य में राम कर्ता है और उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। यहाँ 'पठति' 'पद' के द्वारा पढ़ना क्रिया का होना प्रकट होता है। यह क्रिया ही संस्कृत में धातु कहलाती है।

- संस्कृत साहित्य में विभिन्न अर्थों को बताने के लिए अनेक धातुएँ हैं।

इनका विभाजन 10 गणों में किया गया है।

(1) भ्वादिगण
(2) तुदादिगण
(3) दिवादिगण
(4) चुरादिगण
(5) अदादिगण
(6) जुहोत्यादिगण
(7) रुधादिगण
(8) स्वादिगण
(9) तनादिगण
(10) क्रयादिगण

गणों के नामकरण का आधार उस गण में आने वाली प्रथम धातु है, जैसे – 'भ्वादिगण' का आधार उसमें सर्वप्रथम आनेवाली 'भू' धातु है (भू + आदि) है। 'चुरादिगण' का आधार सर्वप्रथम आने वाली 'चुर्' धातु हैं। इसी प्रकार अन्य गणों का नामकरण भी उनके प्रथम धातु पर ही आधारित है।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक गण में तीन प्रकार की धातुएँ पाई जाती हैं – (क) परस्मैपदी (ख) आत्मनेपदी (ग) उभयपदी

परस्मैपदी धातुओं के वर्तमानकाल में ति, त: अन्ति (पठति, पठत:, पठन्ति) रूप पाया जाता है और आत्मनेपदी धातुओं में 'ते' इते अन्ते (सेवते, सेवेते, सेवन्ते)। पठ्, लिख्, गम् आदि धातुओं के अतिरिक्त कुछ धातुएं आत्मनेपदी ही होती हैं, जैसे – सेव, 'मुद', लभ् आदि। इनके अतिरिक्त कुछ धातुएँ ऐसी भी हैं जो उभयपदी हैं, जिनमें दोनों ही प्रकार के रूप पाए जाते हैं। इनमें 'कृ', 'ब्रू', 'पच्' आदि धातुएँ उल्लिखित की जा सकती हैं।

- काल के आधार पर संस्कृत व्याकरण में दस लकार पाए जाते हैं –

(1) लट्लकार	(6) लोट्लकार
(2) लिट्लकार	(7) लङ्लकार
(3) लुट्लकार	(8) लिङ्लकार (विधिलिङ् + आशीर्लिङ्)
(4) लृट्लकार	(9) लुङ्लकार
(5) लेट्लकार	(10) लृङ्लकार।

1. **लट्लकार** – वर्तमानकाल को व्यक्त करने के लिए लट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – राम: पाठं **पठति**।

   छात्र: गुरुं **सेवते**।

2. **लिट्लकार** – लिट्लकार का प्रयोग ऐसी घटना का वर्णन करने के लिए होता है जो हमारी आँखों के सामने न घटी हो और ऐतिहासिक भी हो।

   यथा – राम: रावणं **जघान**।

3. **लुट्लकार** – प्राय: होने वाली घटना को व्यक्त करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – श्व: प्रधानमंत्री रूपदेशं **गन्ता**।

4. **लृट्लकार** – भविष्यत् काल की घटनाओं को व्यक्त करने के लिए लृट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – स: लेखं **लेखिष्यति**।

5. **लेट्लकार** – अनेक कालों तथा अनेक मनोभावों को प्रकट करने वाले इस लकार का प्रयोग वेद में ही पाया जाता है। लौकिक संस्कृत में इसका अभाव है।

6. **लोट्‌लकार** – आज्ञा देने के भाव को प्रकट करने के लिए लोट्‌लकार का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – सः गृहकार्यं करोतु।

7. **लङ्‌लकार** – पूर्व घटित घटना को बताने के लिए लङ्‌लकार का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – रामः पाठम् **अपठत्**।

8. **विधिलिङ्** – 'चाहिए', 'करे' आदि भावों को प्रकट करने के लिए विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – सः लेखं **लिखेत्**।

   इसी का एक भेद आशीर्लिङ् भी है, जिसका प्रयोग आशीर्वाद देने के लिए होता है।

   यथा – त्वं चिरायुः **भूयाः**।

9. **लुङ्‌लकार** – सामान्यभूत को व्यक्त करने के लिए लुङ्‌लकार का प्रयोग किया जाता है।

   यथा – पुरा राजा नलः **अभूत्**।

10. **लृङ्‌लकार** – भाषा में कभी ऐसी स्थिति भी आती है जब किसी एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया में सफलता नहीं मिलती। वैसी स्थिति में लृङ्‌लकार का प्रयोग होता है।

    यथा – यदि वर्षा अभविष्यत् तर्हि दुर्भिक्षं **नाभविष्यत्**।

    उपर्युक्त तीनों लकारों (लङ्, लिट् और लृङ्‌लकार) का प्रयोग भूतकालिक क्रियाओं को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

परस्मैपदी क्रियाओं में लगने वाले 9 (नौ) प्रत्यय हैं जो निम्नलिखित हैं –

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पु.	तिप्	तस्	झि
मध्यम पु.	सिप्	थस्	थ
उत्तम पु.	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी क्रियाओं में भी 9 प्रत्यय होते हैं –

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इड्	वहि	महिङ्

अब छात्रों की सुविधा के लिए इन प्रत्ययों के योग से निष्पन्न रूपों का परिचय प्रचलित पाँच लकारों में दिया जा रहा है। इनकी सहायता से छात्रों को धातुरूपों को याद रखने में सहायता मिलती है।

लट्लकार (वर्तमान काल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथम पु.	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
मध्यम पु.	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उत्तम पु.	मि	वः	मः	इ	वहे	महे

लङ्लकार (भूतकाल)

प्रथम पु.	त	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त
मध्यम पु.	:	तम्	त	थाः	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पु.	अम्	आव	आम	इ	वहि	महि

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पु.	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पु.	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम पु.	स्यामि	स्यावः	स्यामः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थक)

प्रथम पु.	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
मध्यम पु.	:	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
उत्तम पु.	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै

विधिलिङ् (चाहिये के योग में)

प्रथम पु.	इत्	इताम्	इयुः	ईत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम पु.	इः	इतम्	इत	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम पु.	इयम्	इव	इम	ईय	ईवहि	ईमहि

परस्मैपदी पठ् और आत्मनेपदी सेव् धातुओं के सभी पुरुषों और वचनों में रूप इस प्रकार बनते हैं–

लट्लकार (वर्तमान काल)

प्रथम पु.	पठति	पठतः	पठन्ति	सेवते	सेवते	सेवन्ते
मध्यम पु.	पठसि	पठथः	पठथ	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पु.	पठामि	पठावः	पठामः	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ्लकार (भूतकाल)

प्रथम पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पु.	अपठः	अपठतम्	अपठथ	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

प्रथम पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यहवे
उत्तम पु.	पठिष्यमि	पठिष्यामवः	पठिष्यामः	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थक)

प्रथम पु.	पठतु	पठताम्	पठन्तु	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पु.	पठ	पठतम्	पठत	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पु.	पठानि	पठाव	पठाम	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् (चाहिये के योग में)

प्रथम पु.	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पु.	पठेः	पठेतम्	पठेत	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पु.	पठेयम्	पठेव	पठेम	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य धातुओं के पाँचों लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् और लृट्) सभी पुरुषों और वचनों के रूप परिशिष्ट में दिए गए हैं। उन धातुओं को वहाँ से पढ़ें और समझें।

षष्ठ अध्याय

उपसर्ग

धातु तथा अन्य पदों से पूर्व प्रयुक्त होकर उनके अर्थ को परिवर्तन करने वाले शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं –

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥

उपसर्गों से युक्त होने पर पद का अर्थ बदल जाता है, यथा – हार शब्द का अर्थ है – 'माला' परन्तु जब उसमें 'प्र' उपसर्ग लगता है तो उसका अर्थ होता है – मारना। इसी प्रकार 'आ' उपसर्ग लगने पर 'आहार' बनता है, जिसका अर्थ है – भोजन। इसी प्रकार यदि 'हार' शब्द में 'सम्' उपसर्ग जुड़ता है तो 'संहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ है नष्ट करना, परन्तु इसी शब्द में **वि** उपसर्ग लगने पर 'विहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है – घूमना–फिरना। इसी तरह परि उपसर्ग जुड़कर 'परिहार' शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है – सुधार करना। इस प्रकार हमने देखा कि अलग-अलग उपसर्गों के जुड़ने से शब्दों के अर्थों में परिवर्तन आ जाता है।

उपसर्ग शब्दनिर्माणम् एकस्य पदस्य वाक्यप्रयोगः

1. प्र- **प्रभवति**, प्रकर्षः, प्रयत्नः, प्रतिष्ठा	गङ्गा हिमालयात् **प्रभवति**।
2. परा- **पराजयते**, पराभवति,	सैनिकः शत्रून् **पराजयते**।
3. अप- **अपहरति**, अपकरोति,	चौरः धनम् **अपहरति**।
4. सम्- **संस्करोति**, संगच्छते,	अध्यापकः छात्रम् **संस्करोति**।

5. अनु– **अनुगच्छति**, अनुकरोति	शिष्यः गुरुम् **अनुगच्छति**।
6. अव– **अवगच्छति**, अवतरति, अवजानाति	रामः भवन्तम् **अवगच्छति**।
7. निर्– **निर्गच्छति**, निराकरोति	प्राचार्यः कार्यालयात् **निर्गच्छति**।
8. निस्– निष्कारणम्, **निस्सरति**	सर्पः बिलाद् **निस्सरति**।
9. दुस्– **दुस्त्याज्यः**, दुष्प्रयोजनम्	स्वभावः **दुस्त्याज्यः** भवति।
10. दुर– **दुर्बोध्यः**, दुर्लभः	अयं गूढविषयः **दुर्बोध्यः** अस्ति।
11. वि– **विजयते**, विहरति	धर्मः सदा **विजयते**।
12. आङ्– **आकण्ठम्**, आजीवनम्	**आकण्ठं** जलं पीतम्।
13. नि– **निगदति**, निपतति	पुत्रः पितरं **निगदति**।
14. अधि– **अधिराजते**, अधिशेते	विद्वान् सर्वत्र **अधिराजते**।
15. अति– **अतिवादः**, अत्याचारः	**अतिवादो** न कर्तव्यः।
16. सु– सुपुत्रेण, **सुशोभते**	उद्याने पुष्पाणि **सुशोभन्ते**।
17. उत्– **उड्डीयते**, उत्पतितः	पक्षिणः आकाशे **उड्डीयन्ते**।
18. अभि–अभिगच्छति, **अभ्यागतः**	**अभ्यागतः** सर्वैः सदा पूजनीयः।
19. प्रति– प्रत्युपकार, **प्रत्यवदत्**	पुत्री मातरं **प्रत्यवदत्**।
20. परि– **परित्यजामि**, परिवर्तनम्	अहं दुष्टं **परित्यजामि**।
21. उप– **उपगच्छति**, उपहरति	शिष्यः अध्ययनार्थं गुरुम् **उपगच्छति**।

22. अपि –

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. अधोलिखितेषु पदेषु उपसर्गान् धातून् च पृथक् कृत्वा लिखत –

		उपसर्ग	धातु
1.	उत्तिष्ठतु	________	________
2.	निरगच्छन्	________	________
3.	निस्सरतु	________	________
4.	संवदन्ति	________	________
5.	दुर्लभन्ते	________	________
6.	प्रत्यवदत्	________	________
7.	सुशोभावहै	________	________
8.	विशिष्यते	________	________
9.	अन्वकरोत्	________	________
10.	प्रसीदामि	________	________
11.	अवागच्छत्	________	________
12.	उपविशामः	________	________
13.	उत्थास्यामः	________	________
14.	उन्नयनम्	________	________
15.	अपाकुर्वन्	________	________
16.	विजयते	________	________
17.	परितुष्यति	________	________

प्र.2. कोष्ठकात् शुद्धपदं चित्वा रिक्तस्थाने लिखत –

1. हे प्रभो ! मयि ________________ । (प्रासीदतु / प्रसीदतु)
2. गुरुः शिष्यस्य अज्ञानम् ________________ । (उपहरति / अपहरति)

3. वानराः जनान् _____________ । (अनुकुर्वन्ति / अन्वकुर्वन्ति)
4. अहं संस्कृतम् _____________ । (अवजानामि / जानामि)
5. _____________ सत्यम् एव वदनीयम्। (आजीवनम् / आजीवनः)
6. अध्यापकः प्रश्नान् पृच्छति छात्राः _____________ । (प्रतिवदन्ति / संवदन्ति)
7. कामात् क्रोधः _____________ । (पराभवति / उद्भवति)
8. सभायाम् विद्वांसः एव _____________ । (सुशोभन्ते / सुशोभन्ति)
9. चौरः रात्रौ धनम् _____________ । (व्यहरत् / अहरत्)
10. माता पुत्रः च परस्परम् _____________ । (प्रतिवदतः / संवदतः)
11. गुरुः आश्रमात् _____________ । (प्रविशति / निर्गच्छति)
12. नागरिकाः एव स्वदेशम् _____________ । (उद्नयन्ति / उन्नयन्ति)
13. वयं चलचित्रं द्रष्टुम् अत्र _____________ । (अवागच्छाम / अगच्छाम)
14. माता पुत्रम् _____________ । (संस्करोति / संकरोति)
15. नदी पर्वतात् _____________ । (प्रवहति / उद्भवति)

प्र.3.

1. **हारः, योगः** इति शब्दाभ्याम् सह अधोलिखितान् उपसर्गान् संयोज्य पदनिर्माणं कुरुत –

   उपसर्गाः:- आ, वि, प्र, सम्

2. **'भू' हृ,** इति एताभ्याम् धातुभ्याम् प्राक् अधोलिखितान् उपसर्गान् संयोज्य पदानि रचयत –

   उपसर्गाः:- प्र, अनु, सम्

अव्यय

संस्कृत के वे शब्द जो सर्वदा एक जैसे ही रहते हैं। (जिनमें विभक्ति, वचन तथा लिङ्ग के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता है।) उन्हें **अव्यय** कहते हैं।

अव्यय		**अर्थ**
अचिरम्	–	शीघ्र ही
यावत्	–	जब तक
तावत्	–	तब तक
सहसा	–	अचानक
श्वः	–	आनेवाला कल
ह्यः	–	बीता हुआ कल
शनैः शनैः	–	धीरे-धीरे
सम्प्रति	–	इस समय
अत्र	–	यहाँ
अत्यन्तम्	–	बहुत
अग्रे	–	आगे
अथ	–	आरम्भ या इसके बाद
अलम्	–	पर्याप्त, समर्थ
अद्य	–	आज
अथवा	–	या
अधुना	–	अब
अपि	–	भी
अन्यथा	–	नहीं तो

अतः	–	इसलिए
अतीव	–	बहुत अधिक
आम्	–	हाँ
इतस्ततः	–	इधर–उधर
इदानीम्	–	इस समय
इति	–	समाप्त, ऐसा
उच्चैः	–	जोर–जोर से, ऊँचे
एव	–	ही
एकदा	–	एक बार
एवम्	–	इस प्रकार, ऐसे
किम्	–	क्या
किन्तु	–	परन्तु , लेकिन
कदा	–	कब
कुतः	–	कहाँ से
कुत्र	–	कहाँ
च	–	और
अभितः	–	दोनों ओर
परितः	–	चारों ओर
सर्वतः	–	सभी ओर
उभयतः	–	दोनों ओर
चेत्	–	यदि
चिरम्	–	देर से, देर तक
तत्र	–	वहाँ
इतः	–	इधर से, यहाँ से
ततः	–	उसके बाद, वहाँ से
तथापि	–	फिर भी
तदा	–	तब
तर्हि	–	तो
तु	–	तो
तदानीम्	–	तब
तावत्	–	तब तक
तूष्णीम्	–	चुप

दिवा	–	दिन
न	–	नहीं
नीचैः	–	नीचे
नूनम्	–	निश्चय ही
नोचेत्	–	नहीं तो
पुनः	–	फिर
प्रातः	–	सवेरे
पश्चात्	–	बाद
प्रायः	–	अक्सर, ज्यादातर
प्रभृति	–	से, लेकर
परन्तु	–	किन्तु, लेकिन
पुरा	–	पुराने समय में, पहले
सायम्	–	शाम
शीघ्रम्	–	जल्दी
श्वः	–	कल (आने वाला)
सह	–	साथ
स्वयम्	–	अपने आप
सहसा	–	अचानक
स्म	–	था, थी, थे
सर्वत्र	–	सब जगह
सदा	–	हमेशा
अथ किम्	–	और क्या
तथा	–	वैसे
परस्परम्	–	आपस में
बहिः	–	बाहर
बहुधा	–	अक्सर
बाढम्	–	हाँ
मा	–	नहीं
मुहुर्मुहुः	–	बार-बार
यत्	–	कि
यत्र	–	जहाँ
यदि	–	अगर

यद्यपि	–	अगर
यतः	–	क्योंकि
यावत्	–	जब तक
यतः	–	जहाँ से
यदा	–	जब
वा	–	अथवा
विना	–	बिना
वृथा	–	व्यर्थ
शनैः	–	धीरे
सर्वदा	–	नित्य
हि	–	क्योंकि
खलु	–	निश्चय ही
ईषत्	–	थोड़ा
क्व	–	कहाँ
जातु	–	कभी
धिक्	–	धिक्कार
नक्तम्	–	रात
प्रसह्य	–	बलात्
भूयः	–	बार-बार
नमः	–	नमस्कार, प्रणाम
पुरः / पुरस्तात् / पुरतः	–	सामने

वाक्येषु अव्ययपदानां प्रयोगान् पश्यत –

कच्छपः **शनैः शनैः** चलति।

अचिरम् गृहम् गच्छ।

अहम् **श्वः** वाराणसीं गमिष्यामि।

ह्यः मम गृहे उत्सवः आसीत्।

सहसा निर्णयः न करणीयः।

इदानीम् अहं संस्कृतं पठामि।
यद्यपि अद्य अवकाशः अस्ति तथापि अहं कार्यमुक्तः नास्मि।
अथ रामायणकथा आरभ्यते।
अत्र आगच्छ।
अहं **कुत्रापि** न गमिष्यामि।
कुक्कुरः **इतस्ततः** भ्रमति।
यत्र यत्र धूमः **तत्र-तत्र** अग्निः संभाव्यते।
अधुना गल्पं न करणीयम्।
नक्तम् दधि न भुञ्जीत।
कक्षायां **तूष्णीम्** तिष्ठ।
पुरा अशोकः राजा आसीत्।
तौ **परस्परम्** आलपतः।
अद्य प्रभृति अहं धूम्रपानं न करिष्यामि।
शीघ्रं कार्यं समापय **अन्यथा** विलम्बः भविष्यति।
वृथा कलहम् **मा** कुरु।
यदा अहम् गमिष्यामि तदा सः **अत्र** आगमिष्यति।
ईषत् हसित्वा सः तस्य उपहासं कृतवान्।
अहम् त्वाम् **भूयोभूयः** नमामि।
सः **मुहुर्मुहुः** किम् पश्यति ?

अभ्यासकार्यम्

1. **समुचितैः अव्ययैः (मंजूषातः गृहीत्वा) रिक्तस्थानानि पूरयत –**

(i) ________________ सः वनं गतवान्।
(ii) सः ________________ करोति?
(iii) गजः ________________ चलति।
(iv) सः ________________ स्वपिति।
(v) सिंहः ________________ गर्जति।
(vi) सः ________________ विजेष्यते।

(vii) परिश्रमं कुरु, ________________ अनुत्तीर्णः भविष्यसि।

(viii) गृहात् ________________ मा गच्छ।

(ix) सः ________________ माम् उद्वेजयति।

(x) कोलाहलं ________________ कुरु।

मा, बहिः, मुहुर्मुहुः, अन्यथा, एकदा, शनैः, किम्, चिरम् नूनम्, उच्चैः

2. **अधोलिखितेषु वाक्येषु अव्ययपदं चित्वा लिखत –**

(i) यावत् परीक्षाकालः नायाति तावत् परिश्रमं कुरु।

(ii) अस्माभिः सर्वदा सत्यं वक्तव्यम्।

(iii) कालः वृथा न यापनीयः।

(iv) अहं सम्प्रति गृहं गन्तुम् इच्छामि।

(v) त्वं कुतः समायातः ?

(vi) अहं श्वः ग्रामं गमिष्यामि।

(vii) तौ परस्परम् आलपतः।

(viii) अद्यप्रभृति अहं धूम्रपानं न करिष्यामि।

(ix) धनं विना जीवनं वृथा भवति।

(x) अथ रामायणकथा आरभ्यते।

3. **कोष्ठकेभ्यः शुद्धम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत् –**

(i) अहम् ________________ भ्रमणाय गमिष्यामि। (श्वः / ह्यः)

(ii) त्वम् कस्य ________________ गच्छसि? (परितः / पुरतः)

(iii) विद्यालयम् ________________ उद्यानम् अस्ति। (परितः / प्राङ्गणे)

(iv) सः यदा आगमिष्यति ________________ अहं गमिष्यामि।
(तदैव / तथैव)

(v) परिश्रमं कुरु ________________ अनुत्तीर्णः भविष्यसि।
(सर्वथा / अन्यथा)

प्रत्यय

किसी भी धातु या शब्द के पश्चात् जुड़ने वाले शब्दांशों को **प्रत्यय** कहा जाता है।

- धातुओं में जुड़ने वाले प्रत्ययों को **कृत् प्रत्यय** कहते हैं।
- संज्ञा शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्ययों को **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं।
- पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए शब्दों में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों को **स्त्री प्रत्यय** कहते हैं।

(i) कृत् प्रत्यय

- जिन प्रत्ययों को धातुओं में जोड़कर संज्ञा, विशेषण या अव्यय आदि पद बनाए जाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।

(क) **अव्यय** बनाने के लिए धातुओं में **क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्** प्रत्ययों का योग किया जाता है।

(ख) **धातु से विशेषण** बनाने के लिए **शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, यत्** आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है ।

(ग) **भूतकालिक क्रिया** के प्रयोग के लिए **क्त, क्तवतु** एवं **करना चाहिए** क्रिया के वाचक **तव्यत्, अनीयर्** और **यत्** प्रत्यय हैं।

(घ) धातु से संज्ञा बनाने हेतु **तृच् , क्तिन् , ण्वुल् , ल्युट्** आदि प्रत्ययों का योग किया जाता है।

कतिपय प्रमुख कृत् प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है –

क्त्वा प्रत्यय

- वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व किए गए कार्य में पूर्वकालिक क्रिया को व्यक्त करने के लिए धातु में क्त्वा प्रत्यय का योग किया जाता है।

यथा – मयूरः मेघं दृष्ट्वा नृत्यति। यहाँ दृष्ट्वा में **दृश्** धातु से **क्त्वा** प्रत्यय का योग किया गया है।

उदाहरणम् –

कृ + क्त्वा = **कृत्वा** = करके, कार्य **कृत्वा** गृहं गच्छ।

गम् + क्त्वा = **गत्वा** = जाकर, आपणं **गत्वा** फलं आनय।

नम् + क्त्वा = **नत्वा** = नमन करके, सरस्वतीं देवीं **नत्वा** पाठं पठ।

पा + क्त्वा = **पीत्वा** = पीकर, दुग्धं **पीत्वा** शयनं कुरु।

श्रु + क्त्वा = **श्रुत्वा** = सुनकर, **वार्ताश्रुत्वा** आगतोऽस्मि।

दृश + क्त्वा = **दृष्ट्वा** = देखकर, बहिःदृष्ट्वा आगच्छामि।

हन् + क्त्वा = **हत्वा** = मारकर, रामः रावणं **हत्वा** सीतां प्राप्नोत्।

प्रच्छ् + क्त्वा = **पृष्ट्वा** = पूछकर, गुरुं **पृष्ट्वा** आगच्छामि।

त्यज् + क्त्वा = **त्यक्त्वा** = त्यागकर, सीतां वने **त्यक्त्वा** लक्ष्मणः आगतः।

स्पृश् + क्त्वा = **स्पृष्ट्वा** = छूकर, अपवित्रो जनः माम् **स्पृष्ट्वा** गतः।

ज्ञा + क्त्वा = **ज्ञात्वा** = जानकर, परीक्षाफलं **ज्ञात्वा** सः अति प्रसन्नः अस्ति।

पठ् + क्त्वा = **पठित्वा** = पढ़कर, अहं पुस्तकं **पठित्वा** वदिष्यामि।

पत् + क्त्वा = **पतित्वा** = गिरकर, अश्वः **पतित्वा** उत्थितः।

पूज् + क्त्वा = **पूजयित्वा** = पूजकर, देवीं **पूजयित्वा** मेलापकं गमिष्यामि।

- **क्त्वा** प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

- पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में **ल्यप्** प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जहाँ पर धातु से पूर्व कोई उपसर्ग लगा होता है वहाँ **क्त्वा** के स्थान पर **ल्यप्** प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। इनके रूप में भी परिवर्तन नहीं होता है।

उदाहरणम् –

प्र + नम् + ल्यप्	= **प्रणम्य**	= प्रणाम करके।
वि + ज्ञा + ल्यप्	= **विज्ञाय**	= जानकर, वार्ता **विज्ञाय** आगच्छ।
आ + गम् + ल्यप्	= **आगत्य**	= आकर, गृहात् **आगत्य** सः पाटलिपुत्रं गतवान्।
आ + दा + ल्यप्	= **आदाय**	= लाकर, किम् **आदाय** सः समायातः।
वि + स्मृ + ल्यप्	= **विस्मृत्य**	= भूलकर, पाठं **विस्मृत्य** सः किंकर्तव्यविमूढः अभवत्।
वि + जि + ल्यप्	= **विजित्य**	= जीतकर, शत्रून् **विजित्य** राजा प्रसन्नः अभवत्।
उत् + डी + ल्यप्	= **उड्डीय**	= उड़कर, खगाः **उड्डीय** प्रसन्नाः भवन्ति।
आ + नी +ल्यप्	= **आनीय**	= लाकर, शिष्यः शुल्कम् **आनीय** गुरवे दत्तवान्।
उप + कृ + ल्यप्	= **उपकृत्य**	= उपकार करके, सज्जनाः **उपकृत्य** विस्मरन्ति।
प्र + आप् + ल्यप्	= **प्राप्य**	= प्राप्त करके, छात्रः परिक्षाफलं **प्राप्य** प्रसन्नः जातः।
प्र + दा + ल्यप्	= **प्रदाय**	= देकर, निर्धनेभ्यः धनं प्रदाय धनिकः गतः।
सं +स्पृश् +ल्यप्	= **संस्पृश्य**	= स्पर्श करके, पितुः चरणं **संस्पृश्य** सः आशीर्वादं प्राप्तवान्।
उत् + तृ + ल्यप्	= **उत्तीर्य**	= उत्तीर्ण करके, दशमकक्षाम् **उत्तीर्य** सः उच्चविद्यालये प्रवेशमलभत्।

तुमुन् (तुम्) – (निमित्तार्थक) 'के लिए' अर्थात् 'क्रिया को करने के लिए' इस अर्थ में धातु के साथ तुमुन् प्रत्यय लगता है।

- जब दो क्रिया पदों का कर्ता एक होता है तथा एक क्रिया दूसरी क्रिया का प्रयोजन या निमित्त होती है तो निमित्तार्थक क्रिया पद में **तुमुन्** प्रत्यय होता है।

यथा – सुरेशः **पठितुं** विद्यालयं गच्छति। वाक्य में पढ़ना और जाना दो क्रिया पद हैं जिनमें पढ़ना क्रिया प्रयोजन है। जिसके लिए सुरेश विद्यालय जाता है। अतः **पढ़ना/पठितुम्** में **तुमुन्** प्रत्यय है।

- समय, वेला आदि कालवाची शब्दों के साथ भी **तुमुन्** प्रत्यय होता है। **यथा** – स्नातुं वेलाऽस्ति पठितुं समयोऽस्ति।
- तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। इनका रूप भी नहीं बदलता है।

गम् + तुमुन् = **गन्तुम्** = जाने के लिए, सः गृहं **गन्तुम्** उद्यतः अस्ति।

हन् + तुमुन् = **हन्तुम्** = मारने के लिए, मृगं **हन्तुं** सिंहः समुद्यतः अस्ति।

पा + तुमुन् = **पातुम्** = पीने के लिए, जलं **पातुं** सः नदीं गतवान्।

स्ना + तुमुन् = **स्नातुम्** = स्नान के लिए, सः **स्नातुं** तरणंतालमगच्छत्।

दा + तुमुन् = **दातुम्** = देने के लिए, धानं **दातुं** कः इच्छुकः भवति।

प्रच्छ् + तुमुन् = **प्रष्टुम्** = पूछने के लिए, अर्थं **प्रष्टुं** सः गुरुं प्रति गतः।

दृश् + तुमुन् = **द्रष्टुम्** = देखने के लिए, चित्रं **द्रष्टुं** बालकः आगच्छत्।

हस् + तुमुन् = **हसितुम्** = हंसने के लिए, अहं **हसितुम्** इच्छामि।

खाद् +तुमुन् = **खादितुम** = खाने के लिए, बालकः **खादितुम्** गच्छति।

क्रीड् + तुमुन् = **क्रीडितुम्** = खेलने के लिए, शिशुः **क्रीडितुम्** इच्छति।

भाष् + तुमुन् = **भाषितुम्** = भाषण के लिए, सः **भाषितुम्** उत्थितः।

जीव् + तुमुन् = **जीवितुम्** = जीने के लिए, सर्वे **जीवितुम्** अभिलषन्ति।

कथ् + तुमुन् = **कथयितुम्** = कहने के लिए, कथां **कथयितुं** सः आगच्छत्।

- **शक्** (सकना), **इष्** (चाहना) इत्यादि धातुओं के साथ भी पूर्व क्रिया में **तुमुन् प्रत्यय** का प्रयोग होता है, जैसे – मैं पढ़ सकती हूँ/सकता हूँ या मैं पढ़ना चाहती हूँ/चाहता हूँ, इन वाक्यों में (पढ़ना और सकना) (पढ़ना और चाहना) ये दो-दो क्रियाएँ हैं अतः पढ़ना क्रिया में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है, यथा –

(i) अहम् **पठितुं शक्नोमि**
(ii) अहम **पठितुम् इच्छामि**
(iii) बालकः **तर्तुं शक्नोति**
(iv) सा **गातुं शक्नोति**
(v) त्वं किं **कर्तुं शक्नोसि**
(vi) ते चलितुं **न शक्नुवन्ति**
(vii) वयं **धावितुं न शक्नुमः**

- तुमुन् का प्रयोग करते हुए इच्छुक अर्थ वाले संज्ञा पद – गन्तुकामः, पठितुकामः, बद्धुकामः, चलितुकामः, लिखितुकामा, हसितुकामा, वक्तुकामा इत्यादि।

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. प्रत्ययं संयोज्य वियुज्य वा पदनिर्माणं कुरुत –

(i) दृश् + क्त्वा = ____________
(ii) प्रणम्य = ____________
(iii) उपविश्य = ____________
(iv) सोढुम् = ____________
(v) सह् + क्त्वा = ____________
(vi) आ + नी + ल्यप् = ____________

प्र.2. अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठके प्रदत्तधातुषु क्त्वा/ल्यप् प्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत –

यथा – सः पुस्तकम् <u>आदाय</u> (आ + दा + ल्यप्) गच्छति।
सः पुस्तकं <u>दत्त्वा</u> (दा + क्त्वा) क्रीडति।

(i) रामः कन्दुकम् ____________ (आ + नी) क्रीडति।
(ii) श्यामः कन्दुकम् ________ (नी) गच्छति।
(iii) रामः ________ (रुद्) श्यामम् अनुधावति।
(iv) श्यामः ________ (वि + हस्) कन्दुकम् ददाति।
(v) रामः कन्दुकम् ________ (प्र + आप्) पुनः प्रसन्नः भवति।

प्र.3. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितवाक्यानाम् स्थूलपदेभ्यः प्रत्ययान् वियुज्य लिखत –

यथा – बालकः गुरुं **नत्वा** गच्छति **नम् + क्त्वा**

(i) सः अत्र **आगत्य** पठति।

(ii) त्वं कुत्र **गत्वा** क्रीडसि।

(iii) बालकः **विहस्य** वदति।

(iv) त्वं पुस्तकं **क्रेतुम्** गच्छसि।

(v) छात्र **पठितुं** विद्यालयं गच्छति।

(vi) नायकः निर्देशकं **द्रष्टुं** गच्छति।

प्र.4. क्त्वा प्रत्ययस्य प्रयोगेण वाक्यानि संयोजयत –

यथा – बालिका उद्यानं गच्छति। बालिका क्रीडिष्यति।

बालिका उद्यानं गत्वा क्रीडिष्यति।

(i) अहम् विद्यालयं गच्छामि। अहं विद्यालये पठिष्यामि।

(ii) सीता पुस्तकं पठति। सा ज्ञानं प्राप्स्यति।

(iii) सः आपणं गच्छति। सः पुस्तकं क्रेष्यति।

(iv) रमेशः पुस्तकालयमगच्छत्। सः समाचारपत्रं पठति।

(v) देवदत्तः पाकशालामगच्छत्। सः भोजनं करोति।

प्र.5. तुमुन्प्रत्ययस्य योगेन वाक्यानि संयोजयत –

यथा – बालिका क्रीडिष्यति। सा उद्यानं गच्छति।

बालिका क्रीडितुं उद्यानं गच्छति

(i) अहम् पठिष्यामि। अतः पुस्तकं क्रीणामि।

(ii) बालिका परीक्षायाम् उत्तमानि अङ्कानि प्राप्स्यति। सा परिश्रमेण पठति।

(iii) निशा क्रीडिष्यति। सा आपणात् कन्दुकमानयति।

(iv) माता भोजनं पचति। सा शाकमानयत्।

(v) आचार्यः पाठयति। सः कक्षामगच्छत्।

शतृ-शानच् प्रत्यय

- एक कार्य को करते हुए जब (साथ ही साथ) अन्य कार्य भी किया जा रहा हो तो **करता हुआ/करती हुई, चलता हुआ/चलती हुई, पढ़ता हुआ/पढ़ती हुई** इत्यादि अर्थों को बताने के लिए परस्मैपदी धातुओं में **शतृ प्रत्यय तथा** आत्मनेपदी धातुओं में **शानच् प्रत्यय** का प्रयोग किया जाता है।
- **शतृ** के 'श्' और 'अ' का लोप होकर धातु में **अत्** जुड़ता है। तथा **शानच्** के श् को 'म्' आदेश और 'च' का लोप होकर धातु के साथ **मान** जुड़ता है।
- शतृ-शानच् प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरणम् –

		पु.	**स्त्री.**	**नपु.**
पठ् + शतृ (अत्)	–	पठन्	पठन्ती	पठत्
लिख् + शतृ	–	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
हस् + शतृ	–	हसन्	हसन्ती	हसत्
सेव् + शानच् (मान)	–	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
मुद् + शानच्	–	मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्
वृत् + शानच्	–	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्

- वाक्य में प्रयोग करते हुए शतृ शानच् प्रत्ययान्त शब्दों में उसी लिङ्ग, विभक्ति और वचन का प्रयोग होता है जिस लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन का विशेष्य होता है।

यथा – पिता **गच्छन्तं पुत्रं** भोजनाय कथयति।

इस वाक्य में पिता **किस प्रकार के पुत्र** को भोजन के लिए कह रहा है। इसके **उत्तर में जाते हुए पुत्र** को है। अतः **पुत्रम्** के विशेषण रूप में **गच्छत्** शब्द में भी **द्वितीया विभक्ति** का प्रयोग होकर **गच्छन्तम्** पद बना।

इसी प्रकार अन्य वाक्य भी समझे जा सकते हैं।

यथा –

(i) **गच्छन्तीभिः बालाभिः** मार्गे कपोताः दृष्टाः।

(ii) माता **सेवमानाय पुत्राय** आशीर्वादं ददाति।

(iii) **मोदमानस्य जनस्य** प्रसन्नतायाः किं कारणमस्ति?

(iv) **सः** उच्चैः **पश्यन** पतति।

(v) **चलन्ती बालिका** मार्गं पृच्छति।

(vi) **सा** कं **पश्यन्ती** गच्छति?

				पु.	**स्त्री.**	**नपुं.**
गम् + शतृ	=	गच्छत्	जाता हुआ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
दृश् + शतृ	=	पश्यत्	देखता हुआ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
दा + शतृ	=	ददत्	देता हुआ	यच्छन्	यच्छन्ती	यच्छत्
पा + शतृ	=	पिबत्	पीता हुआ	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
भू + शतृ	=	भवत्	होता हुआ	भवन्	भवन्ती	भवत्
पच् + शतृ	=	पचत्	पकाता हुआ	पचन्	पचन्ती	पचत्
प्रच्छ् + शतृ	=	पृच्छत्	पूछता हुआ	पृच्छन्	पृच्छन्ती	पृच्छत्
नी + शतृ	=	नयत्	ले जाता हुआ	नयन्	नयन्ती	नयत्
नृत् + शतृ	=	नृत्यत्	नाचता हुआ	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्
चुर् + शतृ	=	चोरयत्	चुराता हुआ	चोरयन्	चोरयन्ती	चोरयत्
गण् + शतृ	=	गणयत्	गिनता हुआ	गणयन्	गणयन्ती	गणयत्
मिल् + शतृ	=	मिलत्	मिलता हुआ	मिलन्	मिलन्ती	मिलत्
यज् + शतृ	=	यजत्	यजन करता हुआ	यजन्	यजन्ती	यजत्
पाल् + शतृ	=	पालयत्	पालन करता हुआ	पालयन्	पालयन्ती	पालयत्
गृह् + शतृ	=	गृह्णत्	ग्रहण करता हुआ	गृह्णन्	गृह्णन्ती	गृह्णत्

शानच् (आन, मान)

उदाहरणम् –

	पु.	स्त्री.	नपुं.
यज् + शानच् = यजमान, यजन करता हुआ	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
लभ् + शानच् = लभमान, प्राप्त करता हुआ	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
सह् + शानच् = सहमान, सहन करता हुआ	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
जन् + शानच् = जायमान, पैदा होता हुआ	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
शी + शानच् = शयान, सोता हुआ	शयानः	शयाना	शयानम्
वृधा् + शानच् = वर्धमान, बढ़ता हुआ	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. प्रत्ययान् संयुज्य यथानिर्दिष्टं लिखत –

पठ् + शतृ (पु.) __________

लिख् + शतृ (स्त्री.) __________

सेव् + शानच् (स्त्री.) __________

सह् + शानच् (पु.) __________

वृत् + शानच् (पु.) __________

हस् + शतृ (स्त्री.) __________

प्र.2. यथानिर्दिष्टं परिवर्तनं कृत्वा वाक्यान् पुनः लिखत –

यथा – लिखन बालकः पठति (स्त्रीलिङ्गे)

लिखन्ती बालिका पठति।

(i) क्रीडन् बालकः पतति। (स्त्रीलिङ्गे)

(ii) उपविशन् छात्रः हसति। (स्त्रीलिङ्गे)

(iii) धावन्ती बालिका क्रन्दति। (स्त्रीलिङ्गे)

(iv) सः चलन् खादति। (स्त्रीलिङ्गे)

(v) अहम् नृत्यन् न गायामि । (स्त्रीलिङ्गे)

(vi) त्वम् याचमाना न शोभसे । (पुल्लिङ्गे)

(vii) ते गच्छन्तः वार्ता कुर्वन्ति । (स्त्रीलिङ्गे)

(viii) ते धावन्त्यौ भ्रमतः । (पुल्लिङ्गे)

प्र.3. शतृप्रत्ययान्तस्य अधोलिखितशब्दस्य रूपाणि दृष्ट्वा –

उदाहरणम् – (क) **गच्छत्**

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

(i) **पठत्, लिखत्** शब्दानाम् रूपाणि लिखत –

यथा – (ख) **गच्छन्ती**

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्त्यः
द्वितीया	गच्छन्तीम्	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तीः
तृतीया	गच्छन्त्या	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभिः

चतुर्थी	गच्छन्त्यै	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
पञ्चमी	गच्छन्त्या:	गच्छन्तीभ्याम्	गच्छन्तीभ्य:
षष्ठी	गच्छन्त्या:	गच्छन्त्यो:	गच्छन्तीनाम्
सप्तमी	गच्छन्त्याम्	गच्छन्त्यो:	गच्छन्तीषु
सम्बोधन	हे गच्छन्ति	हे गच्छन्त्यौ	हे गच्छन्त्य:

(ii) **लिखन्ती, पठन्ती** शब्दानाम् रूपाणि लिखत –

प्र.4. कोष्ठके प्रदत्तशब्दानाम् उचितप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत –

(i) ________ बालिकाया: पुस्तकम् कुत्र अस्ति? (पठन्ती)

(ii) ________ शिष्याम् आचार्या किंचिद् वदति। (हसन्ती)

(iii) ________ छात्रै: हस्यते। (गच्छत्)

(iv) ________ कलिकानाम् सौन्दर्यं अपूर्वं वर्तते। (विकसन्ती)

(v) ________ बालकाय वस्त्रं दीयते। (याचत्)

प्र.5. उदाहरणमनुसृत्य शतृशानच् प्रत्ययौ प्रयुज्य वाक्यानि संयोजयत –

यथा – बालिका गच्छति/सा क्रीडति।

गच्छन्ती बालिका क्रीडति

(i) बालक: पठति। स: पाठं स्मरति।

(ii) शिशु: चलति। स: हसति।

(iii) रमा पठति। / सा लिखति।

(iv) साधु: उपदिशति। / स: ज्ञानवार्तां करोति।

(v) याचक: याचते। / स: मार्गे चलति।

भूतकालिक क्त (त) क्तवतु

- भूतकालिक क्रिया के अर्थ में धातु से क्त एवं क्तवतु प्रत्यय का योग किया जाता है।

कुछ धातुओं के क्त-क्तवतु प्रत्यययुक्त पद निम्नलिखित हैं –

उदाहरणम् –

		पु.	स्त्री.	नपुं.
गम् + क्त	=	गतः	गता	गतम्
कृ + क्त	=	कृतः	कृता	कृतम्
पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
श्रु + क्त	=	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्
क्री + क्त	=	क्रीतः	क्रीता	क्रीतम्
भक्ष + क्त	=	भक्षितः	भक्षिता	भक्षितम्
इष् + क्त	=	इष्टः	इष्टा	इष्टम्
सेव् + क्त	=	सेवितः	सेविता	सेवितम्
दृश् + क्त	=	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्
त्रस् + क्त	=	त्रस्तः	त्रस्ता	त्रस्तम्

क्तवतु प्रत्यय

उदाहरणम् –

		पु.	स्त्री.	नपुं.
गम् + क्तवतु	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
पा + क्तवतु	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
श्रु + क्तवतु	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
क्री + क्तवतु	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
भक्ष् + क्तवतु	=	भक्षितवान्	भक्षितवती	भक्षितवत्
इष् + क्तवतु	=	इष्टवान्	इष्टवती	इष्टवत्
सेव् + क्तवतु	=	सेवितवान्	सेवितवती	सेवितवत्
दृश् + क्तवतु	=	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
क्षिप् + क्तवतु	=	क्षिप्तवान्	क्षिप्तवती	क्षिप्तवत्
ग्रह् + क्तवतु	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
चिन्त् + क्तवतु	=	चिन्तितवान्	चिन्तितवती	चिन्तितवत्
चुर् + क्तवतु	=	चोरितवान्	चोरितवती	चोरितवत्
ज्ञा + क्तवतु	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्

- क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी तीनों लिङ्गों में चलते हैं।
- क्तवतु प्रत्ययों के प्रयोग का छात्रोपयोगी लाभ यह है कि वाक्य में क्रिया को पुरुषानुसार नहीं बदलना पड़ता–

यथा – रामः अगच्छत् – रामः गतवान्

रमा अगच्छत् – रमा गतवती

अहम् अगच्छम् – अहम् गतवान् / गतवती

त्वम् अगच्छः – त्वम् गतवान् / गतवती

क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में **बलवत्** स्त्रीलिङ्ग में **नदी** तथा नपुंसकलिङ्ग में **जगत्** के समान चलते हैं।

पु. – **गतवान् गन्तवन्तौ गतवन्तः**

(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

स्त्री. – **गतवती गतवत्यौ गतवत्यः**

(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

नपुं. – **गतवत् गतवती गतवन्ति**

(इत्यादिप्रकारेण सभी विभक्तियों में)

यथा –

छात्रः गतवान्। छात्रा गतवती।

छात्रौ गतवन्तौ। छात्रे गतवत्यौ।

बालाः गतवन्तः। बालिकाः गतवत्यः।

मित्रम् गतवत्।

मित्रे गतवती।

मित्राणि गतवन्ति।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में कर्ता प्रायः तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया के लिङ्ग वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।

यथा – रामेण घटः पूरितः।

रमया घटः पूरितः।

तेन पुस्तकं पठितम्

तया पुस्तकानि पठितानि

मित्रेण भोजनं कृतम्

छात्रैः कथा पठिता

आचार्यैः छात्राः पाठिताः

- क्त प्रत्यययुक्त शब्दों का प्रयोग जब भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है तब क्त प्रत्ययान्त शब्द में लिङ्ग , विभक्ति एवं वचन का प्रयोग विशेष्य के अनुसार होता है।

यथा –

छात्रः **पठितं पाठं** गृहे पुनः पुनः पठति।

छात्रः कक्षायां **पठितान् पाठान्** गृहे स्मरति।

बालः **पठितां हास्यकथां** स्मृत्वा हसति।

आचार्यः **पठितानां पाठानां** पुनरावृत्तिम् कर्तुं कथयति।

- क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं। ये पुल्लिङ्ग में **'राम'** स्त्रीलिङ्ग में **रमा** तथा नपुंसकलिङ्ग में **फलम्** के समान होते हैं।

यथा – **पु.** – पठितः पठितौ पठिताः

स्त्री. – पठिता पठिते पठिताः

नपुं – पठितम् पठिते पठितानि

- जाना, चलना इत्यादि अर्थ की धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा श्लिष्, शी, स्था, आस्, वन्, जन्, सह् इत्यादि धातुओं से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है अर्थात् इन धातुओं का वाक्य में अकर्मक प्रयोग होने पर क्त प्रत्यय का प्रयोग होते हुए भी कर्ता में प्रथमा का प्रयोग भी किया जा सकता है।

यथा –

तेन गतम् / सः गतः

तेन सुप्तम् / सः सुप्तः

सः ग्रामं प्राप्तः

सः गृहं गतः

सः वृक्षमारूढः

हरिः वैकुण्ठमधिष्ठितः।

- क्त प्रत्यययुक्त क्रिया के प्रयोग में कर्ता प्राय: तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया के लिङ्ग एवं वचन भी कर्म के अनुसार होते हैं।
- क्त प्रत्यययुक्त शब्दों का प्रयोग जब भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है तब क्त प्रत्ययान्त शब्द में लिंङ्ग, वचन एवं विभक्ति का प्रयोग विशेष्य के अनुसार होता है।

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. क्त क्तवतुप्रत्ययसंयोजनेन पदानि रचयित्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत –

(i) बालकेन ________________ (हस् + क्त)

(ii) बालकः ________________ (हस् + क्तवतु)

(iii) शिक्षकेण छात्रः पठनाय ________________ (कथ् + क्त)

(iv) शिक्षकाः छात्रान् पठनाय ________________ (कथ् + क्तवतु)

(v) पुत्री पितरम् पुस्तकम् ________________ (याच् + क्तवतु)

(vi) माता सुतायै भोजनं ________________ (दा + क्तवतु)

(vii) मम जनकेन भिक्षुकाय रूप्यकाणि ________________ (दा + क्त)

(viii) छात्रेण ऋषेः ज्ञानोपदेशः ________________ (श्रु + क्त)

प्र.2. स्तम्भयोः यथोचितं योजयत –

अ	ब
अहम् जलम्	पठितानि
सा पुस्तकम्	पचितवन्तः
त्वम् पाठम्	पीतवान् / पीतवती
मया पुस्तकानि	पठितवती
यूयम् भोजनं	लिखितवान्

प्र.3. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिक्रियाणां स्थाने क्तवतुप्रत्ययप्रयोगेण वाक्यपरिवर्तनं कुरुत –

यथा – अध्यापकः उदण्डं छात्रम् अदण्डयत्

अध्यापकः उदण्डं छात्रं दण्डितवान्।

(i) छात्रः कक्षायाम् उच्चैः अहसत्।

(ii) माता भोजनम् अपचत्।

(iii) काकः घटे पाषाणखण्डानि अक्षिपत्।

(iv) छात्राः बसयानस्य प्रतीक्षायाम् अतिष्ठन्।

(v) कन्याः उद्याने अक्रीडन्।

प्र.4. उदाहरणमनुसृत्य भूतकालिकक्रियाणां स्थाने क्तप्रत्ययप्रयोगेण वाक्यपरिवर्तनं कुरुत –

यथा – अध्यापकः छात्रम् पठनाय अकथयत्

अध्यापकेन छात्रः पठनाय कथितः

(i) वानरः मकराय जम्बूफलानि अयच्छत्।

(ii) मकरः वानरं गृहं चलितुम् अकथयत्।

(iii) नकुलः सर्पम् अमारयत्।

(iv) श्यामः लेखम् अलिखत्।

(v) रमा कथाम् अपठत्।

प्र.5. उदाहरणमनुसृत्य अशुद्धवाक्यान् शुद्धीकृत्य लिखत –

यथा – बालकेन जलं पीतवान् (i) बालकः जलं पीतवान्

(ii) बालकेन जलं पीतम्।

(i) मोहनेन पुस्तकं नीतवान्। ____________________

(ii) गीता पाठम् पठितम्। ____________________

(iii) आचार्येण शिष्यः उपदिष्टवान्। ____________________

(iv) कन्या गृहे क्रीडितम्। ____________________

(v) सः भोजनम् कृतम्। ____________________

तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय)

- 'चाहिए' या योग्य अर्थों में धातु में तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्
पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्
हस् + तव्यत्	=	हसितव्यम्
रक्ष् + तव्यत्	=	रक्षितव्यम्
जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्
दा + तव्यत्	=	दातव्यम्
कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्
चुर् + तव्यत्	=	चोरयितव्यम्
दृश् + तव्यत्	=	दृष्टव्यम्
स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्
गम + अनीयर्	=	गमनीयम्
पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्
हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्
रक्ष् + अनीयर्	=	रक्षणीयम्
जि + अनीयर्	=	जयनीयम्
दा + अनीयर्	=	दानीयम्
कृ + अनीयर्	=	करणीयम्
चुर + अनीयर्	=	चोरणीयम्
दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्
स्मर + अनीयर्	=	स्मरणीयम्
स्ना + अनीयर्	=	स्नानीयम्
श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्
लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्

- वाक्य में तव्यत् तथा अनीयर् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के योग में कर्ता तृतीयान्त तथा कर्म प्रथमान्त होता है।
- सकर्मक धातुओं से तव्यत् प्रत्यय लगने पर बने शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

  यथा – मया ग्रन्थः पठितव्यः मया पुस्तिका पठितव्या
  मया पुस्तकं पठितव्यम्
- इन प्रत्ययों में कर्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा का प्रयोग होता है तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

  यथा – बालकेन पाठः पठितव्यः बालकेन कथा पठितव्या
  बालकेन पुस्तकम् पठितव्यम्
- क्रिया के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में तथा विशेषण के रूप में इन प्रत्ययों का प्रयोग 'योग्य' के अर्थ में होता है।

यथा – छात्रेण पठितव्यम् पाठं पठितव्यम्।

इस वाक्य में 'पाठम्' से पूर्व प्रयुक्त '**पठितव्यम्**' विशेषण के रूप में है तथा पश्चात् प्रयुक्त **पठितव्यम्** क्रिया रूप में है अतः इसका अर्थ हुआ – छात्र के द्वारा पढ़ने योग्य पाठ को पढ़ा जाना चाहिए।

एवमेव श्रावणीयां कथां श्रावयितव्या।
सुनाने योग्य कहानी सुनानी चाहिए।

यत् प्रत्यय

इस प्रत्यय के तीन रूप दृष्टिगोचर होते हैं – यत्, ण्यत् तथा क्यप्। यद्यपि तीनों प्रत्ययों का 'य' ही शेष रहता है तथा तीनों एक ही अर्थ 'चाहिए' अथवा 'योग्य' के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। परन्तु इनके प्रयोग स्थल भिन्न-भिन्न होते हैं।

यत् – अजन्त धातुओं के साथ यत् प्रत्यय प्रयुक्त होता है और अधिकांशतः धातु के 'इकार' को 'ए' और 'उकार' को ओ और 'अव्' हो जाता है।

उदाहरणम् –

	पुं.	स्त्री.	नपुं.		पुं.	स्त्री.	नपुं.
(i) जि + यत् –	जेयः	जेया,	जेयम्	गै + यत् –	गेयः	गेया,	गेयम्
चि + यत् –	चेयः	चेया,	चेयम्	श्रु + यत् –	श्रव्यः	श्रव्या,	श्रव्यम्
दा + यत् –	देयः	देया,	देयम्	भू + यत् –	भव्यः	भव्या,	भव्यम्
नी + यत् –	नेयः	नेया,	नेयम्	स्था + यत् –	स्थेयः,	स्थेया,	स्थेयम्

ण्यत् – ऋकारान्त तथा हलन्त धातुओं से परे 'चाहिए' तथा 'योग्य' अर्थ को बताने के लिए ण्यत् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और ण्यत् से पूर्व ऋ की वृद्धि हो जाती है। हलन्त धातु की उपधा में यदि अ हो उसे दीर्घ हो जाता है। इनके रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उदाहरणम् –

		पु.	स्त्री.	नपुं.
स्मृ + ण्यत् (य)	=	स्मार्यः	स्मार्या	स्मार्यम्
लिख् + ण्यत् (य)	=	लेख्यः	लेख्या	लेख्यम्
पठ् + ण्यत् (य)	=	पाठ्यः	पाठ्या	पाठ्यम्
त्यज् + ण्यत् (य)	=	त्याज्यः	त्याज्या	त्याज्यम्
वच् + ण्यत् (य)	=	वाच्यः	वाच्या	वाच्यम्
कृ + ण्यत् (य)	=	कार्यः	कार्या	कार्यम्
हृ + ण्यत् (य)	=	हार्यः	हार्या	हार्यम्
सेव् + ण्यत् (य)	=	सेव्यः	सेव्या	सेव्यम्
चुर् + ण्यत् (य)	=	चौर्यः	चौर्या	चौर्यम्
ग्रह् + ण्यत् (य)	=	ग्राह्यः	ग्राह्या	ग्राह्यम्

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. कोष्ठके दत्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् संयोज्य रिक्तस्थानानि पूरयत –

(i) रामस्य चरित्रं सर्वैः ________ (अनु + कृ + अनीयर्)

(ii) बालैः कन्दुकम् ________ (क्रीड् + तव्यत्)

(iii) अस्माभिः गुरूपदेशः ______________ (श्रु + तव्यत्)

(iv) मया नौका ______________ (आ + रुह् + अनीयर्)

(v) कः अत्र आगत्य ______________ (लिख् + तव्यत्) लेखं लेखिष्यति?

प्र.2. कृ – कर्तव्य, करणीय इति उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखिताभिः धातुभिः द्वे द्वे पदे रचयत –

गम् ______________ ______________

स्मृ ______________ ______________

नी ______________ ______________

दृश् ______________ ______________

दा ______________ ______________

प्र.3. द्वे स्तम्भे यथोचितं योजयत –

अ	ब
दुग्धम्	रक्षणीयाः
पुस्तकानि	आरोहणीया
ईश्वरः	पातव्यम्
नौका	अध्येतव्याः
वृक्षाः	पठितव्यानि
कथा	स्मरणीयः
ग्रन्थाः	लेखितव्याः
लेखाः	श्रवणीया

प्र.4. यथास्थानं प्रकृतिप्रत्यययोगं विभागं वा कुरुत –

(i) पेयम्।

(ii) दा + यत्।

(iii) सेव्यम्।

(iv) कृ + ण्यत्।

(v) कर्त्तव्यः।

(vi) प्र + आप् + तव्यत्।

(vii) स्मरणीयः।

(viii) दृश् + अनीयर्।

(ix) लेखनीयम्।

(x) प्रच्छ् + तव्यत्।

प्र.5. शुद्धपदेन वाक्यपूर्तिं कुरुत –

(i) जलम् ____________ (पातव्यम्/पीतव्यम्)

(ii) पाठम् ____________ (पठितव्यम्/पठ्तव्यम्)

(iii) शत्रुः ____________ (जेतव्यः/जितव्य)

(iv) असत्यवचनम् ____________ (त्याग्यम्/त्याज्यम्)

(v) जलम् ____________ (त्याग्यम्/त्याज्यम्)

(vi) धनम् ____________ (लभ्यम्/लभियम्)

णिनि (इन्)

- कर्ता अर्थ में ग्रह् आदि धातुओं से णिनि (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

गृह् + णिनि = ग्राहिन् = ग्राही

स्था + णिनि = स्थायिन् = स्थायी

कर्तृवाचक (ण्वुल् तथा तृच्)

- कर्ता अर्थ में किसी भी धातु से ण्वुल् (वु) तथा तृच् (तृ) प्रत्ययों का योग किया जाता है। 'वु' को अक् हो जाता है। ण्वुल के लगने पर आदि धातु के स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरणम् –

पच् + ण्वुल् (अक्) = पाचकः

श्रु + ण्वुल् (अक्) = श्रावकः

पठ् + ण्वुल् (अक्) = पाठकः

नृत् + ण्वुल् (अक्) = नर्तकः

लिख् + ण्वुल् (अक्) = लेखकः

सिच् + ण्वुल् (अक्) = सेचकः

प्र + आप् + ण्वुल् (अक्) = प्रापकः

त्रस् + ण्वुल् (अक्) = त्रासकः

नी + ण्वुल् (अक्) = नायकः

गृह + ण्वुल् (अक्) = ग्राहकः

हन् + तृच् = हन्तृ = हन्ता

जि + तृच् = जेतृ	=	जेता
श्रु + तृच् = श्रोतृ	=	श्रोता
नी + तृच् = नेतृ	=	नेता
दा + तृच् = दातृ	=	दाता
कृ + तृच् = कर्तृ	=	कर्ता
कथ् + तृच् = कथयितृ	=	कथयिता
वच् + तृच = वक्तृ	=	वक्ता

क्तिन् (ति)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु के साथ क्तिन् (ति) प्रत्यय का प्रयोग होता है। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग होते हैं। इनके रूप 'मति' शब्द के रूपों की भाँति चलते हैं।

श्रु + क्तिन्	=	श्रुतिः
भी + क्तिन्	=	भीतिः
कृ + क्तिन्	=	कृतिः
भज् + क्तिन्	=	भक्तिः
दृश् + क्तिन्	=	दृष्टिः
मन् + क्तिन्	=	मतिः
बुध् + क्तिन्	=	बुद्धिः
वच् + क्तिन्	=	उक्तिः
प्र + आप् + क्तिन्	=	प्राप्तिः
स्तु + क्तिन्	=	स्तुतिः

ल्युट् (यु = अन)

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु से ल्युट् (यु = अन) प्रत्यय का योग किया जाता है। इस प्रत्यय के (यु = अन) को धातु के साथ जोड़ा जाता है।

- ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं । इनके रूप 'फल' शब्द के रूपों की तरह चलते हैं।

उदाहरणम् –

भू + ल्युट् (यु = अन)	भवनम्
पा + ल्युट् (यु = अन)	पानम्
श्रू + ल्युट् (यु = अन)	श्रवणम्
गम् + ल्युट् (यु = अन)	गमनम्
पठ् + ल्युट् (यु = अन)	पठनम्
लिख् + ल्युट् (यु = अन)	लेखनम्
दा + ल्युट् (यु = अन)	दानम्
भज् + ल्युट् (यु = अन)	भजनम्
हन् + ल्युट् (यु = अन)	हननम्
ग्रह् + ल्युट् (यु = अन)	ग्रहणम्
यज् + ल्युट् (यु = अन)	यजनम्
गण् + ल्युट् (यु = अन)	गणनम्
पाल् + ल्युट् (यु = अन)	पालनम्
सेव् + ल्युट् (यु = अन)	सेवनम्

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. उदाहरणमनुसृत्य पदेषु प्रयुक्तान् प्रकृतिप्रत्ययान् लिखत –

उदाहरणम् – पदम्	प्रकृतिः	प्रत्ययः
गतिः	गम्	क्तिन्
(i) हसनम्	________	________
(ii) पाठकः	________	________
(iii) खाद्यः	________	________

(iv) दृश्यः ______ ______

(v) मृगी ______ ______

(vi) भक्तिः ______ ______

(vii) सौभाग्यशालिन् ______ ______

(viii) गायिका ______ ______

(ix) नेता ______ ______

(x) तपस्विनी ______ ______

प्र.2. अधोलिखितप्रत्ययानां प्रयोगेण पञ्च, पञ्च पदानि रचयित्वा स्वपुस्तिकासु लिखत – तृच्, क्तिन्, ण्वुल्, ल्युट्, यत्।

प्र.3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु कः प्रत्ययः प्रयुक्तः इति कोष्ठकेभ्यः चित्वा लिखत –

(i) सज्जनानाम् **उक्तिः** पालनीया। (ल्युट् / क्तिन्)

(ii) **सेचकः** क्षेत्रं सिञ्चति। (ल्युट् / ण्वुल्)

(iii) **श्रावकः** कथां श्रावयति। (ल्युट् / ण्वुल्)

(iv) भक्तः **भक्तिं** करोति। (ण्वुल् / क्तिन्)

(v) **धनी** धनं प्राप्नोति। (णिनि / क्तिन्)

प्र.4. शुद्धरूपं चित्वा लिखत –

(i) गम् + क्तिन् – गतिः / गमतिः

(ii) दा + तृच् – दातृ / दानी

(iii) नी + ण्वुल् – नाविकः / नायकः

(iv) नृत् + ल्युट् – नर्तकः / नर्तनम्

(v) दृश् + ल्युट् – दृश्यम् / दर्शनम्

(ii) स्त्री प्रत्यय

- पुल्लिङ्ग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिङ्ग या स्त्रीवाचक शब्द बनाए जाते हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

  1. आ (टाप्, डाप्, चाप्)
  2. ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)

आ

- अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए टाप् 'आ' प्रत्यय लगाया जाता है।

अश्व + टाप् (आ)	=	अश्वा
सुत + टाप् (आ)	=	सुता
सरल + टाप् (आ)	=	सरला
प्रथम + टाप् (आ)	=	प्रथमा

- यदि पुल्लिङ्ग शब्द के अंत में अक हो तो 'आ' प्रत्यय लगने पर इक हो जाता है।

उदाहरणम् –

बालक + आ	=	बालिका
मूषक + आ	=	मूषिका
शिक्षक + आ	=	शिक्षिका
साधक + आ	=	साधिका
गायक + आ	=	गायिका
नायक + आ	=	नायिका

(ङीप् , ङीष् , ङीन्) ई

- ऋकारान्त एवं नकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग शब्द में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगाया जाता है।

उदाहरणम् –

कर्तृ + ई	=	कर्त्री
दातृ + ई	=	दात्री
धातृ + ई	=	धात्री
तपस्विन् + ई	=	तपस्विनी
गुणिन् + ई	=	गुणिनी

- अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों तथा कतिपय जातिवाचक शब्दों में भी 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाया जाता है।

उदाहरणम् –

नद + ई	=	नदी
देव + ई	=	देवी
भयंकर + ई	=	भयंकरी
गोप + ई	=	गोपी
महिष + ई	=	महिषी
शूकर + ई	=	शूकरी
ब्राह्मण + ई	=	ब्राह्मणी
मृग + ई	=	मृगी

- द्विगु समास का अन्तिम शब्द यदि अकारान्त है तो 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरणम् –

त्रिलोक + ई	=	त्रिलोकी
पंचवट + ई	=	पंचवटी

- शतृ प्रत्ययान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग में बदलने के लिए 'ई' प्रत्यय लगता है।

उदाहरणम् –

गच्छत् + ई	=	गच्छन्ती
वदत् + ई	=	वदन्ती
दर्शयत् + ई	=	दर्शयन्ती

- इसके अतिरिक्त भी 'ई' प्रत्यय के योग से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाए जाते हैं।

श्रीमत् + ई	=	श्रीमती
भवत् + ई	=	भवती
गतवत् + ई	=	गतवती

- जाया अर्थ में पुल्लिङ्ग शब्दों से (ङीष्) (ई) प्रत्यय लगाया जाता है –

उदाहरणम् –

इन्द्र + ङीष्	=	इन्द्राणी
वरुण + ङीष्	=	वरुणानी
भव + ङीष्	=	भवानी
मातुल + ङीष्	=	मातुलानी
रुद्र + ङीष्	=	रुद्राणी

- कुछ शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने के लिए आ, ई दोनों प्रत्यय लगाए जाते हैं।

उदाहरणम् –

आचार्य, आचार्या, आचार्यानी
उपाध्याय, उपाध्याया, उपाध्यायानी
क्षत्रिय, क्षत्रिया, क्षत्रियाणी

(ति)

- युवन् शब्द से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'ति' प्रत्यय लगाया जाता है।
  युवन + ति = युवतिः

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. निर्देशानुसारं लिङ्गपरिवर्तनं कुरुत –

बालक (स्त्री) ____________
जप्या (पु.) ____________
प्रथमा (पु.) ____________
साधकः (स्त्री) ____________
आचार्या (पु.) ____________
धातृ (स्त्री) ____________

(iii) तद्धित प्रत्यय

- संज्ञा, विशेषण तथा कृदन्त आदि (प्रातिपदिक) शब्दों के साथ लगकर अर्थ परिवर्तन करने वाले प्रत्ययों को **तद्धित** प्रत्यय कहते हैं।
- तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों में कारक विभक्तियाँ लगती हैं।

विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने वाले तद्धित प्रत्यय अनेक हैं। कतिपय प्रमुख तद्धित प्रत्ययों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है –

मतुप् (मत्)

'वाला' अर्थात् 'इसके पास है' इस अर्थ में स्वरान्त शब्दों से 'मतुप् प्रत्यय' का योग किया जाता है। 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है –

उदाहरणम् –

शक्ति + मतुप्	=	शक्तिमत् (**शक्तिमान्**) शक्तिवाला
श्री + मतुप्	=	श्रीमत् (**श्रीमान्**) श्रीवाला
धी + मतुप्	=	धीमत् (**धीमान्**) बुद्धिवाला
बुद्धि + मतुप्	=	बुद्धिमत् (**बुद्धिमान्**) बुद्धिवाला
मधु + मतुप्	=	मधुमत् (**मधुमान्**) मधुवाला
इक्षु + मतुप्	=	इक्षुमत् (**इक्षुमान्**) गन्नेवाला
कीर्ति + मतुप्	=	कीर्तिमत् (**कीर्तिमान्**) कीर्तिवाला

वतुप् (वत्)

- 'वाला' या 'इससे युक्त' अर्थ में अकारान्त तथा अनेक हलन्त शब्दों से 'वतुप्' (वत्) प्रत्यय होता है।
- 'शब्दान्त' या 'उपधा' में अ / आ या म् होने पर मतुप् के स्थान पर 'वतुप्' प्रत्यय लगता है।

उदाहरणम् –

धन + वतुप्	=	धनवत् (**धनवान्**)	धनवाला
बल + वतुप्	=	बलवत् (**बलवान्**)	बलवाला
रूप + वतुप्	=	रूपवत् (**रूपवान्**)	रूपवाला
विद्या + वतुप्	=	विद्यावत् (**विद्यावान्**)	विद्यावाला
गुण + वतुप्	=	गुणवत् (**गुणवान्**)	गुणवाला
लक्ष्मी + वतुप्	=	लक्ष्मीवत् (**लक्ष्मीवान्**)	लक्ष्मीवाला

- मतुप्, वतुप् प्रत्ययों से युक्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में **भवत्**, स्त्रीलिङ्ग में **नदी** तथा नपुंसकलिङ्ग में **जगत्** शब्द के समान चलते हैं।

इनि (इन्)

- 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में अकारान्त शब्दों से 'इनि' (इन्) प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरणम् –

रथ + इनि	=	रथिन् (**रथी**) रथ वाला या रथ से युक्त
दण्ड + इनि	=	दण्डिन् (**दण्डी**) दण्ड वाला या दण्ड से युक्त
बल + इनि	=	बलिन् (**बली**) बलवाला या बल से युक्त
गुण + इनि	=	गुणिन् (**गुणी**) गुणवाला या गुण से युक्त
धन + इनि	=	धनिन् (**धनी**) धनवाला या धन से युक्त

- वाक्यों में इनि प्रत्यय युक्त शब्दों का आवश्यकतानुसार शब्द रूप बना कर प्रयोग किया जाता है।

यथा –

(i) गुणी जनः शोभते। (प्रथमा, एक व.)

(ii) गुणिनः सर्वत्र पूज्यन्ते। (प्रथमा, बहु व.)

(iii) धनिनः अद्यत्वे सुखिनः। (प्रथमा, बहु व.)

(iv) बलिना पुरुषेण सर्वत्र बलस्य प्रयोगः एव क्रियते। (तृतीया, एक व.)

तरप् (तर)

- 'दो' में किसी **एक** का अतिशय प्रकट करने के लिए 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है –

उदाहरणम् –

श्रेष्ठ + तरप्	=	**श्रेष्ठतरः**	चतुर + तरप्	=	**चतुरतरः**
गुरु + तरप्	=	**गुरुत्तरः**	दीर्घ + तरप्	=	**दीर्घतरः**
लघु + तरप्	=	**लघुतरः**	सुन्दर + तरप्	=	**सुन्दरतरः**
पटु + तरप्	=	**पटुतरः**	स्थिर + तरप्	=	**स्थिरतरः**
कुशल + तरप्	=	**कुशलतरः**	तीव्र + तरप्	=	**तीव्रतरः**
उच्च + तरप्	=	**उच्चतरः**	मधुर + तरप्	=	**मधुरतरः**

यथा – रामलक्ष्मणयोः रामः **श्रेष्ठतरः** आसीत्। अश्वगजयोः अश्वः **तीव्रतरः**। मोहनसोहनयोः मोहनः **पटुतरः**।

तमप् (तम)

- 'दो' से अधिक में किसी **एक** का सर्वातिशय प्रकट करने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है –

उदाहरणम् –

उच्च + तमप्	=	**उच्चतमः**	मधुर + तमप्	=	**मधुरतमः**
श्रेष्ठ + तमप्	=	**श्रेष्ठतमः**	चतुर + तमप्	=	**चतुरतमः**
गुरु + तमप्	=	**गुरुतमः**	दीर्घ + तमप्	=	**दीर्घतमः**
लघु + तमप्	=	**लघुतमः**	स्थिर + तमप्	=	**स्थिरतमः**
पटु + तमप्	=	**पटुतमः**	सुन्दर + तमप्	=	**सुन्दरतमः**
कुशल + तमप्	=	**कुशलतमः**	तीव्र + तमप्	=	**तीव्रतमः**

मयट् (मय)

- प्रचुरता के अर्थ में मयट् (मय) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है –
- वस्तुवाचक शब्दों से (खाद्य वस्तुओं को छोड़कर) विकार अर्थ में भी मयट् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है –

उदाहरणम् –

शान्ति + मयट्	=	शान्तिमयः
आनन्द + मयट्	=	आनन्दमयः
सुख + मयट्	=	सुखमयः
तेजः + मयट्	=	तेजोमयः
मृत् + मयट्	=	मृण्मयः
स्वर्ण + मयट्	=	स्वर्णमयः
लौह + मयट्	=	लौहमयः

अण् (अ)

- अपत्य (पुत्र या पुत्री) अर्थ में शब्द से अण् प्रत्यय का योग किया जाता है। अण् प्रत्यय करने पर आदि स्वर की वृद्धि होती है।

उदाहरणम् –

वसुदेव + अण्	=	**वासुदेवः**	मनु + अण्	=	**मानवः**
वशिष्ठ + अण्	=	**वाशिष्ठः**	पुत्र + अण्	=	**पौत्रः**
विश्वमित्र + अण्	=	**वैश्वामित्रः**	कुरु + अण्	=	**कौरवः**
अश्वपति + अण्	=	**आश्वपतः**	दनु + अण्	=	**दानवः**
यदु + अण्	=	**यादवः**	पाण्डु + अण्	=	**पाण्डवः**

यथा – वासुदेवः कृष्णः पूज्यः अस्ति।

- भाव में भी अण् प्रत्यय होता है–

कुशल + अण्	=	**कौशलम्**	गुरु + अण्	=	**गौरवम्**
शिशु + अण्	=	**शैशवम्**	मृदु + अण्	=	**मार्दवम्**
लघु + अण्	=	**लाघवम्**			

यथा– कर्मसु कौशलं शोभनम् अस्ति।

ठक् (इक्)

- शब्दों से भाव अर्थ में ठक् प्रत्यय का विधान किया जाता है। ठक् को इक हो जाता है तथा शब्द के आदि स्वर की वृद्धि होती है –

उदाहरणम् –

वाच + ठक्	=	वाचिक
शरीर + ठक्	=	शारीरिक
धार्म + ठक्	=	धार्मिक
कर्म + ठक्	=	कार्मिक
नगर + ठक्	=	नागरिक
भूत + ठक्	=	भौतिक
अध्यात्म + ठक्	=	आध्यात्मिक

इतच् (इत)

- सहित या युक्त अर्थ में तारक आदि शब्दों से इतच् प्रत्यय का योग किया जाता है।

उदाहरणम् –

तारक + इतच्	=	**तारकितः**	बुभुक्षा + इतच्	=	**बुभुक्षितः**
पिपासा + इतच्	=	**पिपासितः**	कण्टक + इतच्	=	**कण्टकितः**

यथा – बुभुक्षितः किं न करोति पापम्

कुसुम + इतच्	=	**कुसुमितः**	गर्व + इतच्	=	**गर्वितः**
क्षुधा + इतच्	=	**क्षुधितः**	व्याधि + इतच्	=	**व्याधितः**
अंकुर + इतच्	=	**अंकुरितः**	उत्कष्ठा + इतच्	=	**उत्कण्ठितः**
हर्ष + इतच्	=	**हर्षितः**	तरंग + इतच्	=	**तरंगितः**

यथा – क्षुधितः बालकः इतस्ततः भ्रमति

दीक्षा + इतच् = दीक्षितः

त्व, तल्

- भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से 'त्व' और 'तल्' (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है।

उदाहरणम् –

मूर्ख + त्व	=	**मूर्खत्वम्**	मूर्ख + तल्	=	**मूर्खता**
विद्वस् + त्व	=	**विद्वत्वम्**	विद्वस् + तल्	=	**विद्वत्ता**
महत् + त्व	=	**महत्त्वम्**	महत् + तल्	=	**महत्ता**
पवित्र + त्व	=	**पवित्रत्वम्**	पवित्र + तल्	=	**पवित्रता**
पशु + त्व	=	**पशुत्वम्**	पशु + तल्	=	**पशुता**
गुरु + त्व	=	**गुरुत्वम्**	गुरु + तल्	=	**गुरुता**
लघु + त्व	=	**लघुत्वम्**	लघु + तल्	=	**लघुता**
मित्र + त्व	=	**मित्रत्वम्**	मित्र + तल्	=	**मित्रता**

- 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप फल **शब्द** की तरह चलते हैं।
- 'ता' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप **रमा** शब्द की तरह चलते हैं।

यत्

- शरीर के अवयववाची शब्दों से 'होने वाला' इस अर्थ में **यत्** प्रत्यय का योग किया जाता है –

कण्ठ + यत्	=	कण्ठे भवम्	**कण्ठ्यम्**
दन्त + यत्	=	दन्ते भवम्	**दन्त्यम्**
ओष्ठ + यत्	=	ओष्ठे भवम्	**ओष्ठ्यम्**

थाल् (था)

- किम् आदि सर्वनामों से 'प्रकार' अर्थ में 'थाल्' प्रत्यय का योग किया जाता है। थाल् का 'था' शेष रहता है।

उदाहरणम् –

यद् + थाल्	=	यथा
तद् + थाल्	=	तथा
सर्व् + थाल्	=	सर्वथा
उभय् + थाल्	=	उभयथा

तसिल्

- प्रयाग + तसिल् = प्रयागतः पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में तसिल् प्रत्यय का प्रयोग होता है। तसिल् का केवल तस् भाग बचता है। तसिल् प्रत्यय जोड़ने पर जो शब्द बनते हैं वे अव्यय होते हैं। जब कोई वस्तु या व्यक्ति किसी स्थान से अलग होते हैं तो उस स्थान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे देवदत्तः 'प्रयागात् काशीं गच्छति' वाक्य में देवदत्त, प्रयाग से अलग हो रहा है। अतः प्रयाग में पञ्चमी हुई है। प्रयागात् के स्थान पर प्रयागतः (तसिल् प्रत्ययान्त) का भी प्रयोग हो सकता है, यथा –

उदाहरणम् –

पञ्चमी पदानि	**तसिल् पदानि**	
ग्रामात्	ग्रामतः	ग्रामतः वनं दूरे नास्ति।
वृक्षात्	वृक्षतः	वृक्षतः पत्राणि पतन्ति।
वाराणस्याः	वाराणसीतः	वाराणसीतः प्रयागः पश्चिमे वर्तते।
नवदिल्ल्याः	नवदिल्लीतः	नवदिल्लीतः हरिद्वारनगरम् उत्तरे वर्तते।
तस्मात्	ततः	ततः आगच्छति।
एतस्मात्	इतः	इतः गच्छति।

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. निम्नलिखितान् प्रयोगान् धयानेन पठित्वा स्थूल पदेषु प्रकृति प्रत्यय विभागं कुरुत –

कालिदासः **कीर्तिमान्** आसीत्।
एतौ बालकौ **बलवन्तौ** स्तः।
एते जनाः **गुणवन्तः** सन्ति।
धनी सर्वत्र **समादरं** प्राप्नोति।
बलिनौ **अन्यायं** न सहतः।
गुणिनः आत्मश्लाघां न कुर्वन्ति।
पिता आकाशात् **श्रेष्ठतरः**।

धारित्री मातुः अपि **गंभीरतरा।**

कदलीफलम् आम्रात् **मधुरतमम्।**

हिमालयः भारतस्य **उच्चतमः** पर्वतः अस्ति।

प्र.2. प्रत्ययं संयोज्य पदनिर्माणं कुरुत –

(i)	श्री + मतुप्	(vii)	पटु + तमप्
(ii)	शक्ति + वतुप्	(viii)	मृत् + मयट्
(iii)	धन + वतुप्	(ix)	वसुदेव + अण्
(iv)	बल + वतुप्	(x)	धर्म + ठक्
(v)	गुरु + तल्	(xi)	मित्र + तल्
(vi)	सुन्दर + मयट्	(xii)	विद्वस् + त्व

प्र.3. कोष्ठके दत्तैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत –

(i) धर्मेन्द्रः बालाभ्याम् ____________ । (श्रेष्ठतमः / श्रेष्ठतरः)

(ii) ____________ राज्ञः दशरथस्य राजगुरुः आसीत्। (वाशिष्ठः / वशिष्ठः)

(iii) बालिकासु माया ____________ (चतुरतरा / चतुरतमा)

(iv) पाण्डवानाम् ____________ दर्शनीयम् आसीत्। (युद्ध) कौशलम्/ युद्ध कुशलम्)

(v) ____________ आभूषणम् बहुमूल्यं भवति। (स्वर्णमयः / स्वर्णमयम्)

(vi) रावणः ____________ आसीत्। (दानवः / दनुजः)

(vii) ____________ जनः औषधिं सेवते। (व्याधितः / व्याधिः)

(viii) चंद्रकला बालिकासु ____________ वदति (मधुरतरम् / मधुरतमम्)

(ix) विजयस्य टण्कणकार्यम् बालकेषु ____________ (तीव्रतरम् / तीव्रतरम्)

प्र.4. विशेष्यविशेषणे योजयत –

(i) कीर्तिमान् – मञ्जूषा

(ii) धनी – पुरुषः

(iii) उच्चतमः – कार्यम्

(iv) लौहमयी – पर्वतः

प्र.5. उदाहरणमनुसृत्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत –

यथा – धीमान्, = धी + मतुप्

मधुरतमः मृण्मयः

तीव्रतरः पिपासितः

वासुदेवः लघुता

कार्मिकः वीरतमः

दन्त्यम्

प्र.6. अधोलिखितेषु शब्देषु तसिल्प्रत्ययं संयोज्य वाक्यरचनां कुरुत –
पर्वतः, नगरम्, भूमिः, भानुः, नदी

प्र.7. कोष्ठकेषु प्रदत्तेषु शब्देषु तसिलप्रत्ययं संयोज्य रिक्तस्थानानि पूरयत –

(i) छात्रः ________ आगच्छति। (विद्यालय)

(ii) देवदत्तः ________ काशी गच्छति। (मथुरा)

(iii) वयं ________ जलं आहरामः। (नदी)

(iv) सः ________ गतः। (देवालय)

समास परिचय

'समसनम्' अर्थात् **'संक्षेपणम्'** इति समासः। इस प्रकार 'समास' शब्द का अर्थ है – संक्षेपण। अर्थात् दो या दो से अधिक पदों में प्रयुक्त विभक्तियों, समुच्चय बोधक 'च' आदि को हटाकर एक पद बनाना। यथा – गायने कुशला = गायनकुशला। इसी तरह राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः पदों में विभक्ति-लोप, सीता च रामश्च = सीतारामौ में समुच्चय बोधक 'च' का लोप हुआ है। इसी प्रकार विद्या एव धनं यस्य सः = विद्याधनः पद में कुछ पदों का लोप कर संक्षेपण क्रिया द्वारा गायनकुशला, राजपुरुषः सीतारामौ तथा विद्याधनः पद बनाए गए हैं।

कहीं-कहीं पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं भी होता है। यथा – खेचरः, युधिष्ठिरः, वनेचरः आदि। ऐसे समासों को अलुक् समास कहते है। पदों की प्रधानता के आधार पर समास के मुख्यतः चार भेद होते हैं – (1) **अव्ययीभाव** (2) **तत्पुरुष** (3) **द्वन्द्व तथा** (4) **बहुव्रीहि**। तत्पुरुष के दो उपभेद भी हैं – कर्मधारय एवं द्विगु। इस प्रकार सामान्य रूप से समास के छः भेद हैं।

अव्ययीभाव

- इस समास में पहला पद अव्यय होने के साथ ही साथ प्रधान भी होता है। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है तथा नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, यथा–

यथाशक्तिम्	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य
निर्विघ्नम्	–	विघ्नानाम् अभावः
उपगङ्गम्	–	गङ्गायाः समीपे
अनुरूपम्	–	रूपस्य योग्यम्

प्रत्येकम्	–	एकम् एकम् इति
प्रतिगृहम्	–	गृहं गृहं इति
निर्मक्षिकम्	–	मक्षिकाणाम् अभावः
उपनदम्	–	नद्याः समीपम्
प्रत्यक्षम्	–	अक्ष्णोः प्रति
परोक्षम्	–	अक्ष्णोः परे

तत्पुरुष समास

- इस समास में प्रायेण उत्तर पद की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पर दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पूर्वपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है। इसमें द्वितीया से सप्तमी तक की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।

उदाहरणम् —

शरणं गतः	=	शरणागतः	द्वितीया तत्पुरुष
शरणं प्राप्तः	=	शरणप्राप्तः	
सुखं प्राप्तः	=	सुखप्रातः	
पित्रा युक्तः	=	पितृयुक्तः	तृतीया तत्पुरुष
सर्पेण दष्टः	=	सर्पदष्टः	
शरेण बिद्धः	=	शरविद्धः	
अग्निना दग्धः	=	अग्निदग्धः	
धनेन हीनः	=	धनहीनः	
विद्यया हीनः	=	विद्याहीनः	
भूताय बलिः	=	भूतबलिः	चतुर्थी तत्पुरुष
दानाय पात्रम्	=	दानपात्रम्	
यूपाय दारु	=	यूपदारु	
स्नानाय इदम्	=	स्नानार्थम्	
तस्मै इदम्	=	तदर्थम्	

चौरात् भयम्	=	चौरभयम्	पञ्चमी तत्पुरुष
रोगात् मुक्त:	=	रोगमुक्त:	
अश्वात् पतित:	=	अश्वपतित:	
स्वर्गात् पतित:	=	स्वर्गपतित:	
सिंहात् भीत:	=	सिंहभीत:	
राज्ञ: पुरुष:	=	राजपुरुष:	षष्ठी तत्पुरुष
देवानां पति:	=	देवपति:	
नराणां पति:	=	नरपति:	
देवस्य पूजा	=	देवपूजा	
सुखस्य भोग:	=	सुखभोग:	
युद्धे निपुण:	=	युद्धनिपुण:	सप्तमी तत्पुरुष
कार्ये कुशल:	=	कार्यकुशल:	
शास्त्रे प्रवीण:	=	शास्त्रप्रवीण:	
जले मग्न:	=	जलमग्न:	
सभायां पण्डित:	=	सभापण्डित:	
न धार्मिक:	=	अधार्मिक:	नञ् तत्पुरुष
न सुखम्	=	असुखम्	
न आदि:	=	अनादि:	
न सत्यम्	=	असत्यम्	

तत्पुरुष समास के दो और भी भेद हैं —

(1) **समानाधिकरण तत्पुरुष अर्थात् कर्मधारय समास**

- इसके दोनों पदों में विभक्ति समान होती है। इसके तीन स्वरूप होते हैं —

  (क) कभी-कभी विग्रह पदों में पूर्वपद विशेषण होता है तथा उत्तर पद विशेष्य होता है।

  (ख) कभी-कभी पूर्वपद उपमान होता है और उत्तर पद उपमेय होता है।

  (ग) कभी-कभी दोनों पद विशेषण होते हैं।

उदाहरणम् –

(i) नीलम् उत्पलम्	=	नीलोत्पलम्	कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य)
विशालः वृक्ष :	=	विशालवृक्षः	
मधुरं फलम्	=	मधुरफलम्	
ज्येष्ठः पुत्रः	=	ज्येष्ठपुत्रः	
कुत्सितः राजा	=	कुराजा	
सुन्दरः पुरुषः	=	सुपुरुषः	
महान् च असौ राजा	=	महाराजः	
(ii) घन इव श्यामः	=	घनश्यामः	कर्मधारय (उपमान–उपमेय)
कमलम् इव मुखम्	=	कमलमुखम्	
चन्द्र इव मुखम्	=	चन्द्रमुखम्	
नरः सिंह इव	=	नरसिंहः	
(iii) शीतं च उष्णम्	=	शीतोष्णम्	कर्मधारय (उभयपद-विशेषण)
रक्तश्च पीतः	=	रक्तपीतः	
आदौ सुप्तः			
पश्चादुत्थितः	=	सुप्तोत्थितः	

द्विगु समास

- जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची हो तो उसे **द्विगु** समास कहते हैं।
- यह समास सामान्यतः (समूह) अर्थ में होता है। इसके विग्रह में प्रायेण षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। समस्त पद सामान्यतया नपुंसकलिङ्ग एक वचन में होता है।

उदाहरणम् –

सप्तानां दिनानां समाहारः	=	सप्तदिनम्
पञ्चानां पात्रणां समाहारः	=	पञ्चपात्रम्
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	=	त्रिभुवनम्
पञ्चानां रात्रीणां समाहारः	=	पञ्चरात्रम्
चतुर्णां युगानां समाहारः	=	चतुर्युगम्

- कभी-कभी द्विगु ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग भी हो जाता है –

उदाहरणम् –

त्रयाणां लोकानां समाहारः	=	त्रिलोकी
पञ्चानां वटानां समाहारः	=	पञ्चवटी
सप्तानां शतानां समाहारः	=	सप्तशती
अष्टानां अध्यायानां समाहारः	=	अष्टाध्यायी

द्वन्द्व समास

जिस समस्त पद में दोनों पदों की प्रधानता होती है वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसके विग्रह में 'च' का प्रयोग होता है, जैसे – लवश्च कुशश्च = लवकुशौ। यहाँ जितनी प्रधानता 'लव' की है उतनी ही प्रधानता 'कुश' की भी है। द्वन्द्व समास के तीन रूप माने गए हैं – (1) इतरेतर द्वन्द्व (2) समाहार द्वन्द्व और (3) एकशेष द्वन्द्व।

(i) **इतरेतर द्वन्द्व :** जिस समस्त पद में दोनों पदों का अर्थ अलग-अलग होता है उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। समस्त पद में संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन होता है किन्तु लिङ्ग परिवर्तन **परवर्ती** या **उत्तरवर्ती** पद के अनुसार होता है।

उदाहरणम् –

पार्वती च परमेश्वरश्च	=	पार्वतीपरमेश्वरौ
रामश्च कृष्णश्च	=	रामकृष्णौ
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	=	धर्मार्थकाममोक्षाः
सीता च रामश्च	=	सीतारामौ
पुत्रश्च कन्या च	=	पुत्रकन्ये,
राधा च कृष्णश्च	=	राधाकृष्णौ
धनञ्च जनश्च यौवनञ्च	=	धनजनयौवनानि इत्यादि।

इतरेतर द्वन्द्व समास के सन्दर्भ में विशेष बातें –

- द्वन्द्व में ईकारान्त पद को समस्तपद में पहले रखा जाता है,
  यथा– ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ।
- कम वर्णों वाले पद को पहले रखा जाता है –
  यथा – रामश्च केशवश्च = रामकेशवौ।
- ह्रस्व स्वर वाले पद को पहले रखते हैं –
  यथा – कुशश्च काशश्च = कुशकाशम्.
- श्रेष्ठ या पूज्य पदों का प्रयोग पहले होता है।
  यथा – मुनिश्च मृगश्च = मुनिमृगौ

(ii) समाहार द्वन्द्वः जहाँ अनेक वस्तुओं का संग्रह दिखाया जाता है अर्थात् समूह की प्रधानता रहती है वहाँ समाहार द्वन्द्व समास होता है।

उदाहरणम् –

(i) आहारश्च निद्राच भयं च इति एतेषां समाहार आहारनिद्राभयम्

(ii) पाणी च पादौ च = पाणिपादम्

(iii) यवाश्च चणकाश्च = यवचणकम्

(iv) पुत्रश्च पौत्रम् च = पुत्रपौत्रम्

(iii) एकशेष द्वन्द्व : जहाँ अन्य पदों का लोप होकर एक ही पद शेष बचे वहाँ एकशेष द्वन्द्व समास होता है।

यथा – बालकश्च बालकश्च बालकश्च = बालकाः।

एकशेष द्वन्द्व समास में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग पदों का समास होने पर पुल्लिङ्ग पद ही शेष रहता है–

माता च पिता च = पितरौ

दुहिता च पुत्रश्च = पुत्रौ

बहुव्रीहि समास

- जिस समास में पूर्व तथा उत्तर दोनों पद प्रधान न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।
- विग्रह करते समय इसमें 'यस्य सः' आदि लगाया जाता है।

उदाहरणम् –

महान्तौ बाहू यस्य सः	=	महाबाहुः (विष्णुः)
दश आननानि यस्य सः	=	दशाननः (रावणः)
पीतम् अम्बरम् यस्य सः	=	पीताम्बरः (कृष्णः)
चत्वारि मुखानि यस्य सः	=	चतुर्मुखः (ब्रह्मा)
चक्रं पाणौ यस्य सः	=	चक्रपाणिः (विष्णुः)
शूलं पाणौ यस्य सः	=	शूलपाणिः (शिवः)
चन्द्र इव मुखं यस्याः सा	=	चन्द्रमुखी (नारी)
पाषाणवत् हृदयं यस्य सः	=	पाषाणहृदयः (पुरुषः)
कमल इव नेत्रे यस्य सः	=	कमलनेत्रः (सुन्दर आँखों वाला)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	=	चन्द्रशेखरः (शिवः)

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानां पूर्तिः कोष्ठकात् समुचितैः समस्तपदैः कुरुत

उदाहरण – तौ **लवकुशौ** वाल्मीकेः आश्रमे पठतः। (लवकुशे, लवकुशौ)

1. ते ________ किं कार्यं कुरुतः। (पुत्रकन्ये, पुत्रकन्यौ)
2. तौ ________ गृहं गच्छतः। (पितरौ, पितरः)
3. ________ ईश्वरौ स्तः। (रामकेशवः, रामकेशवौ)

4. ________________ वने वसतः। (मुनिमृगौ, मुनिमृगाः)

5. तव ________________ कुत्र अस्ति। (पाणिपादाः, पाणिपादम्)

6. ________________ जीवनस्य उद्देश्याः सन्ति। (धर्मार्थकाममोक्षं, धर्मार्थकाममोक्षाः)

प्र.2. उदाहरणानि पठित्वा तदनुसारं विग्रहं समासनामानि च लिखत।

उदाहरणम् –

(1) पाणी च पादौ च तेषां समाहारः – पाणिपादम् (समाहार द्वन्द्व)

(2) माता च पिता च इति मातापितरौ (इतरेतर द्वन्द्व)

(3) माता च पिता च इति पितरौ (एकशेष द्वन्द्व)

1. ब्राह्मणौ ________________।
2. सुखदुःखम् ________________।
3. सीतारामौ ________________।
4. शिरोग्रीवम् ________________।
5. रामलक्ष्मणभरताः ________________।
6. अजौ ________________।
7. बालकाः ________________।

कारक और विभक्ति

- वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया की सिद्धि हो उसे कारक कहते हैं– **क्रियाजनकत्वं कारकत्वम् –**

- किसी वाक्य में क्रिया के सम्पादन में सहायता करने वाले को कारक कहते हैं। **क्रियां करोति निर्वर्तयतीति कारकम्।**

हे बालकाः ! नृपस्य पुत्रः ययातिः स्वभवने कोषात् स्वहस्तेन याचकेभ्यः धनं ददाति

1. कः ददाति?	ययातिः (कर्ता)	प्रथमा विभक्ति
2. किं ददाति?	धनं (कर्म)	द्वितीया विभक्ति
3. केन ददाति?	हस्तेन (करण)	तृतीया विभक्ति
4. केभ्यः ददाति?	याचकेभ्यः (सम्प्रदान)	चतुर्थी विभक्ति
5. कस्मात् ददाति?	कोषात् (अपादान)	पञ्चमी विभक्ति
6. कुत्र ददाति?	स्वभवने (अधिकरण)	सप्तमी विभक्ति

यहाँ नृपतिः आदि पदों का क्रिया के साथ सम्बन्ध है। अतः ये कारक हैं। संस्कृत में सम्बन्ध तथा सम्बोधन को क्रिया से सीधे सम्बद्ध न होने के कारण कारक नहीं माना जाता है। इस वाक्य में नृपस्य पद का ययातिः (कर्ता से) सम्बन्ध है किन्तु क्रिया ददाति से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह हे बालकाः! का भी क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं है।

- इस तरह कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण – ये छः कारक हैं।

1. **कर्ता**

क्रिया को स्वतन्त्र रूप से करने वाले को कर्ता कहते हैं।

यथा – गिरीशः पुस्तकं पठति।

यहाँ 'पठति' क्रिया को करने वाला 'गिरीश' है। अतएव यह कर्ता कारक है।

2. **कर्म**

क्रिया के सम्पादन में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट को कर्म कहते हैं।

यथा – गिरीशः **पुस्तकं** पठति।

यहाँ पठनक्रिया के सम्पादन में कर्ता गिरीश के लिए पुस्तक सर्वाधिक अभीष्ट है अतः कर्मकारक है।

3. **करण**

क्रिया की सिद्धि में कर्ता के प्रमुख सहायक को करण कहते हैं।

यथा – गौरी **जलेन** मुखं प्रक्षालयति। यहाँ 'प्रक्षालन' क्रिया का प्रमुख सहायक जल है। अतः 'जल' करण कारक है।

4. **सम्प्रदान कारक**

जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है वहाँ सम्प्रदान कारक होता है।

यथा – वागीशः **मित्राय** लेखनीं ददाति। इस वाक्य में मित्र को लेखनी दी जा रही है, अतः **मित्राय** सम्प्रदान कारक है। इसी तरह 'माता **बालकाय** फलम् आनयति' वाक्य में फल लाने का कार्य बालक के लिए हो रहा है, अतः '**बालकाय**' सम्प्रदान कारक है।

5. **अपादान कारक**

जिससे कोई वस्तु अलग होती है, वह अपादान कारक होता है। **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति' यहाँ पत्ते (पत्राणि) वृक्ष से अलग हो रहे हैं, अतः **वृक्षात्** अपादान कारक है।

6. **अधिकरण कारक**

क्रिया का आधार अधिकरण है–

यथा – मुनिः आसने तिष्ठति। इस वाक्य में तिष्ठति क्रिया का आधार 'आसने' है, अतः आसने अधिकरण कारक है।

7. **सम्बन्ध और सम्बोधन**

जहाँ एक व्यक्ति अथवा वस्तु का दूसरे व्यक्ति अथवा वस्तु से सम्बन्ध प्रकट हो, वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा **रामस्य** पुत्रः कुशः गच्छति। यहाँ रामस्य पद में षष्ठी विभक्ति है जिसका पुत्र कुश से सीधा सम्बन्ध है। अतः रामस्य में सम्बन्ध वाचक षष्ठी है। **सोहनस्य पुस्तकम्** अस्ति। यहाँ सोहन का पुस्तक से सीधा सम्बन्ध है, अतः सोहनस्य, में सम्बन्ध कारक है।

जिसे पुकारा जाए या सम्बोधित किया जाए उसे **सम्बोधन कारक** कहते हैं, जैसे– हे बालक! कोलाहलं मा कुरु। इस वाक्य में '**बालक**' को सम्बोधित किया गया है, अतः **सम्बोधन कारक** है। क्रिया से सीधा सम्बन्ध न रखने के कारण सम्बन्ध तथा सम्बोधन को संस्कृत में कारक नहीं माना जाता है।

विभक्ति

शब्दों में लगने वाली विभक्तियाँ सात हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी। इनके तीनों वचनों में अलग-अलग प्रत्यय लगते हैं। ये प्रत्यय 21 हैं जिन्हें सुप् नाम से जाना जाता है। सुप् प्रत्ययों के लग जाने पर ही शब्द पद बनकर प्रयोग योग्य होते हैं तथा सुबन्त कहलाते हैं।

ये विभक्तियाँ दो तरह से प्रयोग की जाती है। कारक विभक्ति के रूप में तथा उपपद विभक्ति के रूप में।

- क्रिया के आधार पर (संज्ञादि शब्दों में) लगने वाली विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं।
- पदों के आधार पर लगने वाली विभक्ति को उपपद विभक्ति कहते हैं।

प्रथमा विभक्ति (कर्ता)

- कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति लगती है।

  यथा – मोहनः दुग्धं पिबति। यहाँ दूध पीने की क्रिया को करने वाला मोहन है। अतः **मोहनः** में प्रथमा विभक्ति है। यथा– **रामः** पुस्तकं पठति। इस वाक्य में पुस्तक पठन की क्रिया को करने वाला **राम** है जो प्रधान होने के कारण कर्ता है।

- सोहनेन **ग्रन्थः** पठ्यते। यह वाक्य कर्मवाच्य है जिसमें कर्म (ग्रन्थ का पढ़ना) प्रधान है, अतः ग्रन्थः में प्रथमा विभक्ति हुई।

- किसी शब्द के अर्थ, लिङ्ग एवं परिमाण को प्रकट करने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है –

  यथा – मोहनः, पुरुषः, लघुः, लता।

- इति के योग में प्रथमा विभक्ति होती है –

  यथा – वयं इमं कालिदास इति नाम्ना जानीमः।

द्वितीया विभक्ति

- वाक्य में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है।

  वैष्णवी **चित्रं** पश्यति, वाक्य में वैष्णवी को चित्र देखना सर्वाधिक अभीष्ट है, अतः चित्र में द्वितीया विभक्ति है। इसी प्रकार बालः **मोदकं** वाञ्छति। यहाँ पर बालक को मोदक अभीष्ट है, अतः वह कर्मसंज्ञक है।

- कर्तृवाच्य के वाक्यों के कर्म में द्वितीया विभक्ति लगती है –

  यथा – "वैष्णवी **चित्रं** रचयति", यहाँ चित्र की रचना करना ही कर्ता का कर्म है, अतः चित्र में द्वितीया विभक्ति है।

- अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपरि, अधः के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) **ग्रामं अभितः** वृक्षाः सन्ति।

(ii) **नगरं परितः** मार्गाः सन्ति।

(iii) **विद्यालयं** समया उद्यानम् अस्ति।

(iv) **नदीं निकषा** शीतलः समीरः बहति।

(v) हा! **बालघातिनम्**।

(vi) अहं **मित्रं प्रति** किमपि न कथयिष्यामि।

(vii) **मार्गम्** उभयतः वृक्षाः सन्ति।

(viii) **आश्रमं** सर्वतः वनानि सन्ति।

(ix) धिङ् **मूर्खम्**।

(x) मम **गृहं** उपर्युपरि वायुयानं गच्छति।

(xi) **भूमिं** अधः जन्तवः सन्ति।

(xii) विना (बिना) - पुत्रं **विना** माता दुःखिता अभवत्।

(xiii) अन्तरा (बिना) - **परिश्रमं अन्तरा** सुखं नास्ति।

(xiv) अन्तरेण (बिना)- **हास्यं अन्तरेण** जीवनं निरर्थकम्।

- अधि उपसर्ग पूर्वक शीङ् स्था, आस्, वस् धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

(i) राजकुमारः **पर्यङ्कम् अधिशेते**।

(ii) विष्णुः **वैकुण्ठम् अधितिष्ठति**।

(iii) प्राचार्यः **उच्चासनम् अध्यास्ते**।

(iv) मुनिः **वनम् अधिवसति**।

● व्यवधान रहित कालवाची एवं मार्गवाची शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है –

(i) छात्रः **द्वादशवर्षाणि** अपठत्।
(ii) छात्रः **मासं** पुस्तकम् अपठत्।
(iii) मथुरानगरम् इतः **क्रोशं** वर्तते।
(iv) विद्यालयात् **क्रोशद्वयं** पर्वतः वर्तते।

● निम्नलिखित के योग में द्वितीया विभक्ति होती है –

सेव (सेवा करना)	–	पुत्रः **पितरं** सेवते।
आ + रुह् (चढ़ना)	–	बालकः **वृक्षम्** आरोहति।
(अनु) (पीछे)	–	पुत्रः **पितरम्** अनुगच्छति।
निन्द् (निन्दा करना)	–	दुष्टः **सज्जनं** निन्दति।
रक्ष् (रक्षा करना)	–	रक्षकाः **ग्रामं** रक्षन्ति।
गम् (जाना)	–	बालिकाः **नगरं** गच्छन्ति।
दुह् (दुहना)	–	राधा **गां** पयः दोग्धि।
याच् (मागना)	–	पुत्री **मातरं** धनं याचति।
पच् (पकाना)	–	सः **तण्डुलान् ओदनं** पचति।
दण्ड् (दण्ड देना)	–	राजा **चौरं शतं** दण्डयति।
प्रच्छ् (पूछना)	–	शिष्यः **गुरुं प्रश्नं** पृच्छति।
नी (ले जाना)	–	कृषकः **अजां ग्रामं** नयति।
चि (चुनना)	–	मालाकारः **पादपं पुष्पाणि** चिनोति।
ब्रू (बोलना)	–	गुरुः **शिष्यं धर्मं** वदति (ब्रूते)।
शास् (शिक्षा देना)	–	गुरुः **शिष्यं** शास्ति।
जि (जीतना)	–	पाण्डवाः **कौरवान्** अजयन्।
मथ् (मथना)	–	गोपी **दधि नवनीतं** मथ्नाति।
मुष् (चुराना)	–	चौरः **धनं** मुष्णाति।

दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रूध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह् ये धातुएँ द्विकर्मक होती हैं। इनके दोनों ही कर्मों में द्वितीया विभक्ति होती है। उपर्युक्त उदाहरणों में अधिकांश में दो कर्मों का प्रयोग किया गया है। कुछ में (जि, शास्, मुष्) एक ही कर्म का प्रयोग किया गया है। पर यदि वहाँ दूसरे कर्म का प्रयोग होगा तो भी दोनों में द्वितीया विभक्ति ही लगेगी।

तृतीया विभक्ति

- जिसकी सहायता से कार्य किया जाता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। **रचना कलमेन पत्रं लिखति**। वाक्य में पत्र का लेखन कलम की सहायता से किया जा रहा है, अतः पत्र लेखन में सहायक होने के कारण **कलम** में तृतीया विभक्ति है। राम: रावणं **बाणेन** हतवान्। इस वाक्य में रावण को मारने में **बाण** प्रमुख साधन है। अत: बाणेन में तृतीया विभक्ति है।
- अधोलिखित शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है —

(i)	सह (साथ)	–	सोहन: रामेण सह गच्छति।
	सार्धम् (साथ)	–	गोपाल: **रामपालेन** सार्धम् क्रीडति।
	सदृशं (समान)	–	सीताया: मुखं **चन्द्रेण** सदृशम् अस्ति।
	समम् (साथ)	–	**भोजनेन समम्** जलं पिब।
	सम: (समान)	–	भोज: पराक्रमे **विक्रमेण** सम: आसीत्।
	अलम् (बस)	–	**अलं विवादेन**।
	विना (बिना)	–	**रामेण विना** सीता दु:खिता अभवत्।

- जिस अङ्ग में कोई विकार प्रदर्शित करना हो, उस अङ्गवाची शब्द में तृतीया विभक्ति होती है —
  (i) देवदत्त: **नेत्रेण काण**: अस्ति।
  (ii) अश्व: **पादेन खञ्ज**: अस्ति।
- फल प्राप्ति या कार्य की पूर्णता के अर्थ में समय की निरन्तरता का बोध कराने वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है —
  (i) राम: **सप्ताहेन** पुस्तकं समाप्तवान्।
  (ii) बाल: **सप्तभि: दिवसै**: नीरोग: जात:।

- पृथक्, विना तथा नाना के योग में द्वितीया, तृतीया या पञ्चमी विभक्तियों में से कोई भी एक लगती है।

  (i) **जलं जलेन जलात्** वा विना न कोऽपि जीवितुं शक्नोति।

  (ii) **ईश्वरम्, ईश्वरेण, ईश्वरात्** वा पृथक् न कोऽपि अस्मान् रक्षितुं समर्थः।

  (iii) **विद्यां, विद्यया, विद्यायाः** वा विना न नाना सुखम्।

चतुर्थी विभक्ति

- सम्प्रदान कारक के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
- 'दा' धातु के योग में जिसे दिया जा रहा है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। **यथा –**
- पिता **पुत्राय** पुस्तकं यच्छति।
- राजा **भिक्षुकाय** वस्त्रं ददाति।
- अधोलिखित शब्दों या धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है –

रुच् (अच्छा लगना)	–	**बालकाय** मोदकं रोचते।
क्रुध् (क्रोध करना)	–	स्वामी **सेवकाय** क्रुध्यति।
कुप् (क्रोध करना)	–	माता **पुत्राय** कुप्यति।
द्रुह् (द्रोह करना)	–	मन्दमतिः छात्रः **योग्याय छात्राय** द्रुह्यति।
स्पृह् (चाहना)	–	**आभूषणेभ्यः** स्पृहयति नारी।
ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना)	–	दुर्योधनः **अर्जुनाय** ईर्ष्यति।
असूय् (निन्दा करना)	–	धनहीनः **धनिकाय** असूयति।
नमः (नमस्कार)	–	**गुरवे** नमः।
स्वस्ति (कल्याण हो)	–	स्वस्ति **प्राणिभ्यः**।
स्वधा (पितरों को जल देना आदि)	–	**पितृभ्यः** स्वधा।
नि + विद् (निवेदन करना)	–	सः **गुरवे** निवेदयति।

पञ्चमी विभक्ति

- अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
- जिससे नियम पूर्वक पढ़ा जाए उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है – अहं **गुरोः** संस्कृतं पठामि।
- जहाँ से कोई वस्तु उत्पन्न होती है उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है – (क) गङ्गा **हिमालयात्** प्रभवति। (ख) **बीजात्** जायते वृक्षः।
- जहाँ से कोई व्यक्ति या वस्तु अलग होती है वहाँ पञ्चमी विभक्ति होती है –

  (क) मोहनः **विद्यालयात्** आगच्छति। (ख) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति।
- भी, त्रा तथा त्रस् धातुओं के योग में (भय, रक्षा आदि के हेतु में) पञ्चमी विभक्ति होती है –

  (क) रामः **पापात्** बिभेति। (ख) रक्षकः **चौरात्** त्रायते। (ग) गोकुलः **दुर्जनात्** त्रसति।
- ऋते (विना) **ईश्वरात्** ऋते न कोऽपि मम रक्षकः।
- प्रभृति (से लेकर, शुरू करके) **ततः** प्रभृति सः नित्यं विद्यालयं गच्छति।
- पृथक् (अलग) **ईश्वरात्** पृथक् नास्ति कोऽपि रक्षकः।
- दूरम् (दूर) प्राथमिकविद्यालयः **ग्रामात्** दूरम् अस्ति।
- बहिः (बाहर) मूषकः **बिलात्** बहिः आगच्छत्।
- आरभ्य (आरम्भ करके) **सोमवासरात्** आरभ्य वृष्टिः जायते।
- आरात् (निकट) **ग्रामात्** आरात् नदी अस्ति।
- अनन्तरम् (बाद) त्वम् **पठनात्** अनन्तरं क्रीडाक्षेत्रं गच्छ।
- प्रमाद (उपेक्षा, आलस्य) **स्वाध्यायात्** मा प्रमदः।
- अन्य (दूसरा) **ईश्वरात्** अन्यः कोऽस्ति पालकः नास्ति?
- पूर्वं (पहले) **विद्यालयगमनात्पूर्वं** गृहकार्यं कुरु।
- बहिः (बाहर) मूषकः **बिलात्** बहिः आगच्छत्।
- प्राक्– **सोमवासरात्** प्राक् रविवासरः भवति।

षष्ठी विभक्ति

- सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है –

  (क) **रामस्य** पुस्तकम् (ख) **कृष्णस्य** ग्रामः (ग) **मृत्तिकायाः** घटः

  निम्नलिखित शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है –

- कृते (लिए) — **बालकस्य** कृते जलम् आनय।
- हेतुः (कारण) — **कस्य हेतोः** अयम् उत्सवः?
- समक्ष (सामने) — **गुरोः** समक्षम् असत्यं मा वद।
- मध्ये (बीच में) — **हंसानां** मध्ये बकः न शोभते।
- अन्तः (अन्दर) — अतिथिः **गृहस्य** अन्तः प्राविशत्।
- दूरं (दूर) — किं दूरं **व्यवसायिनाम्**।
- अनादर (अनादर) — **कस्यापि** अनादरम् मा कुरु।
- (तसिल) तस् प्रत्ययान्त पदों के साथ **ग्रामस्य** पूर्वतः नदी वहति।
- अनेक में एक का निश्चय करने में षष्ठी एवं सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं –

  सोहनः **वीराणां** / **वीरेषु** वा महावीरः अस्ति।

- **कवीनां** / **कविषु** वा **कालिदासः** श्रेष्ठः।
- अधः (नीचे) — **वृक्षस्य** अधः श्रमिकः शेते।
- उपरि (ऊपर) — **भवनस्य** उपरि पक्षिणः सन्ति।
- पुरः / पुरस्तात् (सामने) **गृहस्य** पुरः / पुरस्तात् निम्बवृक्षः अस्ति।

सप्तमी विभक्ति

- अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है –

  (क) **वृक्षे** फलानि सन्ति (ख) सिंहः **वने** वसति

- जिसके समस्त अवयवों में कोई वस्तु व्याप्त हो वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है – **तिलेषु** तैलं विद्यते।
- जो कर्ता की इच्छा में विद्यमान हो, वहाँ सप्तमी विभक्ति होती है – रामस्य **पठने** अनुरागः अस्ति।
- जहाँ एक क्रिया के अनन्तर दूसरी क्रिया का होना पाया जाए वहाँ सप्तमी विभक्ति होती –

  (क) **सूर्ये** अस्तं गते पक्षिणः नीडं गताः। (ख) **रामे** वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत्। (ग) **रुदति बालके** पिता कार्यालयं गतः।
- समूह में किसी एक की श्रेष्ठता के निर्धारण में सप्तमी / षष्ठी दोनों विभक्तियों का प्रयोग होता है।

  (क) **बालकेषु** बालकानां वा रमेशः श्रेष्ठः।

  (ख) **पक्षिषु** पक्षिणां वा काकः चतुरः।

  (ग) **वीरेषु** वीराणां वा राणाप्रतापः श्रेष्ठः।

  (घ) **पशुषु** पशूनां वा सिंहो राजा भवति।

  (ङ) **धावत्सु** धावतां वा कपिलः श्रेष्ठः।

  निमित्त (कारण) **चर्मणि** मृगं हन्ति
  प्रवीणः (कुशल) **वीणायां** प्रवीणः
  चतुरः (चतुर) रमा **वार्तालापे** चतुरा

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. कोष्ठकेषु मूलशब्दाः प्रदत्ताः। तेषु उचितविभक्तीः योजयित्वा रिक्तस्थानानानि पूरयत –

1. बालकाः ____________ पृच्छन्ति। (अम्बा)
2. नास्ति ____________ समः शत्रुः। (क्रोध)
3. ____________ भीतः बालकः क्रन्दति। (चौर)
4. शिष्याः ____________ विद्यां गृह्णन्ति। (गुरु)
5. अहं ____________ प्राक् आगमिष्यामि। (अध्यापक)
6. अस्माकम् बालिकाः ____________ कुशलाः सन्ति। (गायन)
7. माता ____________ स्निह्यति। (शिशु)

8. ________ क्रोध: जायते। (काम)
9. ________ नम:। (सरस्वती)
10. अलम् ________। (विवाद)
11. भिक्षुक: ________ याचते। (भिक्षा)
12. धिक् देशस्य ________। (शत्रु)
13. वीर: ________ न विरमति। (धर्मयुद्ध))
14. दुर्योधन: ________ जुगुप्सति स्म। (पाण्डव)
15. ________ अर्जुन: श्रेष्ठ: धनुर्धर:। (भ्रातृ)
16. पितरौ ________ सर्वस्वं यच्छत:। (अस्मद्)
17. किम् ________ एतत् गीतं रोचते? (युष्मद्)
18. ________ परित: वायुमण्डलम् अस्ति। (पृथ्वी)
19. ________ बहि: छात्रा: कोलाहलं कुर्वन्ति? (कक्षा)
20. अहम् ________ पूर्वं ________ वन्दे। (शयन, ईश्वर)
21. परिश्रमिण: ________ स्पृहयन्ति। (सफलता)
22. वाल्मीकि: ________ रचयिता? (रामायण, महाभारत)
23. ________ विभाति सर:। (पंकज)

प्र.2. कोष्ठकेभ्य: शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत –

1. ________ सह सीता वनम् अगच्छत्। (रामस्य/रामेण)
2. माता ________ स्निह्यति। (माम् / मयि)
3. ________ मोदकं रोचते। (मोहनम् / मोहनाय)
4. स: ________ धनं ददाति। (रमेशम् / रमेशाय)
5. ________ पत्राणि पतन्ति। (वृक्षेण / वृक्षात्)
6. अध्यापिका ________ पुस्तकं यच्छति। (सुलेखाम् / सुलेखायै)
9. ________ परित: वृक्षा: सन्ति। (विद्यालयम् / विद्यालयस्य)
10. ________ नम:। (गुरवे / गुरुम्)

प्र.3. अधोलिखितेषु शब्देषु उचितविभक्तिप्रयोगं कृत्वा वाक्यरचनां कुरुत –

1.	समम्	6.	बहि:
2.	धिक्	7.	प्रवीण:
3.	उभयत:	8.	अलम्
4.	विना	9.	विभेति
5.	अन्ध:	10.	श्रेष्ठ:

प्र.4. 'क' स्तम्भे शब्दाः दत्ताः सन्ति, 'ख' स्तम्भे च विभक्तयः। कस्य योगे का विभक्तिः प्रयुज्यते?

	'क'			'ख'
1.	'रुच्' धातु योगे	–	(क)	तृतीया
2.	'सह' शब्द योगे	–	(ख)	चतुर्थी
3.	'नम:' शब्द योगे	–	(ग)	पञ्चमी
4.	'भी' 'त्रा' धातु योगे	–	(घ)	चतुर्थी
5.	'दा' धातु योगे	–	(ङ)	प्रथमा
6.	कर्तृवाच्यस्य कर्तरि	–	(च)	तृतीया
7.	कर्मवाच्यस्य कर्तरि	–	(छ)	चतुर्थी
8.	'विना' योगे	–	(ज)	तृतीया
9.	यस्मिन् अङ्गेविकार: भवति तस्मिन्	–	(झ)	द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी
10.	कर्मवाच्यस्य कर्मणि	–	(ञ)	प्रथमा

प्र.5. 'स्थूलपदानां' स्थाने शुद्धपदं लिखत –

1. **अध्यापिकाया:** परित: छात्र: सन्ति।
2. छात्र: **आचार्यात्** प्रश्नम् पृच्छति।
3. सीता **लेखन्या:** लेखं लिखति।
4. गोपाल: **शिवस्य** सह वार्तां करोति।
5. चौरा: **आरक्षिणा** विभ्यति।
6. **महापुरुषम्** नम:।
7. **त्वाम्** किम् रोचते?
8. **कवये** कालिदास: श्रेष्ठ:।
9. **सा** गृहकर्मण: निपुण:।
10. अहम् **रेलयानात्** कालिकातां गमिष्यामि।

वाच्य परिवर्तन

अभिव्यक्ति या कथन के प्रकटीकरण की विधा को वाच्य कहते हैं। संस्कृत में वाच्य तीन तरह के होते हैं –

(i) **कर्तृवाच्य** – इस वाच्य में कर्ता प्रधान होता है तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है। इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

यथा – रामः गृहम् गच्छति।

इस वाक्य में रामः कर्ता तथा गृहम् कर्म है। इसकी क्रिया गच्छति कर्ता 'राम' के अनुसार एक वचन की है।

बालिका पाठम् पठितवती।

इस वाक्य में 'बालिका' कर्ता तथा 'पाठम्' कर्म तथा पठितवती क्रिया है।

सैनिकः देशं रक्षति।

इस वाक्य में सैनिकः **कर्ता**, **देशम्** कर्म तथा **रक्षति** क्रिया है।

(ii) **कर्मवाच्य** – कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है अतः कर्म में प्रथमा तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यहाँ क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार होता है। जिस लिङ्ग, पुरुष तथा वचन में कर्म होता है, उसी लिङ्ग, पुरुष तथा वचन में क्रिया का प्रयोग होता है।

यथा – (i) रामेण गृहम् गम्यते।

(ii) विद्यार्थिना पाठः पठ्यते।

(iii) मया चित्रे दृश्येते।

इन वाक्यों में क्रमशः गृहम् पाठः तथा चित्रे कर्म हैं। अतः प्रथम दो वाक्यों में कर्म के एकवचन के अनुसार क्रिया भी एकवचन में तथा तीसरे में चित्रे में द्विवचन के कारण क्रिया भी द्विवचन में प्रयुक्त है।

(iii) भाववाच्य – भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। भाववाच्य में क्रिया का अर्थ या भाव ही प्रधान होता है, क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। भले ही कर्ता एकवचन में हो या बहुवचन में। [यथा- मया / त्वया / युवाभ्याम् / आवाभ्यां / अस्माभिः/ तैः] सुप्यते / आस्यते।

उपर्युक्त उदाहरण में क्रिया केवल भाव को प्रकट कर रही है, अतः क्रिया एकवचन में ही प्रयुक्त है।

वाच्य परिवर्तन के नियम –

- कर्तृवाच्य में वर्तमानकाल की क्रियाओं को यदि कर्मवाच्य में परिवर्तित किया जाता है तो क्रियाओं में इस प्रकार परिवर्तन होता है –

उदाहरणम् –

कर्तृवाच्य की क्रिया	–	कर्मवाच्य / भाववाच्य की क्रिया
पठति	–	पठ्यते
लिखति	–	लिख्यते
खादति	–	खाद्यते
भवति	–	भूयते
धावति	–	धाव्यते
हसति	–	हस्यते
करोति	–	क्रियते
नयति	–	नीयते
गच्छति	–	गम्यते
उत्पतति	–	उत्पत्यते
रोदिति	–	रुद्यते

(iv) भूतकाल की क्रियाओं में कर्तृवाच्य में जहाँ क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग होता है, वहाँ कर्म-वाच्य में 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग होता है – साथ-ही-साथ कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

यथा – स: फलानि खादितवान्। (कर्तृवाच्य)

तेन फलानि खादितानि। (कर्मवाच्य)

अहम् ग्रन्थान् पठितवान्। (कर्तृवाच्य)

मया ग्रन्था: पठिता:। (कर्मवाच्य)

वयम् गुरुम् पूजितवन्त:। (कर्तृवाच्य)
अस्माभि: गुरु: पूजित:। (कर्मवाच्य)

अभ्यासकार्यम्

प्र.1. उदाहरणमनुसृत्य यथानिर्दिष्टं वाच्यपरिवर्तनं कुरुत –

यथा –

राम: गृहम् गच्छति।	कर्तृवाच्य
रामेण गृहम् गम्यते।	कर्मवाच्य
कमला पायसम् पक्ववती।	कर्तृवाच्य
कमलया पायसम् पक्वम्।	कर्मवाच्य
छात्रा: हसन्ति।	कर्तृवाच्य
छात्रै: हस्यते।	भाववाच्य

(i) अहम् कार्यम् कृतवान्। (कर्म वा.)

(ii) त्वम् पुस्तकम् पठितवान्। (कर्म वा.)

(iii) स: गायति। (भाव वा.)

(iv) युवाम् सुलेखं लिखितवन्तौ। (कर्म वा.)

(v) ता: रुदन्ति। (भाव वा.)

(vi) मोहन: कन्दुकम् क्रीडति। (कर्म वा.)

(vii) छात्रा: दुग्धं पिबन्ति। (कर्म वा.)

(viii) छात्र: हसति। (भाव वा.)

(ix) मम भ्राता उद्याने भ्रमति। (भाव वा.)

(x) सैनिक: युद्धक्षेत्रं गच्छति। (कर्म वा.)

प्र.2. उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत –

यथा – **राजेन्द्र** : पाटलिपुत्रम् गच्छति।
राजेन्द्रेण पाटलिपुत्रम् गम्यते।

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
(i) सः रोटिकां खादति	तेन रोटिका खाद्यते।
(ii) छात्रः ग्रन्थं पठति	________ ग्रन्थः पठ्यते।
(iii) शकुन्तला राजभवनं गच्छति	________ राजभवनं गम्यते।
(iv) दुष्यन्तः आखेटं करोति	________ आखेटः क्रियते।
(v) गायकः गीतं गायति	________ गीतं गीयते।

प्र.3. अधोलिखितवाक्यानां कर्मपदे परिवर्तनं कुरुत –

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
(i) अहम् **देवम्** पूजयामि	मया ________ पूज्यते।
(ii) बालकः **फलम्** खादितवान्	बालकेन ________ खादितम्।
(iii) त्वम् **गृहम्** गच्छसि	त्वया ________ गम्यते।
(iv) सः **साधुम्** कथितवान्	तेन ________ कथितः।
(v) यूयम् **कथां** श्रुतवन्तः	युष्माभिः ________ श्रुता।

प्र.4. अधोलिखितवाक्यानां क्रियापदे परिवर्तन कुरुत –

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
(i) सः जलम् **पिबति**	तेन जलम् ________
(ii) कपोतः आकाशे **उत्पतति**	कपोतेन आकाशे ________
(iii) सुनीता आभूषणं **धारयति**	सुनीतया आभूषणं ________
(iv) नेता भाषणं **करोति**	नेत्रा भाषणं ________
(v) सः कथां **श्रुतवान्**	तेन कथा ________

(vi) श्रमिकः कार्यं **कृतवान्** श्रमिकेण कार्यं ________

(vii) पुत्रः मातरं **पूजितवान्**। पुत्रेण माता ________

(viii) त्वम् आचार्यम् **आद्रितवान्** त्वया आचार्यः ________

प्र.5. अधोलिखितानां कथनानाम् उत्तरे त्रयः विकल्पाः दत्ताः। शुद्धविकल्पस्य समक्षे इति (✓) कुरुत –

(क) कर्तृवाच्यस्य कर्तरि विभक्तिः भवति –
(i) प्रथमा (ii) द्वितीया (iii) तृतीया

(ख) कर्तृवाच्यस्य कर्मणि विभक्तिः भवति –
(i) द्वितीया (ii) तृतीया (iii) चतुर्थी

(ग) कर्मवाच्यस्य कर्तरि विभक्तिः भवति –
(i) प्रथमा (ii) द्वितीया (iii) तृतीया

(घ) कर्मवाच्यस्य कर्मणि विभक्तिः भवति –
(i) प्रथमा (ii) द्वितीया (iii) तृतीया

(ङ) भाववाच्यस्य कर्तरि विभक्तिः भवति –
(i) प्रथमा (ii) द्वितीया (iii) तृतीया

रचना प्रयोग

I. पत्रम्

(i) रुग्णतायाः कारणात् अवकाशप्राप्तये प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम् –

सेवायाम्

प्रधानाचार्य महोदयाः

केन्द्रीय विद्यालयः

आर. के. पुरम्

नव दिल्ली-110 022

विषयः – अवकाश प्राप्तये निवेदनम्

मान्यवराः / महोदया,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं शिरोवेदनायाः पीडितः अस्मि। एतस्मात् कारणात् अद्य विद्यालयम् आगन्तुमसमर्थः अस्मि। अतः प्रार्थये यत् दिनद्वयाय अवकाशं स्वीकृत्य अनुग्रहं कुर्वन्तु भवन्तः।

धन्यवादाः

भवतां विनीतः शिष्यः

नरेन्द्रः

कक्षा ix

वर्गः 'ब'

दिनाङ्कः ....

(ii) शुल्कक्षमापनार्थं प्रधानाचार्यं प्रति पत्रम् –

सेवायाम्

प्रधानाचार्य महोदया:

केन्द्रीय विद्यालय:

आर. के. पुरम्

नव दिल्ली – 110 022

विषय: – शुल्कक्षमापनार्थं निवेदनम्

मान्यवरा: / महोदया,

सविनयं निवेदनमस्ति यत् अहं भवत: विद्यालये नवम कक्षाया: ब वर्गस्य छात्र: अस्मि। मम पिता एकस्मिन् विद्यालये द्वारपाल: अस्ति। तस्य मासिकवर्तनम् द्विसहस्त्ररूप्यकमात्रम् अस्ति। अस्माकं कुटुम्बे पञ्च सदस्या: सन्ति। अनेन वर्तनेन कुटुम्बस्य निर्वाह: काठिन्येन भवति। अत: शुल्कक्षमापार्थं प्रार्थये।

आशासे यत् मदीयां इमां प्रार्थनां स्वीकृत्य शुल्कक्षमापनद्वारा माम् उपकरिष्यन्ति श्रीमन्त:।

धन्यवादा:।

भवतां

विनीत: शिष्य:

सुरेन्द्र:

कक्षा ix

वर्ग: 'ब'

दिनाङ्क: ....

(iii) पुस्तकानि प्रेषयितुं प्रकाशकं प्रति पत्रम् –

सेवायाम्

व्यवस्थापक महोदयाः

आर्य बुक डिपो

करोलबाग

नव दिल्ली

महोदय / महोदया,

सेवायाम् निवेदनमस्ति यत् अहं अधोलिखितानि पुस्तकानि क्रेतुम् इच्छामि। अतः निवेदनमस्ति यत् समुचितमुन्मोकं (कमीशनं) निष्कास्य एतानि पुस्तकानि वी.पी. माध्यमेन प्रेषयन्तु भवन्तः । शीघ्रता प्रशंसनीया स्यात्।

	पुस्तकानां नामानि	लेखकानां नामानि	प्रति
1.	सरल संस्कृत व्याकरणम्	डॉ. परमानंद गुप्त	1
2.	निबन्धसौरभम्	डॉ. अरुणेशकुमारः	1
3.	कथासागरः	डॉ. वागीशः	1

धन्यवादाः

भावत्कः

अशोकः

61/जवाहरनगरम्

मण्डी

हिमाचल प्रदेश

दिनाङ्कः ....

(iv) स्वभगिन्याः विवाहे आमन्त्रयितुं स्वमित्रं प्रति पत्रम् –

आर 688

न्यू राजेन्द्र नगरम्

दिल्लीतः

20.11.02

प्रिय मित्र,

नमस्ते।

इदं ज्ञात्वा प्रसन्नो भविष्यसि यत् भगवत्कृपया मम भगिन्याः लतायाः

विवाहसंस्कारः अधोलिखितकार्यक्रमानुसारं सम्पत्स्यते। एतदर्थं सानुरोधं निमन्त्रयामि आशासे यत् यथासमयं आगत्य अस्मान् प्रीणयिष्यसि।

कार्यक्रमः

मंगलवासरे	26.11.02	प्रातः सप्तवादने यज्ञः सायं अष्टवादने वरयात्रीणां स्वागतम् प्रीतिभोजनम् च।
बुधवासरे	27.11.02	प्रातः पञ्चवादने लतायाः पतिगृहगमनम्।

स्वगृहे सर्वेभ्यः मम वन्दनं निवेदय।

दर्शनाभिलाषी

देवेन्द्रः

दिनाङ्कः ....

(v) पितरौ प्रति परीक्षायाः परिणामसूचकं पत्रम् –

छात्रावासः
केन्द्रीय विद्यालयः
गोल मार्किट
नव दिल्ली

वन्दनीयाः पितृचरणाः

सादरं प्रणम्यते अहं अत्र सम्यक् निवसामि। मम परीक्षाफलम् अधुना प्रकाशितम्। नवमकक्षायाम् अहम् प्रथमश्रेण्याम् उत्तीर्णः। सर्वेषु छात्रेषु मम प्रथमं स्थानमस्ति। अधुना कानिचित् पुस्तकानि क्रेतव्यानि सन्ति। विद्यालयस्य शुल्कमपि देयमस्ति। अतः एकसहस्रं रूप्यकाणि शीघ्रतया प्रेषयन्तु भवन्तः। अहं प्रत्यहं मातुः स्मरणं करोमि। अनुजः रमेशः कथम् अस्ति। भगिनी श्वेता प्रत्यहं पठनाय विद्यालयं गच्छति न वा। अहम् अवकाशे गृहम् आगमिष्यामि।

भवदाशीर्वचसां प्रतीक्षायाम् भवत्पुत्रः
भवभूतिः
कक्षा ix
वर्गः 'ब'
केन्द्रीय विद्यालयः, दिल्ली

दिनाङ्कः ....

II. दूरभाषवार्ता

(दूरभाषयन्त्रे ध्वनिः भवति)

पिता – यन्त्रमुत्थाप्य कः वदति?

रमेशः – पितः! रमेशः वदामि प्रणमामि।

पिता – अपि कुशली?

रमेशः – आम् पितः! भवतां आशीर्वचोभिः सर्वं कुशलं अस्ति। एकः आवश्यकः प्रसङ्गः समुपस्थितः। तदर्थम् अहम् भवन्तम् आकारितवान्।

पिता – वत्स ! कथय कीदृशं ते प्रयोजनम्?

रमेशः – मम विद्यालयेन छात्राणां आगरानगरस्य दर्शनाय एका आमोदयात्रा आयोज्यते। इयं यात्रा दिनद्वयाय भविष्यति। एतदर्थं कक्षायाः गुरुभ्यः एकसहस्ररूप्यकाणि देयानि सन्ति। एकसहस्र रूप्यकाणि शीघ्रं प्रेषयन्तु भवन्तः।

पिता – पुत्र! अहमद्यैव धानादेशद्वारा रूप्यकाणि प्रेषयिष्यामि। त्वया आमोदयात्रातः प्रत्यागत्य सूचना प्रेष्या।

रमेशः – अहम् आगरातः प्रत्यागत्य अवश्यमेवं सूचयिष्यामि। अधुना ध्वनियन्त्रं निदधानि।

पिता – आम् निधेहि ध्वनियन्त्रम्।

रमेशः – (पितरं प्रणम्य ध्वनियन्त्रम् आधारयन्त्रे निदधाति)

III. अपठित गद्यांश

1. उत्साहः उदासीनता, निराशा चेति तिस्रः मनसः अवस्थाः। शिशवः सदा उत्साहशीलाः इति विदितमेव। युवानः अपि प्रायेण उत्साहशीलाः। अनेके वृद्धाः अपि तथैव। वयसः उत्साहस्य च नास्ति सम्बन्धः। उत्साहः मानवस्य सहजः स्वभावः। स मनसः शरीरस्य च विकासाय भवति। शिशुः उत्साहेन सर्वं ग्रहीतुं, सर्वैः सह खादितुं सर्वैः सह खेलितुं च प्रवर्तते। प्रतिबन्धो कृते रोदिति। अपहासे कृते क्रोधं प्रकटयति किन्तु निराशो न भवति।

उपरिलिखितं अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) शिशुः अपहासे कृते किं करोति? 1

(ii) मनसः कति अवस्थाः सन्ति? 1

(iii) किं वृद्धाः उत्साहशीलाः भवन्ति न वा? 1

(iv) अनुच्छेदात् 'तुमुन्' प्रत्ययान्त शब्दान् चित्वा तेषां प्रकृति - प्रत्ययान् लिखत। 2

2. कस्मिश्चित् अरण्ये कश्चन व्याधः आसीत्। सः प्रतिदिनम् अरण्ये आखेटम् करोति स्म। प्राणिनां मासं चर्म च विक्रीय जीवनं यापयति स्म। एकदा व्याधः अरण्ये मार्गभ्रष्टः अभवत्। इतस्ततः अटने एव सायंकालः जातः। तदा अकस्मात् कुतश्चित् आगतः कश्चन व्याघ्रः व्याधस्य मार्गम् अवरुद्धवान्। भीतः व्याधः समीपे विद्यमानं कश्चित् वृक्षम् आरूढवान्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) भीतः व्याधः किं कृतवान्? 1

(ii) व्याधः कथं जीविकोपार्जनं करोति स्म? 1

(iii) अकस्मात् कः व्याधस्य मार्गम् अवरुद्धवान्? 1

(iv) अनुच्छेदेऽस्मिन् क्तवतु प्रत्ययान्तान् शब्दान् चित्वा प्रकृतिप्रत्ययान् च लिखत। 2

3. कस्मिंश्चित् प्रदेशे काचित् नदी प्रवहति स्म। नदीतीरे कश्चन सन्यासी स्वशिष्यैः सह आश्रमं निर्माय वसति स्म। एकदा सन्यासी शिष्यैः सह नद्याः अपरं तीरं गन्तुम् एकां नौकाम् आरुढ़वान्। वेगेन प्रवहन्त्यां नद्याम् अकस्मात् एका अपरा नौका शिलायाः घट्टनेन नद्यां निमग्ना अभवत्। तेन तस्यां नौकायां स्थिताः सर्वे जनाः मरणं प्राप्तवन्तः। सन्यासी अकथयत्-तस्यां नौकायां स्थितेषु कश्चित् दुष्टः आसीत् इतिमन्ये। अतः ते सर्वे मरणं प्राप्तवन्तः।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) सन्यासी कुत्र केन च सह वसति स्म्? 1

(ii) अपरा नौका कथं नद्यां निमग्ना अभवत्? 1

(iii) सन्यासी नौकादुर्घटनायाः किं कारणं कथितवान्? 1

(iv) सह शब्द योगे का विभक्तिः प्रयुक्ता अस्ति? 2

तामेव विभक्तिं प्रयुज्य एकं अपरम् उदाहरणं लिखत।

4. प्रातःकालादारभ्य सायंपर्यन्तं मानवः अनेकानि कार्याणि करोति। एतेषु कार्येषु किं समीचीनं किं वा असमीचीनं इतिविषये शयनकाले अवश्यं चिन्तनीयम्। एतादृशेन आत्मावलोकनेन स्वकीये आचरणे अज्ञानेन अनवधानेन रागद्वेषाभ्यां वा यदि कश्चन प्रमादः सञ्जातः अपचारः द्रोहो वा निष्पन्नः तर्हि तेषां परिमार्जनोपायः अवश्यः आलोचनीयः। पश्चात्तापः अनुभवितव्यः। श्वः प्रभृति एतादृशं प्रमादं न करिष्यामि इति दृढ़सङ्कल्पः करणीयः।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) शयनकाले किं कर्तव्यम्? 1

(ii) कीदृशः सङ्कल्पः अस्माभिः करणीयः? 1

(iii) आत्मावलोकनात् परं किम् आलोचनीयम्? 1

(iv) सन्धिविच्छेदं कुरुत – 1

आत्मावलोकनेन 1

5. यः स्वदोषाणां कृते अनुतपति तस्य सत्पथगमनस्य द्वारम् उद्घाटितं भवति। अनुतापानलेन पापानि भस्मीभवन्ति, ग्लानिः नश्यति, चित्तं निर्मलं प्रसन्नं च भवति, सद्विचारः समुदेति। इत्थम् आत्मानुशीलनस्य महत्वं जीवने अनुभूयते। तेन कृतेषु कार्येषु त्रुटयः न भवन्ति। अतः कृतदोषोऽपि जनः अनुतप्य सत्कर्मसम्पादनेन जीवने महान् भावितुम् अर्हति।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदम् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) कस्य सत्पथगमनस्य द्वारम् उद्घाटितं भवति? 1

(ii) कृतदोषः जनः कथं महान् भवितुम् शक्नोति? 1

(iii) विभक्तिम् वचनं च निर्दिशत – 2

(i) सत्कर्मसम्पादनेन 1

(ii) स्वदोषाणाम् 1

6. कस्मिश्चित् अरण्ये अनेके पशवः वसन्ति स्म। एकदा पशूनां राजा सिंहः रोगपीड़ितः अभवत्। एकं शृगालं बिहाय सर्वे पशवः रोगपीडितं नृपं द्रष्टुमागताः। एकः उष्ट्रः नृपाय एतत् न्यवेदयत् यत् अहंकारिणं शृगालं बिहाय सर्वे भवन्तं द्रष्टुमागताः। एतच्छ्रुत्वा सिंहः क्रोधितोऽभवत्। स्वमित्रैः एतज्ज्ञात्वा शृगालः शीघ्रमेव सिंहस्य समीपे प्राप्तः। क्रोधितेन सिंहेन बिलम्बेन आगमनकारणं पृष्टःशृगालोऽवदत् यदहं तु सर्वप्रथममागन्तुम् ऐच्छम् परं चिकित्सकात् औषधमपि आनेयमिति विचिन्त्य तत्रागच्छम्। तच्छ्रुत्वा प्रसन्नः सिंहः औषधविषये पृष्टवान्। शृगालः वदत् यत्तेन औषधं तु न दत्तं परं कृपापरो भूत्वा सः चिकित्साक्रमम् उक्तवान् यत् उष्ट्रस्य रक्तपानेनैव रोगस्य शान्तिः भविष्यति। तदा सिंहः उष्ट्रमाहूतवान् भक्त्या आगतं च तं मारयित्वा तस्य रक्तं पीतवान्। एवं स्वपिशुनतायाः दुष्फलम् उष्ट्रेण स्वयमेव प्राप्तम्।

प्रश्नाः

I. अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत – 2

II. एकपदेन उत्तरं लिखत – (½ × 4 = 2)

(i) चिकित्सकेन किम् उक्तमासीत्?

(ii) शृगालः शीघ्रमेव कस्य समीपे प्राप्तः?

(iii) उष्ट्रेण कस्याः दुष्फलम् प्राप्तम्?

(iv) अनेके पशवः कुत्र वसन्ति स्म?

III. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत – (1 × 4 = 4)

(i) क्रोधितेन सिंहेन किं पृष्टम्?

(ii) चिकित्सकेन कीदृशं चिकित्साक्रमम् उक्तम्?

(iii) कं विहाय सर्वे सिंहं द्रष्टुमागच्छन्?

(iv) सिंहः उष्ट्रमाहूय किं कृतवान्?

IV. (i) 'ऐच्छम्' इति पदे का धातुः कश्च लकारः? (½ × 2 = 1)

(ii) 'विचिन्त्य' इति पदे कः उपसर्गः कश्च प्रत्ययः? (½ × 2 = 1)

7. अमर्त्यसेनः इति नाम एव संस्कृतमयम्। अमर्त्यसेनवर्यस्य जन्म शान्तिनिकेतने अभवत्। अस्य नाम गुरुदेवेन रवीन्द्रनाथवर्येण चितम्। अस्य नाम निर्दिशन् सः उक्तवान् आसीत्- "अमर्त्यसेनः इत्येष" शब्दः संस्कृतमूलः अतः एतस्य उच्चारणं स्पष्टं स्यात्, यतः अर्थपरिवर्तनं न भवेत्। शान्तिनिकेतने वसन् अमर्त्यसेनः बाल्ये संस्कृताभ्यासं कृतवान्। तस्य तीव्रः अभिलाषः अपि आसीत् यत् मातामहः क्षितीशमोहनसेन इव अहम् अपि प्रसिद्धः संस्कृतविद्वान् भवेयम् इति।

प्रश्नाः

I. अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत – 2

II. एकपदेन उत्तरं लिखत – (½ × 4 = 2)

(i) अमर्त्यसेनस्य मातामहस्य नाम किम् आसीत्?

(ii) कुत्र वसन् अमर्त्यसेनः संस्कृताभ्यासं कृतवान् आसीत्?

(iii) अमर्त्यसेनस्य नाम केन चितम्?

(iv) इदानीमपि कस्मिन्विषये अमर्त्यसेनः विशेषतः श्रद्धामासक्तिं च वहति?

III. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत – 1

(i) अमर्त्यसेनस्य नामविषये निर्दिशन् रवीन्द्रनाथवर्यः किमुक्तवान्?

IV. (i) 'विद्वान्' इति पदस्य मूलशब्दं विभक्तिं च लिखत- (½ × 2 = 1)

(ii) उक्तवान् इति पदे का धातुः कश्च प्रत्ययः- (½ × 2 = 1)

8. कदाचित् देवराजः इन्द्रः भूलोकम् आगतवान्। भूलोके किमपि नगरं प्रविष्टः सः मार्गे गच्छन् आसीत्। तत्र कश्चन विक्रेता बहूनां देवानां विग्रहान् संस्थाप्य विक्रयणं करोति स्म। देवेन्द्रः कुतूहलेन समीपं गत्वा दृष्टवान्। तत्र विष्णुः, शिवः, लक्ष्मीः, सरस्वती, गणेशः इत्यादीनां देवानां विग्रहाः आसन्। देवेन्द्रस्य विग्रहः अपि तत्र आसीत्। देवेन्द्रः एकैकस्यापि विग्रहस्य मूल्यं पृष्ट्वा-पृष्ट्वा ज्ञातवान्। अन्ते च कुतूहलेन तत्र स्थितस्य देवेन्द्रविग्रहस्य मूल्यं पृष्टवान्। सः विक्रेता उक्तवान् – यः कोऽपि कमपि विग्रहं क्रीणाति चेत् तस्मै एषः देवेन्द्र-विग्रहः निश्शुल्कं दीयते इति। तदा तु देवेन्द्रस्य स्थितिः शोचनीया एव आसीत्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) देवराजः कुत्र आगतवान्? 2

(ii) देवेन्द्रः कस्य विग्रहस्य मूल्यं पृष्टवान्? 2

(iii) विक्रेता तत्र केषां देवानां विग्रहान् स्थापितवान्? 2

(iv) देवेन्द्रविग्रहस्य कियत् मूल्यम् आसीत्? 2

(v) अनुच्छेदात् 'क्तवतु' प्रत्यान्त-शब्दान् चित्वा तेषां प्रकृति-प्रत्ययाः विधेयाः। 2

9. हरियाणाराज्ये यमुनानगरमण्डले एकः संस्कृतपरिवारः अस्ति। तस्मिन् गृहे सर्वे संस्कृतेन सम्भाषणं कुर्वन्ति। तत्र पशवोऽपि संस्कृतम् अवबोद्धुं समर्थाः सन्ति। तस्मिन् गृहे अभिमन्युः नाम एकः युवकः अस्ति। सोऽपि संस्कृतं वदति। एकदा तत्र एकः संस्कृतप्राध्यापकः आगतवान्। तेन सह अभिमन्युः संस्कृतेन सम्भाषणं कृतवान्। तस्य युवकस्य प्रतिभां दृष्ट्वा प्राध्यापकः तस्मै शतं / रूप्यकाणि दत्तवान्। तस्मात् दिनात् तस्य मनसि संस्कृतं प्रति महती अभिरुचिः समुत्पन्ना। सः प्रतिदिनं गीतायाः श्लोकान् पठित्वा-पठित्वा सर्वान् श्लोकान् अस्मरत्।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) संस्कृतपरिवारः कुत्र अस्ति? 2

(ii) प्राध्यापकः कस्मै शतं रूप्यकाणि दत्तवान्? 2

(iii) युवकस्य कं प्रति महती अभिरुचिः समुत्पन्ना? 2

(iv) युवकः कस्याः श्लोकान् अस्मरत्? 2

(v) सन्धि-विच्छेदं कुरुत – सोऽपि। 2

10. एकस्मिन् दिने बहवः जिज्ञासवः तत्त्वज्ञानं श्रोतुं महात्मा सुकरातस्य गृहम् आगच्छन्। ज्ञानचर्चां शृण्वतां तेषां भूयान् कालः व्यतियातः। सुकरातस्य पत्नी गृहेऽपेक्षितानां वस्तूनाम् अभावचर्चां चिकीर्षति स्म, किन्तु तत्र उपस्थिते जनसमवाये एतत् सुकरं नासीत्। ततः कोपविहितचेतना सा अपशब्दान् उच्चारयन्ती तत्र समायाता, आगन्तुकेषु च पयः पातयन्ती प्रतिनिवृत्ता। सुकरातः सर्वान् सम्बोधयन् सस्मितम् उवाच, श्रुतं एव भवद्भिर्यत् ये मेघाः गर्जन्ति, ते न वर्षन्ति, किन्तु अद्य प्रकृत्यां विपर्यासः परिलक्षितो भवति, मेघाः गर्जन्ति वर्षन्ति च।

उपरिलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत –

(i) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत? 2

(ii) के महात्मा-सुकरातस्य गृहम् आगच्छन्? 1

(iii) सुकरातस्य पत्नी किम् इच्छति स्स? 1

(iv) अनुच्छेदेऽस्मिन् भूतकालिक क्रियापदानि चित्वा लिखत? 1

IV. अनुच्छेदलेखनम्

- किसी विषय के एक बिन्दु पर विचारों या भावों को एक स्थान पर क्रमबद्ध रूप से लिखना अनुच्छेद कहलाता है।

नैतिकशिक्षायाः महत्त्वम्

'शिक्ष्' 'विद्योपादाने' इति व्युत्पत्या शिक्षाशब्दस्य अर्थः विद्यार्जनम् एव किन्तु केवलानि पुस्तकानि कण्ठस्थीकृत्य उपाधिं प्राप्य जीविकोपार्जनं एव शिक्षा नास्ति। जीवने सत्यं अहिंसा विनम्रतानियमसाहसप्रभृतीनाम् उच्चादर्शानाम् सम्यक् समावेशनं एव शिक्षायाः उद्देश्यम् भवति। यया शिक्षया एतादृशानां सद्गुणानां विकासः भवित सा नैतिकशिक्षेति उच्चते। नैतिकशिक्षा माध्यमेन मानवानां मूलप्रवृत्तयः संशोध्यन्ते। नैतिकशिक्षया सङ्कीर्णानां विचाराणां अपनयनं भवति। उचितानुचितनिर्णयक्षमतायाः विकासोऽपि भवति। सम्प्रति लोके चौर्यहिंसाबलात्कार -घृणाद्वेषादिघृणितप्रवृत्तयः अनियंत्रणीयाः सञ्जाताः। अतः अस्माभिः मूलप्रवृत्तीनां संयमनम् अवश्यं कर्त्तव्यम्। नैतिकशिक्षाबेलेन एव वयं गतगौरवं पुनः प्राप्तुं शक्नुमः।

महामना मदनमोहन मालवीयः

महामनामदनमोहन मालवीयमहोदयः वैदिकधर्मस्य उद्धारकेषु अन्यतमः। **1869 तमे वर्षे प्रयागसमीपवर्तिनि ग्रामेः** ब्राह्मणकुले मदनमोहनमालवीयमहोदयानां जन्म अभवत्। सः प्रयागस्थ म्योर सेंट्रल महाविद्यालये शिक्षा प्राप्तवान्। 1884 वर्षात् आरभ्य 1887 वर्ष पर्यन्तं स उच्चविद्यालये अध्यापकरूपेण कार्यं कृतवान्। तदनन्तरं सः अनेकानां पत्रपत्रिकाणां सम्पादकरूपेण कार्यं कृतवान्। 1899 तमे वर्षे सः विधिशास्त्रस्य परीक्षां उत्तीर्य अधिवक्तृरूपेण अपि कार्यं कृतवान्। राष्ट्रीयताप्रसारणाय, प्राचीनसंस्कृतेः गौरववर्धनाय उत्तमशिक्षया च

श्रेष्ठसन्ततिनिर्माणाय च सः 1916 तमे वर्षे काश्यां हिन्दूविश्वविद्यालयस्य स्थापनां अकरोत्। यद्यपि 1916 तमे वर्षे मालवीय महोदयाः दिवंगताः परं तेषाम् नाम हिन्दूविश्वविद्यालयमाध्यमेन अद्यापि श्रद्धया स्मर्यते।

सत्सङ्गतिः

सताम् सङ्गतिः इति सत्सङ्गतिः कथ्यते। मनुष्यः स्वसंगत्या एव सज्जनः दुर्जनो वा भवति। यो जनः दुर्जनानाम् संसर्गे अधिकं कालं यापयति, सोऽपि दुर्जनः भवति। सुमनःसङ्गात् कीटः अपि सतां शिरः आरोहति, परं यदि कोऽपि सज्जनः अपि चौराणाम् संसर्गे कालं यापयति तदा आरक्षिभिः सोऽपि चौरः एव कथ्यते। अतएव अस्माभिः सर्वदा सत्सङ्गति एव करणीया।

परोपकारः

परेषाम् उपकारः परोपकारः अस्ति। परोपकारप्रवृत्त्या एव मनुष्यः पशुभ्यः पृथक्भवति। आहारादिप्रवृत्तयः तु पशुषु अपि तथैव भवन्ति यथा मानवेषु। परं मानवः स्वविवेकेन उचितानुचितज्ञानेन एव आत्मानं उच्चासने उच्चपदे च स्थापयति। वृक्षाः स्वयं फलं न खादन्ति, ते परेभ्यः एव फलानि छायाः च ददति। नद्यः परोपकाराय एवं वहन्ति, गावः अन्येभ्यः एवं दुग्धं यच्छन्ति। एवमेव अनेके प्रातः स्मरणीयाः महापुरुषाः अपि अभवन् ये स्वप्राणान् उत्सृज्य देशस्य समाजस्य च रक्षाम् अकुर्वन्। राजा शिविः शरणागतस्य कपोतस्य रक्षायै स्वशरीरस्य मांसं कर्तयित्वा श्येनाय दत्तवान्। ऋषिः दधीचिः अपि वृत्रासुरबधाय स्वास्थीनि सहर्षं अयच्छत्। अद्यापि लोके अनेके समाजसुधारकाः सन्ति ये स्वार्थं परित्यज्य लोककल्याणं कुर्वन्ति। अतः सत्यमेव कथितम् –

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयम्
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

छात्रजीवनम्

यः विद्यार्जनं कर्तुम् इच्छति विद्यार्जने च संलग्नः भवति सः विद्यार्थी उच्यते। विद्याध्ययनाय छात्रः विद्यालयं गच्छति। सः सर्वविधं सुखं परिज्यत्य अहर्निशं विद्याध्ययनं करोति। विद्यार्थी अल्पाहारी गृहत्यागी काकचेष्टावान् बकध्यानयुक्तः अल्पनिद्रालुश्च भवेत्। यथोक्तं केनापि कविना –

काकचेष्टा बकध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्।।

प्रमादं विहाय अध्ययनेन परिप्रश्नेन च विद्यार्थी विद्यार्थी भवितुम् शक्नोति। तेन तपोमयजीवनम् अनुकरणीयम् इति।

V. निबन्धावली

पर्यावरणम्

अद्यत्वे हि विज्ञानमयं युगं वर्तते। जनैः सौविध्यार्थं नाना उपकरणानि प्रयुज्यन्ते। तेषामुत्पादनं कार्यशालासु यन्त्रैः क्रियते। यातायातव्यवस्थायाः कृते विविधानि यानानि प्रयुज्यन्ते। यद्यपि एतैरस्माकं जीवनं सुखमयं भवति, परं एभिः प्रसारितः धूमः वायुमण्डलं अत्यन्तं दूषयति। एवमेव वनानां विनाशेन ऋतुचक्रं प्रभावितं भवति। वायुमण्डलस्य दुष्प्रभावितत्वात् अस्माकं शरीरमपि श्वासादिरोगैः रुग्णं भवति।

महानगराणां मलिनजलं नाना प्रवाहिकामाध्यमेन नदीं प्रविशति। अस्मात् कारणात् नदीनां स्वच्छमपि जलं मलिनम् अपेयं च भवति। साम्प्रतं पाश्चात्यदेशेषु पर्यावरणं प्रति जागरूकता समुत्पन्ना। तत्प्रेरिता भारतीयैरपि पर्यावरणदूषणस्य सङ्कटम् अवगत्य साम्प्रतं गंगा-यमुना-नदीनां कृते शुद्धीकरणकार्यक्रमाः प्रचाल्यन्ते। अस्माभिरपि आवश्यकेऽस्मिन् पर्यावरणरक्षाकार्यक्रमे वृक्षारोपणमाध्यमेन, स्वच्छतादिनियमानां पालनेन च योगदानं विधेयम्।

दूरदर्शनम्

कालोऽयं विज्ञानमयः। विज्ञानस्य विभिन्नोपकरणैः मानव-जीवनम् अतितरां सौबिध्यमनुभवति। विज्ञानक्षेत्रे ये आविष्काराः संजाताः, तेषु दूरदर्शनं सर्वान् अतिशेते।

अद्यत्वे एकत्र स्थितः मानवः एतदुपकरणमाध्यमेन दूरस्थिताः घटनाः वीक्षितुं शक्नोति। अमेरिकादेशेन ईराकदेशे यद् आक्रमणम् कृतम् तस्य साक्षात्प्रसारणं दूरदर्शनयन्त्रमाध्यमेन तद्वत् प्रत्यक्षीकृतं, यथा हि पुरा महाभारतस्य युद्धं सञ्जयेन धृतराष्ट्रं प्रति वर्णितमासीत्।

दूरदर्शनेन न केवलं मनोरञ्जनमेव भवति, अपितु दैनिकघटनानां ज्ञानम् अपि एतेन भवति। विभिन्नाभिः प्रणालिकाभिः (चैनलैः) प्रतिक्षणं नूतन-नूतनवार्तानां प्रसारणं क्रियते। साम्प्रतं तु शिक्षाक्षेत्रेऽपि अस्य महान् उपयोगो विधीयते। 'ज्ञानदर्शन' इति कार्यक्रममाध्यमेन देशस्य सुदूरस्थक्षेत्रवास्तव्याः छात्राः अपि विद्यार्जनं कर्तुं पारयन्ति। दूरदर्शनेन तु साम्प्रतं प्रतिदिनं संस्कृतवार्ताः अपि प्रसार्यन्ते, एतत्प्रसारणं निशम्य लोकाः शुद्धं संस्कृतोच्चारणं कर्तुं पारयन्ति।

यद्यपि दूरदर्शनस्य नैके गुणाः सन्ति, परमत्र केचन अवगुणाः अपि सन्ति। अत्र प्रसार्यमाणानां कार्यक्रमाणाम् अधिकदर्शनेन नेत्रहानिः सम्भवति। बाल्यावस्थयामेव बालकाः उपनेत्राणि संधारयितुं विवशीभवन्ति।

एकोऽपरोपि दोषः वर्तते यत् प्रायशः ये मनोरञ्जककार्यक्रमाः प्रसार्यन्ते, तेषु सदाचारशिक्षायाः अभावो वर्तते। नैके कार्यक्रमाः केवलम् अनैतिकताम् मूल्यहानिं च प्रदर्शयन्ति। अतः अस्माभिः दूरदर्शनेन केवलम् गुणार्जनमेव विधेयम्।

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

भारतवर्षे आदिकालादेव मानवानां व्यवहारे संस्कृतभाषायाः प्रयोगो भवति स्म। संस्कृतं विश्वस्य प्राचीनतमा भाषास्ति। श्रद्धावशादियं जनैः देववाणी सुरभारतीत्यपि कथ्यते। इयं भाषा भरतीयायाः सभ्यतायाः संस्कृतेः चिन्तनस्य च संवाहिकास्ति। संस्कृतं धर्मस्य, दर्शनस्य, राजनीतेः, इतिहासस्य, अर्थशास्त्रस्य नीतिशास्त्रस्य च मूलमस्ति।

अस्यां भाषायां भारतीयचिन्तनस्य सर्वे प्रमुखाः ग्रन्थाः उपनिबद्धाः सन्ति। विश्वसाहित्यस्य प्राचीनतमानां ग्रन्थानां वेदानामपि भाषा संस्कृतमेवास्ति। सम्पूर्णं वैदिकं वाङ्मयं ज्ञानविज्ञानदृष्ट्या समस्ते जगति निरुपमं विद्यते। अस्यां भाषायां दर्शनग्रन्थाः साहित्यग्रन्थास्तु उपनिद्धाः सन्त्येव सहैव भौतिकविज्ञानस्य रसायनविज्ञानस्य, चिकित्साविज्ञानस्य, वनस्पतिविज्ञानस्य, भाषाविज्ञानस्य, वास्तुविज्ञानस्यापि अनेके मौलिकाः ग्रन्थाः विद्यन्ते।

संस्कृतभाषायाम् उपनिबद्धे साहित्ये सत्यस्य, अहिंसायाः राष्ट्रभक्तेः, परस्परं सहयोगस्य, त्यागस्य, विश्वबन्धुत्वस्य, शान्तेश्च भावनानाम् अजस्रः स्रोतः प्रवहन् विद्यते। लोककल्याणाय अस्यां भाषायां बहवः आदर्शाः प्रस्तुताः सन्ति, यथा – 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'तेन त्यक्तेन

भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' इत्यादयः। एतेषामादर्शानामनुकरणं कृत्वा यः कोऽपि मानवः स्वजीवनं उन्नतं कर्तुं शक्नोति।

विषयदृष्ट्या भाषासौष्ठवदृष्ट्या च इयं भाषा अन्यासु सर्वासु विश्वभाषासु अतिशेते। आधुनिकाः प्रायशः सर्वाः भारतीयाः भाषाः संस्कृतभाषायाः एव निर्गताः सन्ति।

संस्कृतसाहित्यमश्रित्यैव आधुनिकं साहित्यमपि विकसितम्। अतएव इयं भाषा भारतीयभाषाणां जननी सम्पोषिका च कथ्यते। विश्वबन्धुत्वभावनां पोषयितुम्, भारतीयं संस्कृतिमवगन्तुम्, राष्ट्रीयतायाः भावनां वर्धयितुम् भारतीयभाषाणां विकासाय च संस्कृतभाषायाः परमोपयोगिता विद्यते।

भारतीया संस्कृतिः

संस्कृतिः नाम संस्कारेण संस्करणं परिष्करणं इति। यया संस्कृत्या सभ्यतया च भारतीयाः जनाः संस्कारं परिष्कारं च लभन्ते सा एव भारतीया संस्कृतिः। इयम् 'आर्य संस्कृतिः' अपि उच्यते। एषा संस्कृतिः दुर्गुणान्, दुर्व्यसनानि, पापानि च जनानां हृदयेभ्यः निस्सार्य दूरीकरोति। सदाचार-शिक्षणेन च सा मानवमनांसि निर्मलानि सात्विकानि च करोति। 'समन्वय-भावना' अस्माकं भारतीयानां संस्कृतेः प्रमुखा विशेषता अस्ति। संस्कृतिरियं विश्वस्य सर्वेषां मानवानां सौख्यम् उपदिशति-

यथा –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिवद्दुःखभाग्भवेत्॥

अस्माकं भारते पूर्वम् आर्यजनाः पापेभ्यः बिभ्यति स्म, सत्यं वदन्ति स्म, अहिंसाम् आचरन्ति स्म। ते दया-परोपकार धैर्य त्यागशील सहानुभूत्यादि नियमान् पालयन्ति स्म। अत एव ते विश्ववन्द्याः आसन्। भारतीयाः जनाः शास्त्रोक्तानां धर्मनियमानां पालने मनसा वाचा कर्मणा सनद्धाः भवन्ति स्म। सत्यमिदं यत् संसारे यः कोऽपि स्वसंस्कृतिं त्यजति सः कदापि सुखी समृद्धश्च न भवति। अतः यदि वयं सुखं सम्मानं, समृद्धिं च इच्छामः तर्हि स्वभारतीयसंस्कृतेः सद्गुणाः अस्माभिः ग्रहणीयाः पालनीयाः एव।

कविः कालिदासः

संस्कृतसाहित्यं अतिविस्तृतं वर्तते। अत्र नैके कवयः अनेकान् ग्रन्थान् विरचितवन्तः परं न हि तैर्लिखितं सर्वं साहित्यम् इदानीं प्राप्यते। केवलं अङ्गुलिगण्या एव कवयः एतादृशाः सन्ति, येषां नाम अद्यापि आदरपूर्वकं गृह्यते, मुहुर्मुहुश्च तेषां साहित्यं पठ्यते। एतादृश एव कविः कालिदासोऽस्ति, यो हि आलोचकैः कविकुलगुरुः इत्युपाधिना समलङ्क्रियते।

कालिदासः भारतवर्षस्य कस्मिन् प्रदेशे कस्मिंश्च काले जन्म लेभे ? इत्यादि – प्रश्ना अद्यावधि असमाहिताः एव। विद्वांसः खैस्तीयप्रथमशताब्दीत आरभ्य षष्ठशतकं यावत् कुत्रापि कालिदासस्य स्थितिं स्थापयन्ति। एवमेव तस्य जन्मस्थान-विषयेऽपि विवदन्ते। कालिदासस्य लोकप्रियतां वीक्ष्य कश्मीरवासिनस्तं कश्मीरप्रदेशे समुत्पन्नम्, बंगालवासिनश्च तं बंग प्रान्ते समुद्भूतम्, उज्जयिनीवासिनश्च कालिदासम् उज्जयिन्यां लब्धजन्मानं कथयन्ति।

महाकविना कालिदासेन सप्तग्रन्थाः विरचिताः, एतेषु रघुवंश-कुमारसम्भव-नामके द्वे महाकाव्ये, ऋतुसंहार-मेघदूतनामके द्वे खण्डकाव्ये, अभिज्ञानशाकुन्तलम् विक्रमोर्वशीयम् मालविकाग्निमित्रञ्चेति त्रीणि नाटकानि सन्ति।

एतेषु सर्वेषु अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम नाटकं तस्य सर्वस्वम् अभिधीयते। एतन्नाटकम् अधीत्यैव पाश्चात्त्याः संस्कृताध्ययनं प्रति समुत्सुका अभूवन्। कालिदासस्य साहित्ये सर्वत्र प्रकृतेश्चित्रणं वर्तते। मानवः यदा-यदा स्वकर्तव्यस्य अवहेलनां विदधाति तदा स शापं दण्डं च प्राप्नोति। प्रकृतिशरणं गत्वैव तस्य निष्कृतिर्भवति। शाकुन्तले दुर्वाससः शापमाध्यमेन, मेघदूते च यक्षकथामाध्यमेन कविरिदमेव मुहुर्मुहुरुपदिशति। कालिदासस्य रस-भाव समन्विता वाणी कस्य मनो न हरति? कालिदासस्य अद्वितीयत्वमेव केनापि कविनोक्तम् –

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे
कनिष्ठिकाधिष्ठितकालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभवाद्
अनामिका सार्थवती बभूव॥

आदिकविः वाल्मीकिः

महर्षिः वाल्मीकिः संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविरस्ति। अयं मर्यादापुरुषोत्तमस्य रामस्य चरितवर्णनाय 'रामायणम्, नाम आर्षकाव्यम् अरचयत्। रामायणस्य फलश्रुत्यध्याये रामायणस्य कर्तृत्वेन वाल्मीकेः उल्लेखः प्राप्यते। क्रौञ्चद्वन्द्वस्य मध्यादेकं व्याधेन व्यापादितं दृष्ट्वा अस्य कवेः मनसि समुत्थितः शोकः एव श्लोकरूपेण आविर्भूतः। उक्तञ्च –

क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः।

आदिकविरयम् ऋषेः प्रचेतसः दशमः पुत्र आसीत्। अयं जात्या ब्राह्मणः राज्ञो दशरथस्य च मित्रमासीत्। मुनेर्वाल्मीकेः आश्रमे दशसहस्रसंख्याकाः छात्राः उषित्वा शिक्षामगृह्णन्। अस्याश्रमः गङ्गायाः तमसानद्याश्च तीरे आसीत्। वाल्मीकेः आश्रमविषये इदमपि मतं प्राप्यते यत् अस्याश्रमः यमुनायास्तटे चित्रकूटस्य समीपे आसीत्। तत्रैव उषित्वा वाल्मीकिः रामायणस्य रचनामकरोत्।

वाल्मीकिना विरचितं 'रामायणम्' लोकेऽस्मिन् सर्वतो मधुरम्, लोकप्रियम्, सर्वतश्चाधिकं हृदयस्पर्शि ऐतिहासिकं काव्यमस्ति। अस्मिन् रामस्य, कथां वर्णयित्वा कविना लोकसमक्षम् एकः आदर्शः प्रस्तुतीकृतः यत् 'रामादिवद् वर्तितव्यं न रावणादिवत्'।

रावणः सीतायाः अपहरणम् अकरोत् अतः तस्य समूलं नाशोऽभवत्। रामः रामायणस्य सर्वगुणसम्पन्नः आदर्शनायकोऽस्ति। रामस्य चरितानि पठित्वा जनाः स्वकर्तव्यस्य, लोकव्यवहारस्य शौर्यस्य च शिक्षां गृह्णन्ति।

इयं रामायणी कथा इयती रुचिपूर्णा अस्ति यत् जावासुमात्रा बोर्नियोबालीचम्पाथाईलैंडप्रभृति देशेषु सर्वत्र प्रचारमलभत्। परवर्तिभिरनेकैः महाकविभिः अस्य कथामवलम्ब्य अनेकानि काव्यानि नाटकानि विरचितानि अत एव इदं महाकाव्यं चिरस्थायिनीं कीर्तिमलभत्। अत एवोच्यते –

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः नद्यश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचलिष्यति॥

भगवद्गीता

अयं ग्रन्थः महर्षिणा वेदव्यासेन रचितस्य महाग्रन्थस्य महाभारतस्य अङ्गभूतः अस्ति। महाभारतयुद्धकाले यदा अर्जुनः मोहग्रस्तः युद्धविरतः च अभवत् तदा श्रीकृष्णेन यत्किञ्चिदुपदिष्टं तत् गीता–ग्रन्थरूपेण प्रसिद्धम्। अस्मिन् कर्म ज्ञान सांख्य, योगानां विषये उपदेशः विद्यते। कर्मयोगः गीतायाः प्रमुखः उपदेशः अस्ति। अतएव अस्य ग्रन्थस्य अपरं नाम 'कर्मयोगशास्त्रम्' अपि अस्ति। अस्य मननं कृत्वा मनुष्यः कर्मयोगी भवति। सः मनसा इन्द्रियैः शरीरेण व क्रियमाणेषु कर्मसु कर्तृत्वाभिमानं त्यजति। अयं ग्रन्थः सन्यासं नोपदिशति अपितु योगः कर्मसु कौशलम्' इत्युपदिशति। गीतायां निष्कामकर्मणः विशिष्टं महत्त्वम् अस्ति –

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।

अस्मिन् ग्रन्थे भगवता श्रीकृष्णेन उपदिष्टम् यत्– आत्मा नित्यः शरीराणि च अनित्यानि। अतः मरणात् न भेतव्यम्। नरः वीरो भूत्वा अन्यायस्य प्रतिकारं कुर्यात्। एवं प्रकारेण गीता सर्वान् मनुष्यान् सर्वेषु लौकिककर्मसु कौशलम् शिक्षयति। अर्जुनः उपदेशेन नष्टमोहो भूत्वा कृष्णस्य धर्मयुद्धे प्रवृत्तो अभवत्। गीतायाः उपदेशसारं प्राप्य मनुष्यः आसुरीं सम्पदं परित्यज्य दैवीं सम्पदम् अर्जितुम् प्रवृत्तो भवति। अतः सर्वैः लोकैः गीतोपदेशम् अनुकृत्य जीवनम् सफलं कर्त्तव्यम्। गीताविषये केनापि कविना सत्यमुक्तम् –

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

हिमालयः

भारतभूखण्डोपरि प्रकृतेः महती अनुकम्पा वर्तते। नाना पर्वतमालाः विभिन्नाः सरितः नैकानि वनानि, द्वे सागरे, मरुस्थली च अत्र राजन्ते। एकस्मिन्नेव समये नैके ऋतवः अपि द्रष्टुं शक्यन्ते। यद्येकत्र ग्रीष्मातपप्रचण्डता दृश्यते, तदा अन्यत्र हिमाच्छादितत्वात् शैत्यप्रकोपोऽप्यनुभूयते। अस्मिन् भारतवर्षे ये प्राकृतिक–सीमानः सन्ति तेषु उत्तरस्यां दिशि हिमालयस्य प्रामुख्यं वर्तते।

भारतवर्षस्य उत्तरे दिग्विभागे अवस्थितेयं विशाला पर्वतमाला। कश्मीरादारभ्य अरुणाचलप्रदेशं यावद् अतिविस्तृतेयं पर्वतशृङ्खला अनादिकालात् भारतं रक्षितवती। न कोऽपि शत्रुः इमाम् उल्लङ्घ्य भारतं प्राविशत, केवलं विगते शताब्दे चीनदेश एव एतादृशं दुःसाहसं कर्तुम् अपारयत्।

हिमालय एव उत्तरभारतस्य पिपासां शमयति विशालं कृषिक्षेत्रं च सिञ्चति। अस्य हिमाच्छादितत्वाद् गङ्गा-यमुना-शतद्रु-व्यास-वितस्तादयः सरितः सततं निस्सरन्ति। अस्माकं देशः 'हिन्दुस्तान' इति नाम्नापि व्यवह्रियते, अत्र यत् हिन्दू इति पदं वर्तते तत् सिन्धु इति शब्दान्निष्पन्नम्। सिन्धुनदी अपि हिमालयादेव प्रभवति।

चिरात् नाना कवयः स्वीयरचनासु हिमालयं वर्णितवन्तः। कालिदासेन तु स्वीये कुमारसम्भवे अयं हिमालयः देवभूमिरूपेण इत्थं वर्णितः –

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्यामिव मानदण्डः।।

हिमालयप्रदेशे एव अस्माकं पुरातनतीर्थादीनि सन्ति। अत्रैव शङ्कराचार्येण स्थापितम् 'केदारनाथ इति तीर्थस्थानं वर्तते'। यमुनोत्री गंगोत्री बद्रीनाथ प्रभृतीनि पवित्राणि स्थानान्यपि अत्रैव वर्तन्ते।

नैकखनिजानाम् इयम् जन्मभूमिः। अत्रैवासीत् कैण्वस्य तपोवनम्। आयुर्वेदस्य उपयोगाय औषधजातानि वनस्पतयश्च अस्मादेव प्राप्यन्ते। योगिनः अपि तपः साधनां कर्तुम् अत्रैव गच्छन्ति।

भारते भावनात्मकम् ऐक्यं स्थापयितुं हिमालयस्य महत्त्वपूर्णं योगदानं वर्तते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

संसारेऽस्मिन् जननी अस्मभ्यं यानि यानि सुखानि प्रयच्छति, जन्मभूमिश्च तथैव सौविध्यानि ददाति।

जनमदात्री माता जन्मभूमिश्च स्वर्गाद् अपि श्रेष्ठा वरिष्ठा च वर्तते। माता कुमाता कदापि न भवति। सा जन्मतः प्रभृति अतीव निश्छलप्रेम्णा पुत्रं पुत्रीं च लालयति, पालयति, स्वदुग्धं पाययित्वा वर्धयति शिशुं स्वयं च महत्कष्टानि अनुभूय तं सुखयति, महद्भयाच्च रक्षति।

शीततौं रात्रिकालेषु बालस्य मूत्रेण आर्द्रीभूताऽपि विष्टरे स्वयं स्वपिति, परन्तु बालं च शुष्कस्थाने शय्यायां स्वापयति। किमधिकं माता स्वसन्ततिसुखाय रक्षणाय च स्वदुर्लभप्राणानपि दातुं उद्यता भवति। अतः सत्यमिदं कथितं यत् जननी स्वर्गादपि अधिकं सुखं प्रयच्छति।

भासस्य कथनानुसारेण माता किल मनुष्याणां देवतानाम् च दैवतम्।

वस्तुतः जन्मभूमिः जननीवत् अस्मान् सर्वान् नानाविधानि अन्नानि, फलानि च दत्त्वा यावज्जीवनं पालयति पोषयति संवर्धयति च। भूमिः अस्मभ्यं धनं, धातून्, रत्नानि च प्रयच्छति। जन्मदात्री कतिचिद्वर्षानन्तरं स्वकर्त्तव्यं पूरयित्वा निवृत्ता भवति; किन्तु जन्मभूमिः अस्माकं जीवनस्य अन्तिमं क्षणं यावत् स्वान्नजलफलादिभिः अस्मान् पोषयति। वयं च अन्तिमं श्वासम् अत्रैव नयामः। पशुपक्षिषु अपि स्वमातृभूमिं प्रति स्नेहभावः दृश्यते। मानवः तु विशेषरूपेण विवेकशीलः मनस्वी च वर्तते। अतः मातृभूम्यै तस्य स्नेहः स्वाभाविकः। सुष्ठूक्तम् अथर्ववेदेऽपि "माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः"। खगाः अपि स्वदेशभूमिं बहु स्निह्यन्ति –

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम्।
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना॥

चन्द्रशेखर-भगतसिंह राजगुरु आदयः देशभक्ताः जन्मभूमिस्वतन्त्रतायै स्वकीयान् प्राणान् दत्त्वा अमराः जाताः। मातृभूमेः सीमां परिरक्ष्य सैनिकाः जन्मभूम्याः ऋणात् मुक्ताः भवन्ति। स्वर्णमयीं लङ्कां विजित्य रामः लक्ष्मणम् अवदत् –

अपि स्वर्णमयी लङ्का, न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जनमभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

प्रियं मे भारतम्

अस्माकं प्रियं भारतम् 'आर्यावर्तः "भारतवर्षम्" हिन्दुस्तान' 'इण्डिया' इति चतुर्भिः नामभिः प्रसिद्धम् परन्तु सम्प्रति जनैः अस्य नाम 'भारतम्' इत्येव स्वीकृतम्।

भारतं कश्मीरात् कन्याकुमारीपर्यन्तं सुविस्तृतं राजते। अस्य मुकुट इव नगाधिराजः हिमालयः उत्तरस्यां दिशि शोभते। दक्षिणे चास्य हिन्दमहासागरः विद्यते।

अद्यत्वे भारते अष्टाविंशतिः राज्यानि सन्ति, तानि सर्वाण्यपि प्रादेशिकविधानसभाभिः सञ्चाल्यन्ते। दिल्लीनगरं भारतस्य राजधानी केन्द्रं चास्ति। केन्द्रीयं शासनं सांसदैः संचाल्यते। सांसदबहुसंख्यकदलेन मन्त्रिमण्डलं

निर्मीयते। सर्वोपरि राष्ट्रपतिः देशस्य शासनं करोति। किं बहुना भारतं सर्वोच्चसत्तासम्पन्नं प्रजातन्त्रात्मकं गणराज्यमस्ति।

भारते विविधाः जातयः सम्प्रदायाः, धर्माः भाषाश्च परं सर्वे भारतीयाः परस्परं प्रेम्णा व्यवहरन्ति अत्रत्याः गङ्गादिनद्यः सकलं जगत् पुनन्ति। अत्रैव अवतीर्णाः श्रीरामः, श्रीकृष्णः, महात्माबुद्धः, महावीरः, शङ्करादि महामानवाः। अत्रैव रघुः, चन्द्रगुप्तः, अशोकः, विक्रमादित्यः, प्रभृतयः महान्तः शासकाः अभवन्। आधुनिककाले गान्धिः, जवाहरलालः, सुभाषः, चन्द्रशेखरः, मालवीया, दयः महापुरुषाः अजायन्त। स्वकार्यैश्च भारतस्य महत्त्वं वर्धितवन्तः। राष्ट्रभक्तिः अस्माकं प्रथमं कर्त्तव्यम् अस्ति। अस्माभिः सर्वैरपि भारतस्य सेवा मनसा, वाचा कर्मणा च करणीया। सम्प्रदाय-जाति-भाषा-प्रदेशादिभेदकत्त्वानि विस्मृत्य ऐक्यं विधाय भारतस्य रक्षा, उन्नतिः च कर्त्तव्या। भारतस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयन् केनापि सत्यमेवोक्तम् –

गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

मैट्रो-रेलसेवाः

अतिविस्तृतानि महानगराणि असंख्यनिवासिभिः सङ्कुलानि भवन्ति। महानगरेषु जनाः स्वकार्यं कर्तुं दूरं गन्तुं विवशा भवन्ति। यद्यपि महानगरेषु नैके राजमार्गा भवन्ति, परं यथा-यथा जनसंख्या वर्धते, वाहनानामपि संख्या प्रवर्धते, येन गमनागमने कष्टं भवति, वाहनानां च आधिक्येन पर्यावरणमपि दूषितं भवति।

अतः एतत्समाधानाय यूरोप-देशेषु मैट्रोनामधारिणी उपनगरगामिनी तीव्रगतिका रेलसेवा प्रवर्तिता। मूलतः सा रेलसेवा 'मैट्रो' नाम्ना अभिधीयते। भूमौ खननं विधाय विशालभवनानाम् अधः सुरंगेषु रेलपट्टिकाः स्थाप्यन्ते, तदुपरि द्रुतगत्या रेलकक्षाः धावन्ति।

सद्य एव राजधन्यां दिल्लीनगर्यामपि मैट्रो–रेलसेवा प्रधानमन्त्रिणा उद्घाटिता। दिल्लीनगर्यां प्रचलितायाः मैट्रोरेलसेवायाः द्वे स्वरूपे स्तः। मैट्रो–मार्गस्य प्रथमः खण्डस्तु भूमेरुपरि चलति, अपरश्च भूम्यन्तः।

साम्प्रतं सहस्रशो जनाः अल्पेनैव कालेन एकस्मात् स्थानाद् अपरत्र यान्ति। द्रुतगत्या प्रधावतः वातानुकूलितकक्षान् वीक्ष्य को जनः मैट्रोद्वारा यात्रां कर्तुं नेच्छति।

स्वतन्त्रता दिवसः

अस्माकं भारतदेशः सप्तचत्वारिंशदुत्तर– नवशतैकसहस्रतमे (1947) वर्षे अगस्तमासस्य पञ्चदश दिनाङ्के स्वतन्त्रः अभवत्। दिनेऽस्मिन् प्रतिवर्षं सम्पूर्णे भारतवर्षे स्वतन्त्रतादिवसोत्सवः मन्यते। अयं दिवसः भारतीयेतिहासे स्वर्णाक्षरैः लिखितमस्ति यतः अस्मिन् एव दिवसे भारतवर्षः मुक्तो भूत्वा स्वातन्त्र्यम् अलभत्। भारतस्य राजधान्यां दिल्लीनगरे स्वतन्त्रतादिवसोत्सवः विशेषरूपेण दर्शनीयः भवति। प्रातः काले सप्तवादनसमये अपारजनसमूहः रक्तदुर्गस्य मुख्यद्वारे एकत्रितो भवति। महान्तो नेतारः वैदेशिकाः अतिथयश्च मञ्चे उपविशन्ति। भारतस्य प्रधानमन्त्री त्रिवर्णात्मिकां राष्ट्रपताकाम् आरोहयति, ततः 'जन–गण–मन' इति राष्ट्रगीतं गीयते, पश्चाच्च प्रधानमन्त्रिः देशवासिनः सन्दिशति। दूरदर्शनेन एतेषां कार्यक्रमाणाम् प्रसारणं भवति येन दूरस्थाः अपि जनाः सोल्लासम् कार्यक्रमाणि पश्यन्ति।

दिवसेऽस्मिन् न केवलं राजधन्यामेव अपितु सर्वेषु प्रदेशेष्वपि विविधानि कार्यक्रमाणि आयोज्यन्ते, यथा कविभिः देशभक्तिपराः कविताः पठ्यन्ते, वीररसमयानि गीतानि गीयन्ते, स्वतन्त्रता–संग्रामसेनानिनः स्मर्यन्ते, क्रीडा–भाषण– प्रतियोगिताः उद्घोष्यन्ते, अन्ते च मिष्टान्नानि वितीर्यन्ते। राष्ट्रपर्व इदं सर्वेषु भारतीयेषु नवोत्साहं, नवां कल्पनाञ्च जनयति। अवएव अवसरेऽस्मिन् अस्माभिः सर्वैरपि प्रतिज्ञा कर्त्तव्या यद् शरीरेण, मनसा, धनेन प्राणपणेनापि भारतमातुः सेवां सदा करिष्यामः।

परिशिष्ट

I. शब्दरूपाणि

(i) स्वरान्त शब्दरूप

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'बालक'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
	स् (:)	औ	अः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
	अम्	औ	(अः) आन्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
	आ (एन)	भ्याम्	भिः(ऐः)
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
	ए (आय)	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
	अस् (आत्)	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
	अस् (स्य)	औः (योः)	आम् (नाम्)
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
	इ (ए)	ओः (योः)	सु (एषु)
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!
	स्	औ	अः

(अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप बालक के समान पढ़े जाएँगे।)

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'फल'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

(शेष तृतीया से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त बालक के रूप के समान पढ़े जाएँगे।)

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'लता'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'मुनि'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः!

('भूपति' आदि सभी इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप मुनि के समान पढ़े जाएँगे।)

इकारान्त पुल्लिंङ्ग शब्द 'पति'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या (पतिना)	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पतये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'नदी'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीय	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'भानु'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्

सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'धेनु'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा (धेनुना)	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे/धेन्वे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'मधु'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'पितृ' (पिता)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्

तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'मातृ' (माँ, माता)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄन्
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

ओकारान्त शब्द 'गो' (गाय और बैल)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
संबोधन	हे गौः!	हे गावौ!	हे गावः!

ओकारान्त शब्द: 'द्यौ' (आकाश)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्यौ:	द्यावौ	द्याव:
द्वितीया	द्याम्	द्यावौ	द्या:
तृतीया	द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभि:
चतुर्थी	द्यवे	द्योभ्याम्	द्योभ्य:
पञ्चमी	द्यो:	द्योभ्याम्	द्योभ्य:
षष्ठी	द्यो:	द्यवो:	द्यवाम्
सप्तमी	द्यवि	द्यवो:	द्योषु
सम्बोधन	हे द्यौ:!	हे द्यावौ!	हे द्याव:!

औकारान्त शब्द 'नौ' (नाव) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नौ:	नावौ	नाव:
द्वितीया	नावम्	नावौ	नाव:
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभि:
चतुर्थी	नावे	नौभ्याम्	नौभ्य:
पञ्चमी	नाव:	नौभ्याम्	नौभ्य:
षष्ठी	नाव:	नावो:	नावाम्
सप्तमी	नावि	नावो:	नौषु
सम्बोधन	हे नौ:!	हे नावौ!	हे नाव:!

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'अक्षि'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभि:

चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्षिणाम्
सप्तमी	अक्षिणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षि!	हे अक्षिणी!	हे अक्षीणि!

(ii) व्यञ्जनान्त शब्दरूप

'राजन्' राजा (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

'भवत्' आप (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवान्!	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

'आत्मन्' आत्मा, अपने आप (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मान:
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मन:
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभि:
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य:
पञ्चमी	आत्मन:	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य:
षष्ठी	आत्मन:	आत्मनो:	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनो:	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मान:!

'विद्वस्' विद्वान् (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांस:
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुष:
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भि:
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्य:
पञ्चमी	विदुष:	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्य:
षष्ठी	विदुष:	विदुषो:	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषो:	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वान्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांस:!

'चन्द्रमस्' चन्द्रमा (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमा	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभि:

चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमा!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमसः!

चकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'वाच्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, वाग्!	हे वाचौ!	हे वाचः!

तकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'गच्छत्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	"	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	"	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	"	"
षष्ठी	"	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	"	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

सकारान्त शब्द 'पुम्स्' (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
चतुर्थी	पुंसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
पञ्चमी	पुंसः	"	"
षष्ठी	"	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	हे पुमान्!	हे पुमांसौ!	हे पुमांसः!

नकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'पथिन्' रास्ता

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	"	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	"	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	"	"
षष्ठी	"	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	"	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः!	हे पन्थानौ!	हे पन्थानः!

रकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'गिर्', वाणी सरस्वती

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	"	"
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः

चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	"	"
षष्ठी	"	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	"	गीर्षु
सम्बोधन	हे गीः!	हे गिरौ!	हे गिरः!

नकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'अहन्', दिन

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहः	अह्नी-अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	"	"
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	"	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	"	"
षष्ठी	"	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि-अहनि	"	अहस्सु-अहःसु
सम्बोधन	हे अहः!	हे अह्नी-अहनी!	हे अहानि!

सकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द 'पयस्', दूध और जल

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	"	पयोभ्यः
पञ्चमी	पयसः	"	"
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	"	पयस्सु-पयःसु
सम्बोधन	हे पयः!	हे पयसी!	हे पयांसि!

(iii) सर्वनाम

पुल्लिङ्ग शब्द 'सर्व', सब

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	"	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	"	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	"	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	"	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'सर्व', सब

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	"	"
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	"	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	"	"
षष्ठी	"	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	"	सर्वासु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'सर्व', सब

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	"	"

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान चलेंगे। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।)

पुल्लिङ्ग शब्द 'यत्', जो

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	"	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	"	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	"	"
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	"	येषु

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'यत्', जो

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	"	"
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	"	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	"	याभ्यः
षष्ठी	"	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	"	यासु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'यत्', जो

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	"	"	"

(तृतीया से सप्तमी पर्यन्त शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान पढ़े जाएँगे।)

पुल्लिङ्ग शब्द 'एतत्', यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्

तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'एतत्', यह

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान पढ़े जाएँगे।)

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'एतत्', यह

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

पुल्लिङ्ग शब्द 'तत्', वह

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

(तत्, यत्, एतत्, इदम्, अदस्, किम्, युस्मद्, अस्मद् आदि सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।)

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'तत्', वह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	"	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	"	"
षष्ठी	"	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	"	तासु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'तत्', वह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	"	"	"

(शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान पढ़े जाएँगे।)

पुल्लिङ्ग शब्द 'किम्', कौन

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	"	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	"	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	"	"
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	"	केषु

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'किम्', क्या-कौन

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	"	"
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः

चतुर्थी	कस्यै	"	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	"	"
षष्ठी	"	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	"	कासु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'किम्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

(शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होंगे।)

पुल्लिङ्ग शब्द 'इदम्', यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ,एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'इदम्', यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'इदम्', यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

(इसके शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान पढ़े जाएँगे।)

'अस्मद्', मैं

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

'युष्मद्', तुम

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

पुल्लिङ्ग शब्द 'अदस्', यह

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

पुल्लिङ्ग शब्द 'ईदृश्', इस प्रकार

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ईदृक्, ईदृग्	ईदृशौ	ईदृशः
द्वितीया	ईदृशम्	ईदृशौ	ईदृशः
तृतीया	ईदृशा	ईदृग्भ्याम्	ईदृग्भिः
चतुर्थी	ईदृशे	ईदृग्भ्याम्	ईदृग्भ्यः
पञ्चमी	ईदृशः	ईदृग्भ्याम्	ईदृग्भ्यः
षष्ठी	ईदृशः	ईदृशोः	ईदृशाम्
सप्तमी	ईदृशि	ईदृशोः	ईदृषु

पुल्लिङ्ग शब्द 'कतिपय', नित्य बहुवचन में रहता है।

विभक्ति	बहुवचन
प्रथमा	कतिपये
द्वितीया	कतिपयान्
तृतीया	कतिपयैः
चतुर्थी	कतिपयेभ्यः
पञ्चमी	कतिपयेभ्यः
षष्ठी	कतिपयेषाम्
सप्तमी	कतिपयेषु

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'कतिपय'

विभक्ति	बहुवचन
प्रथमा	कतिपयाः
द्वितीया	कतिपयाः
तृतीया	कतिपयाभिः
चतुर्थी	कतिपयाभ्यः
पञ्चमी	कतिपयाभ्यः
षष्ठी	कतिपयासाम्
सप्तमी	कतिपयासु

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'कतिपय'

विभक्ति	बहुवचन
प्रथमा	कतिपयानि
द्वितीया	कतिपयानि

(शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान)

पुल्लिङ्ग शब्द 'उभ्', दोनों

विभक्ति	द्विवचन
प्रथमा	उभौ
द्वितीया	उभौ
तृतीया	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः
सप्तमी	उभयोः

स्त्रीलिङ्ग शब्द 'उभ्'

विभक्ति	द्विवचन
प्रथमा	उभे
द्वितीया	उभे
तृतीया	उभाभ्याम्
चतुर्थी	उभाभ्याम्
पञ्चमी	उभाभ्याम्
षष्ठी	उभयोः
सप्तमी	उभयोः

नपुंसकलिङ्ग शब्द 'उभ्'

विभक्ति	द्विवचन
प्रथमा	उभे
द्वितीया	उभे

(शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान)

(iv) संख्यावाची शब्द

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1.	एकः	एका	एकम्
2.	द्वौ	द्वे	द्वे
3.	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
4.	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि

(नीचे के संख्या-शब्द तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।)

5. पञ्च
6. षट्
7. सप्त
8. अष्टौ (अष्ट)
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. नवदश, एकोनविंशतिः
20. विंशतिः
21. एकविंशतिः
22. द्वाविंशतिः
23. त्रयोविंशतिः
24. चतुर्विंशतिः
25. पंचविंशतिः
26. षड्विंशतिः
27. सप्तविंशतिः
28. अष्टाविंशतिः
29. नवविंशतिः/एकोनत्रिंशत्
30. त्रिंशत्
31. एकत्रिंशत्
32. द्वात्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टत्रिंशत्
39. एकोनचत्वारिंशत्/नवत्रिंशत्
40. चत्वारिंशत्
41. एकचत्वारिंशत्
42. द्विचत्वारिंशत्/द्वाचत्वारिंशत्
43. त्रयश्चत्वारिंशत्/त्रिचत्वारिंशत्
44. चतुश्चत्वारिंशत्

45. पञ्चचत्वारिंशत्
46. षट्चत्वारिंशत्
47. सप्तचत्वारिंशत्
48. अष्टचत्वारिंशत्
49. एकोनपञ्चाशत्/नवचत्वारिंशत्
50. पञ्चाशत्
51. एकपञ्चाशत्
52. द्वि / द्वापञ्चाशत्
53. त्रि / त्रयः पञ्चाशत्
54. चतुः पञ्चाशत्
55. पञ्चपञ्चाशत्
56. षट्पञ्चाशत्
57. सप्तपञ्चाशत्
58. अष्टपञ्चाशत्
59. नवपञ्चाशत् / एकोनषष्टिः
60. षष्टिः
61. एकषष्टिः
62. द्विषष्टि / द्वाषष्टिः
63. त्रि / त्रयःषष्टिः
64. चतुः षष्टिः
65. पञ्चषष्टिः
66. षट्षष्टिः
67. सप्तषष्टिः
68. अष्टषष्टिः / अष्टाषष्टिः
69. नवषष्टिः / एकोनसप्ततिः
70. सप्ततिः
71. एकसप्ततिः
72. द्वि / द्वासप्ततिः
73. त्रि / त्रयःसप्ततिः
74. चतुः सप्ततिः
75. पञ्चसप्ततिः
76. षट्सप्ततिः
77. सप्तसप्ततिः
78. अष्टसप्ततिः / अष्टासप्ततिः
79. नवसप्ततिः / एकोनाशीतिः
80. अशीतिः
81. एकाशीतिः
82. द्व्यशीतिः
83. त्र्यशीतिः
84. चतुरशीतिः
85. पञ्चाशीतिः
86. षडशीतिः
87. सप्ताशीतिः
88. अष्टाशीतिः
89. नवाशीतिः / एकोननवतिः
90. नवतिः
91. एकनवतिः
92. द्विनवतिः
93. त्रि/त्रयोनवतिः
94. चतुर्णवतिः
95. पञ्चनवतिः
96. षण्णवतिः
97. सप्तनवतिः
98. अष्टनवतिः / अष्टानवतिः
99. नवनवतिः / एकोनशतम्
100. शतम्

क्रमसंख्यावाचक शब्द (एक से बीस तक)

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नवमः	नवमी	नवमम्
दशमः	दशमी	दशमम्
एकादशः	एकादशी	एकादशम्
द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
षोडशः	षोडशी	षोडशम्
सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
एकोनविंशः	एकोनविंशी	एकोनविंशम्
नवदशः	नवदशी	नवदशम्
विंशः	विंशी	विंशम्

संख्यावाचक शब्दों के रूप

एक (नित्य एकवचनान्त)

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	(शेष पुल्लिङ्ग एक के समान)
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	
पञ्चमी	एकास्मात्	एकस्याः	
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	

'द्वि', दो (नित्य द्विवचनान्त)

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

'त्रि', तीन (नित्य बहुवचनान्त)

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि

तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

'चतुर्', चार (नित्य बहुवचनान्त)

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

II. धातुरूपाणि

भ्वादिगण–

'पठ्', पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

'श्रु', सुनना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रृणोति	श्रृणुतः	श्रृण्वन्ति
मध्यम पुरुष	श्रृणोषि	श्रृणुथः	श्रृणुथ
उत्तम पुरुष	श्रृणोमि	श्रृणुवः, श्रृण्वः	श्रृणुमः, श्रृण्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अश्रृणोत्	अश्रृणुताम्	अश्रृण्वन्
मध्यम पुरुष	अश्रृणोः	अश्रृणुतम्	अश्रृणुत
उत्तम पुरुष	अश्रृण्वम्	अश्रृण्व, अश्रृणुव	अश्रृण्म, अश्रृणुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उत्तम पुरुष	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रृणोतु, श्रृणुतात्	श्रृणुताम्	श्रृण्वन्तु
मध्यम पुरुष	श्रृणु, श्रृणुतात्	श्रृणुतम्	श्रृणुत
उत्तम पुरुष	श्रृणवानि	श्रृणवाव	श्रृणवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	श्रृणुयात्	श्रृणुयाताम्	श्रृणुयः
मध्यम पुरुष	श्रृणुयाः	श्रृणुयातम्	श्रृणुयात
उत्तम पुरुष	श्रृणुयाम्	श्रृणुयाव	श्रृणुयाम

'भू', होना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु (भवतात्)	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव (भवतात्)	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

'पा', पीना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयु:
मध्यम पुरुष	पिबे:	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

'गम्', जाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

'पच्', पकाना

लट् लकार (वर्तमान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लृट लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

'लिख्', लिखना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलिंखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

स्था (तिष्ठ), बैठना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थस्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाव

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुष	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुष	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

दृश् (पश्य), देखना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

'अस्', होना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

'सेव्', सेवन करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत्	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथा:	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

'लभ्', प्राप्त करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभावहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत्	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथा:	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथा:	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

दा (यच्छ), देना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छति	यच्छत:	यच्छन्ति
मध्यम पुरुष	यच्छसि	यच्छथ:	यच्छथ
उत्तम पुरुष	यच्छामि	यच्छाव:	यच्छाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयच्छत्	अयच्छताम्	अयच्छन्
मध्यम पुरुष	अयच्छ:	अयच्छतम्	अयच्छत्
उत्तम पुरुष	अयच्छम्	अयच्छाव	अयच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यत:	दास्यन्ति
मध्यम पुरुष	दास्यसि	दास्यथ:	दास्यथ
उत्तम पुरुष	दास्यामि	दास्याव:	दास्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छतु	यच्छताम्	यच्छन्तु
मध्यम पुरुष	यच्छ	यच्छतम्	यच्छत
उत्तम पुरुष	यच्छानि	यच्छाव	यच्छाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यच्छेत्	यच्छेताम्	यच्छेयुः
मध्यम पुरुष	यच्छेः	यच्छेतम्	यच्छेत
उत्तम पुरुष	यच्छेयम्	यच्छेव	यच्छेम

'अर्च्', पूजा करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चति	अर्चतः	अर्चन्ति
मध्यम पुरुष	अर्चसि	अर्चथः	अर्चथ
उत्तम पुरुष	अर्चामि	अर्चावः	अर्चामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आर्चत्	आर्चताम्	आर्चन्
मध्यम पुरुष	आर्चः	आर्चतम्	आर्चत
उत्तम पुरुष	आर्चम्	आर्चाव	आर्चाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चिष्यति	अर्चिष्यतः	अर्चिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	अर्चिष्यसि	अर्चिष्यथः	अर्चिष्यथ
उत्तम पुरुष	अर्चिष्यामि	अर्चिष्यावः	अर्चिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चतु	अर्चताम्	अर्चन्तु
मध्यम पुरुष	अर्च	अर्चतम्	अर्चत
उत्तम पुरुष	अर्चानि	अर्चाव	अर्चाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चेत्	अर्चेताम्	अर्चेयु:
मध्यम पुरुष	अर्चे:	अर्चेतम्	अर्चेत
उत्तम पुरुष	अर्चेयम्	अर्चेव	अर्चेव

'व्रज', जाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजति	व्रजत:	व्रजन्ति
मध्यम पुरुष	व्रजसि	व्रजथ:	व्रजथ
उत्तम पुरुष	व्रजामि	व्रजाव:	व्रजाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अव्रजत्	अव्रजताम्	अव्रजन्
मध्यम पुरुष	अव्रज:	अव्रजतम्	अव्रजत
उत्तम पुरुष	अव्रजम्	अव्रजाव	अव्रजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजिष्यति	व्रजिष्यत:	व्रजिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	व्रजिष्यसि	व्रजिष्यथ:	व्रजिष्यथ
उत्तम पुरुष	व्रजिष्यामि	व्रजिष्याव:	व्रजिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजतु	व्रजताम्	व्रजन्तु
मध्यम पुरुष	व्रज	व्रजतम्	व्रजत
उत्तम पुरुष	व्रजानि	व्रजाव	व्रजाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	व्रजेत्	व्रजेताम्	व्रजेयुः
मध्यम पुरुष	व्रजेः	व्रजेतम्	व्रजेत
उत्तम पुरुष	व्रजेयम्	व्रजेव	व्रजेम

'तप्', तप करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपति	तपतः	तपन्ति
मध्यम पुरुष	तपसि	तपथः	तपथ
उत्तम पुरुष	तपामि	तपावः	तपामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतपत्	अतपताम्	अतपन्
मध्यम पुरुष	अतपः	अतपतम्	अतपत
उत्तम पुरुष	अतपम्	अतपाव	अतपाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तप्स्यति	तप्स्यतः	तप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तप्स्यसि	तप्स्यथः	तप्स्यथ
उत्तम पुरुष	तप्स्यामि	तप्स्यावः	तप्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपतु	तपताम्	तपन्तु
मध्यम पुरुष	तप	तपतम्	तपत
उत्तम पुरुष	तपानि	तपाव	तपाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तपेत्	तपेताम्	तपेयु:
मध्यम पुरुष	तपे:	तपेतम्	तपेत
उत्तम पुरुष	तपेयम्	तपेव	तपेम

'शुच्', शोक करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोचति	शोचत:	शोचन्ति
मध्यम पुरुष	शोचसि	शोचथ:	शोचथ
उत्तम पुरुष	शोचामि	शोचाव:	शोचाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशोचत्	अशोचताम्	अशोचन्
मध्यम पुरुष	अशोच:	अशोचतम्	अशोचत
उत्तम पुरुष	अशोचम्	अशोचाव	अशोचाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शौचिष्यति	शौचिष्यत:	शौचिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शौचिष्यसि	शौचिष्यथ:	शौचिष्यथ
उत्तम पुरुष	शौचिष्यामि	शौचिष्याव:	शौचिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शौचतु	शौचताम्	शौचन्तु
मध्यम पुरुष	शौच	शौचतम्	शौचत
उत्तम पुरुष	शौचानि	शौचाव	शौचाव

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शौचेत्	शौचेताम्	शौचेयुः
मध्यम पुरुष	शौचेः	शौचेतम्	शौचेत
उत्तम पुरुष	शौचेयम्	शौचेव	शौचेम

'नी', ले जाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
मध्यम पुरुष	नयेः	नयेतम्	नयेत
उत्तम पुरुष	नयेयम्	नयेव	नयेम

'भज्', भजन करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजति	भजतः	भजन्ति
मध्यम पुरुष	भजसि	भजथः	भजथ
उत्तम पुरुष	भजामि	भजावः	भजामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभजत्	अभजताम्	अभजन्
मध्यम पुरुष	अभजः	अभजतम्	अभजत
उत्तम पुरुष	अभजम्	अभजाव	अभजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजिष्यति	भजिष्यतः	भजिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भजिष्यसि	भजिष्यथः	भजिष्यथ
उत्तम पुरुष	भजिष्यामि	भजिष्यावः	भजिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजतु	भजताम्	भजन्तु
मध्यम पुरुष	भज	भजतम्	भजत
उत्तम पुरुष	भजानि	भजाव	भजाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भजेत्	भजेताम्	भजेयु:
मध्यम पुरुष	भजे:	भजेतम्	भजेत
उत्तम पुरुष	भजेयम्	भजेव	भजेम

'यज्', यजन करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजति	यजत:	यजन्ति
मध्यम पुरुष	यजसि	यजथ:	यजथ
उत्तम पुरुष	यजामि	यजाव:	यजाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अयजत्	अयजताम्	अयजन्
मध्यम पुरुष	अयज:	अयजतम्	अयजत
उत्तम पुरुष	अयजम्	अयजाव	अयजाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यक्ष्यति	यक्ष्यत:	यक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	यक्ष्यसि	यक्ष्यथ:	यक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	यक्ष्यामि	यक्ष्याव:	यक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजतु	यजताम्	यजन्तु
मध्यम पुरुष	यज	यजतम्	यजत
उत्तम पुरुष	यजानि	यजाव	यजाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	यजेत्	यजेताम्	यजेयु:
मध्यम पुरुष	यजे:	यजेतम्	यजेत
उत्तम पुरुष	यजेयम्	यजेव	यजेम

'शुभ्', शोभित होना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभते	शोभेते	शोभन्ते
मध्यम पुरुष	शोभसे	शोभेथे	शोभध्वे
उत्तम पुरुष	शोभे	शोभावहे	शोभमहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशोभत	अशोभताम्	अशोभन्त
मध्यम पुरुष	अशोभथा:	अशोभेथाम्	अशोभध्वम्
उत्तम पुरुष	अशोभे	अशोभावहि	अशोभामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभिष्यते	शोभिष्येते	शोभिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	शोभिष्यसे	शोभिष्येथे	शोभिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	शोभिष्ये	शोभिष्यावहे	शोभिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभताम्	शोभेताम्	शोभन्ताम्
मध्यम पुरुष	शोभस्व	शोभेथाम्	शोभध्वम्
उत्तम पुरुष	शोभै	शोभावहै	शोभामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शोभेत	शोभेयाताम्	शोभेरन्
मध्यम पुरुष	शोभेथाः	शोभेयाथाम्	शोभेध्वम्
उत्तम पुरुष	शोभेय	शोभावहि	शोभामहि

'वृत्', होना-रहना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तमहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवर्तत्	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

अदादिगण–

'अद्' (भक्षणे), खाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उत्तम पुरुष	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यम पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

विधिलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

'ब्रू', स्पष्ट बोलना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति (आह)	ब्रूतः (आहतुः)	ब्रुवन्ति (आहुः)
मध्यम पुरुष	ब्रवीसि	ब्रूथः	ब्रूथ
उत्तम पुरुष	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम पुरुष	अब्रवीः	आब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम पुरुष	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
मध्यम पुरुष	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम पुरुष	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
मध्यम पुरुष	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम पुरुष	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

'हन्' (हिंसागत्योः), वध करना-जाना
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम पुरुष	हंसि	हथः	हथ
उत्तम पुरुष	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उत्तम पुरुष	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम पुरुष	जहि	हतम्	हत
उत्तम पुरुष	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम पुरुष	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम पुरुष	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

'पा' (रक्षणे), रक्षा करना
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पाति	पातः	पान्ति
मध्यम पुरुष	पासि	पाथः	पाथ
उत्तम पुरुष	पामि	पावः	पामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपात्	अपाताम्	अपुः–अपान्
मध्यम पुरुष	अपाः	अपातम्	अपात
उत्तम पुरुष	अपाम्	अपाव	अपाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पातु	पाताम्	पान्तु
मध्यम पुरुष	पाहि	पातम्	पात
उत्तम पुरुष	पानि	पाव	पाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पायात्	पायाताम्	पायुः
मध्यम पुरुष	पायाः	पायातम्	पायात
उत्तम पुरुष	पायासम्	पायास्व	पायास्म

तुदादिगण–

'तुद्', दुख देना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम पुरुष	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम पुरुष	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम पुरुष	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम पुरुष	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम पुरुष	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम पुरुष	तुदयेम्	तुदेव	तुदेम

'इष्', चाहना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
मध्यम पुरुष	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उत्तम पुरुष	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

'मिल्', मिलना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
मध्यम पुरुष	मिलसि	मिलथः	मिलथ
उत्तम पुरुष	मिलामि	मिलावः	मिलामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
मध्यम पुरुष	अमिलः	अमिलतम्	अमिलत
उत्तम पुरुष	अमिलम्	अमिलाव	अमिलाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मेलिष्यति	मेलिष्यतः	मेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मेलिष्यसि	मेलिष्यथः	मेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	मेलिष्यामि	मेलिष्यावः	मेलिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलतु	मिलताम्	मिलन्तु
मध्यम पुरुष	मिल	मिलतम्	मिलत
उत्तम पुरुष	मिलानि	मिलाव	मिलाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलेत्	मिलेताम्	मिलेयुः
मध्यम पुरुष	मिलेः	मिलेतम्	मिलेत
उत्तम पुरुष	मिलेयम्	मिलेव	मिलेम

'सिंच्', सींचना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सिञ्चति	सिञ्चत:	सिञ्चन्ति
मध्यम पुरुष	सिञ्चसि	सिञ्चथ:	सिञ्यथ
उत्तम पुरुष	सिञ्चामि	सिञ्चाव:	सिञ्चाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्
मध्यम पुरुष	असिञ्च:	असिञ्चतम्	असिञ्चत
उत्तम पुरुष	असिञ्चम्	असिञ्चाव	असिञ्चाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेक्ष्यति	सेक्ष्यत:	सेक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सेक्ष्यसि	सेक्ष्यत:	सेक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	सेक्ष्यामि	सेक्ष्याव:	सेक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सिञ्चतु	सिञ्चताम्	सिञ्चन्तु
मध्यम पुरुष	सिञ्च	सिञ्चतम्	सिञ्चत
उत्तम पुरुष	सिञ्चानि	सिञ्चाव	सिञ्चाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयु:
मध्यम पुरुष	सिञ्चे:	सिञ्चेतम्	सिञ्चेत
उत्तम पुरुष	सिञ्चेयम्	सिञ्चेव	सिञ्चेम

'विदृ' (लाभे), पाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दति	विन्दतः	विन्दन्ति
मध्यम पुरुष	विन्दसि	विन्दथः	विन्दथ
उत्तम पुरुष	विन्दामि	विन्दावः	विन्दामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविन्दत्	अविन्दताम्	अविन्दन्
मध्यम पुरुष	अविन्दः	अविन्दतम्	अविन्दत
उत्तम पुरुष	अविन्दम्	अविन्दाव	अविन्दाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेत्स्यति	वेत्स्यतः	वेत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	वेत्स्यसि	वेत्स्यथः	वेत्स्यथ
उत्तम पुरुष	वेत्स्यामि	वेत्स्यावः	वेत्स्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दतु	विन्दताम्	विन्दन्तु
मध्यम पुरुष	विन्द	विन्दतम्	विन्दत
उत्तम पुरुष	विन्दामि	विन्दाव	विन्दाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्देत्	विन्देताम्	विन्देयुः
मध्यम पुरुष	विन्देः	विन्देतम्	विन्देत
उत्तम पुरुष	विन्देयम्	विन्देव	विन्देम

'विश्' (प्रवेशे), घुसना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विशति	विशत:	विशन्ति
मध्यम पुरुष	विशसि	विशथ:	विशथ
उत्तम पुरुष	विशामि	विशाव:	विशाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविशत्	अविशताम्	अविशन्
मध्यम पुरुष	अविश:	अविशतम्	अविशत
उत्तम पुरुष	अविशम्	अविशाव	अविशाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेक्ष्यति	वेक्ष्यत:	वेक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वेक्ष्यसि	वेक्ष्यथ:	वेक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	वेक्ष्यामि	वेक्ष्याव:	वेक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विशतु	विशताम्	विशन्तु
मध्यम पुरुष	विश	विशतम्	विशत
उत्तम पुरुष	विशानि	विशाव	विशाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विशेत्	विशेताम्	विशेयु:
मध्यम पुरुष	विशे:	विशेतम्	विशेत
उत्तम पुरुष	विशेयम्	विशेव	विशेभ

'प्रच्छ्', पूछना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट् लकार (भविष्यत काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेतु
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

'मुञ्च्', छोड़ना
लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चत:	मुञ्चन्ति
मध्यम पुरुष	मुञ्चसि	मुञ्चथ:	मुञ्चथ
उत्तम पुरुष	मुञ्चामि	मुञ्चाव:	मुञ्चाव:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्
मध्यम पुरुष	अमुञ्च:	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मोक्ष्यति	मोक्ष्यत:	मोक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथ:	मोक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	मोक्ष्यामि	मोक्ष्याव:	मोक्ष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत
उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयु:
मध्यम पुरुष	मुञ्चे:	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

'विद्' (लाभे), पाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दते	विन्देते	विन्दन्ते
मध्यम पुरुष	विन्दसे	विन्देथे	विन्दध्वे
उत्तम पुरुष	विन्दे	विन्दावहे	विन्दामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविन्दत	अविन्देताम्	अविन्दन्त
मध्यम पुरुष	अविन्दथाः	अविन्देथाम्	अविन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	अविन्दे	अविन्दावहि	अविन्दामहि

लृट लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
मध्यम पुरुष	विन्दस्व	विन्देथाम्	विन्दध्वम्
उत्तम पुरुष	विन्दै	विन्दावहै	विन्दामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्
मध्यम पुरुष	विन्देथाः	विन्देयाथाम्	विन्देध्वम्
उत्तम पुरुष	विन्देय	विन्देवहि	विन्देमहि

तनादिगण—

'तनु', तानना, फैलाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
मध्यम पुरुष	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उत्तम पुरुष	तनोमि	तनुवः:तन्वः	तनुमः:तन्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्यम पुरुष	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम पुरुष	अतनवम्	अतनुव–अतन्व	अतनुम–अतन्म

लृट लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उत्तम पुरुष	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम पुरुष	तनु	तनुतम्	तनुत
उत्तम पुरुष	तनवानि	तनवाव	तनवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
मध्यम पुरुष	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम पुरुष	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

'कृ', करना

लट् लकार (वर्तमान काल) परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरूथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

'कृ', करना आत्मनेपद

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

क्रयादिगण—

'क्री', खरीदना (उभयपदी)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तम पुरुष	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यम पुरुष	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम पुरुष	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यम पुरुष	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तम पुरुष	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
मध्यम पुरुष	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उत्तम पुरुष	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

चुरादिगण—

'कथ्', कहना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम पुरुष	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

'भक्ष्', भक्षण करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यत:	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथ:	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्याव:	भक्षयिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयानि	भक्षयाव	भक्षयाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयु:
मध्यम पुरुष	भक्षये:	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

चुर् (चुराना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयत:	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथ:	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयाव:	चोरयाम:

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरय:	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

'गण्', गिनना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयति	गणयतः	गणयन्ति
मध्यम पुरुष	गणयसि	गणयथः	गणयथ
उत्तम पुरुष	गणयामि	गणयावः	गणयामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगणयत्	अगणयताम्	अगणयन्
मध्यम पुरुष	अगणयः	अगणयतम्	अगणयत
उत्तम पुरुष	अगणयम्	अगणयाव	अगणयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयिष्यति	गणयिष्यत:	गणयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गणयिष्यसि	गणयिष्यथ:	गणयिष्यथ
उत्तम पुरुष	गणयिष्यामि	गणयिष्याव:	गणयिष्याम:

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयतु	गणयताम्	गणयन्तु
मध्यम पुरुष	गणय	गणयतम्	गणयत
उत्तम पुरुष	गणयानि	गणयाव	गणयाम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गणयेत्	गणयेताम्	गणयेयु:
मध्यम पुरुष	गणये:	गणयेतम्	गणयेत
उत्तम पुरुष	गणयेयम्	गणयेव	गणयेम

'पाल्', पालन करना

लट् लकार (वर्तमान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पालयति	पालयत:	पालयन्ति
मध्यम पुरुष	पालयसि	पालयथ:	पालयथ
उत्तम पुरुष	पालयामि	पालयाव:	पालयाम:

लट् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपालयत्	अपालयताम्	अपालयन्
मध्यम पुरुष	अपालय:	अपालयतम्	अपालयत
उत्तम पुरुष	अपालयम्	अपालयाव	अपालयाम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पालयिष्यति	पालयिष्यतः	पालयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पालयिष्यसि	पालयिष्यथः	पालयिष्यथ
उत्तम पुरुष	पालयिष्यामि	पालयिष्यावः	पालयिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा, प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पालयतु	पालयताम्	पालयन्तु
मध्यम पुरुष	पालय	पालयतम्	पालयत
उत्तम पुरुष	पालयानि	पालयाव	पालयाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पालयेत्	पालयेताम्	पालयेयुः
मध्यम पुरुष	पालयेः	पालयेतम्	पालयेत
उत्तम पुरुष	पालयेयम्	पालयेव	पालयेम

दिवादिगण–

'नृत्', नाचना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्याम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

'नश्', नष्ट होना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

'जन्', उत्पन्न होना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजायत्	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ् (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

स्वादिगण–

'चि', चुनना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति
मध्यम पुरुष	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ
उत्तम पुरुष	चिनोमि	चिनुवः–चिन्वः	चिनुमः–चिन्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्
मध्यम पुरुष	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत
उत्तम पुरुष	अचिन्वम्	अचिनुव (अचिन्व)	अचिनुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
उत्तम पुरुष	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
मध्यम पुरुष	चिनुहि	चिनुतम्	चिनुत
उत्तम पुरुष	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
मध्यम पुरुष	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

'शक्', सकना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नुवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

'सु', रस निकालना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
मध्यम पुरुष	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उत्तम पुरुष	सुनोमि	सुनुवः सुन्वः	सुनुमः सुन्मः

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचम	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
मध्यम पुरुष	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उत्तम पुरुष	असुनवम्	असुन्व, असुनुव	असुन्म, असुनुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
मध्यम पुरुष	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उत्तम पुरुष	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
मध्यम पुरुष	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उत्तम पुरुष	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
मध्यम पुरुष	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उत्तम पुरुष	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

'आप्', प्राप्त करना

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम पुरुष	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

	एकवचन	द्विवचन	
प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम पुरुष	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम पुरुष	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट् लकार (प्रार्थना, आज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम पुरुष	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

विधिलिङ्ग (चाहिए के प्रयोग में)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम पुरुष	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम पुरुष	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम